Hindi (B)

खण्डक

अपठित बोध

अपठित गद्यांश व काव्यांश

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित गाद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए–

[1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

कार्य का महत्व और उसकी सुन्दरता उसके समय पर संपादित किए जाने पर ही है। अत्यंत सुघड़ता से किया हुआ कार्य भी यदि आवश्यकता के पूर्व न पूरा हो सके तो उसका किया जाना निष्फल ही होगा। चिड़ियों द्वारा खेत चुग लिए जाने पर यदि रखवाला उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करे तो सर्वत्र उपहास का पात्र ही बनेगा।

उसके देर से किए गए उद्यम का कोई मूल्य नहीं होगा। श्रम गौरव तभी है जब उसका लाभ किसी को मिल सके। इसी कारण यदि बादलों द्वारा बरसाया गया जल कृषक की फसल को फलने-फूलने में मदद नहीं कर सकता तो उसका बरसना व्यर्थ ही है। अवसर सदुपयोग न करने वाले व्यक्ति को इसी कारण पश्चाताप करना पड़ता है।

(i) जीवन में समय का महत्व क्यों है?

(क) समय काम के लिए प्रेरणा देता है।

(ख) समय की परवाह लोग नहीं करते।

(ग) समय पर किया गया काम सफल होता है।

(घ) समय बड़ा ही बलवान है।

(ii) खेत का रखवाल उपहास का पात्र क्यों बनता है?

(क) खेत में पौधे नहीं उगते।

(ख) समय पर खेत की रखवाली नहीं करता।

(ग) चिड़ियों का इंतजार करता रहता है।

(घ) खेत पर मौजूद नहीं रहता।

(iii) चिड़ियों द्वारा खेत चुग लिए जाने पर <u>यदि रखवाला उसकी सुरक्षा की व्यवस्था करे तो सर्वत्र</u> उपहास का पात्र ही बनेगा। रेखांकित पदबंध का प्रकार होगा–

(क) संज्ञा

(ख) सर्वनाम

(ग) क्रिया

(घ) क्रियाविशेषण

(iv) बादल का बरसाना व्यर्थ, यदि–

(क) गर्मी शान्त न हो।

(ख) फसल को लाभ न पहुँचे।

(ग) किसान प्रसन्न न हो।

(घ) नदी-तालाब न भर जाएँ।

(v) गद्यांश का मुख्य भाव क्या है?

(क) बादल का बरसना

(ख) चिड़ियों द्वारा खेत का चुगना।

(ग) किसान का पछतावा करना।

(घ) समय का सदुपयोग।

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यापूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए-

[1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

मानव जाति को अन्य जीवधारियों से अलग करके महत्व प्रदान करने वाला जो एकमात्र गुरु है, वह है उसकी विचार-शक्ति। मनुष्य के पास बुद्धि है, विवेक है, तर्कशक्ति है, अर्थात् उसके पास विचारों की अमूल्य पूँजी है। अपने सद्विचारों की नींव पर ही आज मानव ने अपनी श्रेष्ठता की स्थापना की है और मानव-सभ्यता का विशाल महल खड़ा किया है। यही कारण है कि विचारशील मनुष्य के पास जब सद्विचारों का अभाव रहता है तो उसका वह शून्य मानव कुविचारों से ग्रस्त होकर एक प्रकार से शैतान के वशीभूत हो जाता है। मानवी बुद्धि जब सद्भावों से प्रेरित होकर कल्याणकारी योजनाओं में प्रवृत्त रहती है तो उसकी सदाशयता का कोई अन्त नहीं होता, किन्तु जब वहाँ कुविचार अपना घर बना लेते हैं तो उसकी पाशविक प्रवृत्तियाँ उस पर हावी हो उठती हैं। हिंसा और पापाचार का दानवी साम्राज्य इस बात का द्योतक है कि मानव की विचार-शक्ति, जो उसे पशु बनने से रोकती है, उसका साथ देती है।

(i) मानव जाति को महत्व देने में किसका योगदान है?

(क) शारीरिक शक्ति का।

(ख) परिश्रम और उत्साह का।

(ग) विवेक और विचारों का।

(घ) मानव सभ्यता का।

(ii) विचारों की पूँजी में शामिल नहीं है-

(क) उत्साह (ख) विवेक

(ग) तर्क (घ) बुद्धि

(iii) मानव में पाशविक प्रवृत्तियाँ क्यों जागृत होती हैं?

(क) हिंसाबुद्धि के कारण।

(ख) असत्य बोलने के कारण।

(ग) कुविचारों के कारण।

(घ) स्वार्थ के कारण।

(iv) मनुष्य के पास बुद्धि है, विवेक है, तर्कशक्ति है'। रचना की दृष्टि से उपर्युक्त वाक्य है-

(क) सरल (ख) संयुक्त

(ग) मिश्र (घ) जटिल

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है-

(क) मनुष्य का गुरु (ख) विवेक शक्ति

(ग) दानवी शक्ति (घ) पाशविक प्रवृत्ति

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए:

[1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

अभी न होगा मेरा अंत
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत, अभी न होगा मेरा अंत।
हरे-हरे सये पात,
डालियाँ-कलियाँ, कोमल गात।
मैं ही अपना स्वप्न-मृदुल-कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर
पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नवजीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,
द्वार दिखा दूँगा फिर उनको,
हैं मेरे वे जहाँ अनंत-
अभी न होगा मेरा अंत।

(i) कवि क्यों कहता है, 'अभी न होगा मेरा अंत'?

(क) अधिक जीना चाहता है।

(ख) जीवंत के वसंत को भोगना चाहता है।

(ग) रचनाओं से अमर हो जाना चहता है।

(घ) मीठे सपनों में खो जाना चाहता है।

(ii) जीने की चाह के पीछे कवि का मन्तव्य है कि वह-

(क) नए-नए पादपों की कलियाँ निहारेगा।

(ख) जीवन रूपी वन में वसंत को सजाएगा।

(ग) पौधों को सींचकर फूल खिलाएगा।

(घ) जीवन भर वसंत में लीन रहेगा।

(iii) फूलों से कवि आलस क्यों खींच लेना चाहता है?

(क) उन्हें सुगंधित करने के लिए।

(ख) उन्हें नया जीवन देने के लिए।

(ग) उन्हें सहर्ष भेंट करने के लिए।

(घ) उन्हें अमृत देने के लिए

(iv) कवि के अनुसार 'कोमल गात' हैं-

(क) डालियाँ (ख) कलियाँ

(ग) पत्तियाँ (घ) लताएँ

(v) सोई कलियों को कवि कैसे जगाना चाहता है?

(क) कोमल हाथों के स्पर्श से।

(ख) नवजीवन का संदेश देकर।

(ग) वसंती हवा के झोंको से।

(घ) भौंरों के गुनगुनाने से।

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए– [1 × 5 = 5] [CBSE 2011]

देश प्रेम के ओ मतवालो, उनको भूल न जाना।
महाप्रलय की अग्रि-साध लेकर जो जग में आए,
विश्व बली शासन के भय जिनके आगे मुरझाए।
चले गए जो शीश चढ़ाकर अर्ध्य लिए प्राणों का,
चलें मज़ारों पर हम उनके आज प्रदीप जलाएँ।
टूट गईं बंधन की कड़ियाँ, स्वतंत्रता की बेला,
लगता है मन आज हमें कितना अवसन्न अकेला।
पंथ चिरंतन बलिदानों का विप्लव ने पहचाना,
देशप्रेम के ओ मतवालों, उनको भूल न जाना।
जीत गए हम, जीता विद्रोही अभिमान हमारा,
प्राणदान विक्षुब्ध तरंगों को मिल गया किनारा।
उदित हुआ रवि स्वतंत्रता का व्योम उगलता जीवन,
आजादी की आग अमर है, घोषित करता कण-कण,
कलियों के अधरों पर पलते रहे विलासी कायर,
उधर मृत्यु पैरों से बाँधे, रहा जूझता यौवन।
उस शहीद यौवन की सुधि हम क्षण भर को न बिसारें,
उसके पगचिन्हों पर अपने मन की मोती बारें।

(i) कविता में चर्चा की गई है–
  (क) देशवासियों की।
  (ख) देश प्रेमियों की।
  (ग) देश के शहीदों की।
  (घ) देश के विद्रोहियों की।

(ii) 'मज़ारों पर हम उनके आज प्रदीप जलाएँ का आशय है–
  (क) उनका गुणगान करना।
  (ख) उनको श्रद्धांजलि देना।
  (ग) उनकी पूजा करना।
  (घ) उनका स्मरण करना।

(iii) 'जीत गए हम' से किसकी ओर संकेत किया गया है?
  (क) देश के सैनिकों की ओर।
  (ख) देश के नवयुवकों की ओर।
  (ग) देश-प्रेम के दीवानों की ओर।
  (घ) देश के नेताओं की ओर।

(iv) 'उधर मृत्यु पैरों से बाँधे, रहा जूझता यौवन' का तात्पर्य है–
  (क) युवाजन मृत्यु से डरकर लड़खड़ाते रहे।
  (ख) नवयुवक विलासिता के कारण डगमगाते रहे।
  (ग) देश प्रेमी नवयुवक निडर होकर मृत्यु से लड़ते रहे।
  (घ) अनेक देशवासी निर्भय भाव से आज़ादी के गीत गाते रहे।

(v) कविता का संदेश है कि हम–
  (क) सदा सजग होकर स्वतंत्रता की रक्षा करते रहें।
  (ख) शहीदों का स्मरण कर उनके पदचिन्हों पर चलते रहें।
  (ग) स्वाभिमान की रक्षा के लिए सर्वदा प्रयासशील रहें।
  (घ) निष्ठाभाव से कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहें।

5. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

प्रकृति निरंतर परिवर्तनशील है। रात्रि के घोर अंधकार के पश्चात् मनोहारिणी उषा का आगमन, बादलों की काली घटा के पीछे से सूर्य का उज्जवल प्रकाश, ग्रीष्म मे सूखे वृक्षों में पावसी फुहारों से नई कोपलों का जन्म- यह सभी बदलते परिदृश्य जीवन की परिवर्तनीय गति की ओर इंगित करते हैं। जीवन का यह चक्र सतत चलायमान है। मानव जीवन का इतिहास उसके निरंतर परिवर्तित होते विचारों, मान्यताओं और आस्थाओं का शाश्वत साक्षी है। आदिम युग के मानव ने आज बीसवीं सदी तक की कालावधि में परिवर्तनों की कैसी लम्बी यात्रा पूरी की है वह सबका चिरपरिचित सत्य है। मनुष्य जीवन की जन्म, शैशव, यौवन और जरा नामक चारों अवस्थाएँ परिवर्तन की पुष्टि करती हैं। जहाँ परिवर्तन की गति रूक जाती है वही पड़ाव मृत्यु कहलाता है।

(i) नई कोपलों का जन्म कब होता है?
  (क) ग्रीष्म ऋतु में (ख) बादलों के घिरने पर
  (ग) पावस ऋतु में (घ) ऋतु बदलने पर

(ii) परिवर्तित होते विचारों, मान्यताओं का साक्षी कौन है?
  (क) बादलों की काली घटा
  (ख) निरंतर परिवर्तनशील प्रकृति
  (ग) रात्रि का घोर अंधकार
  (घ) मानव जीवन का इतिहास

(iii) चिरपरिचित सत्य है–
  (क) बीसवीं सदी तक का कालावधि
  (ख) आस्थाओं का इतिहास

(ग) मानव के परिवर्तनों की लम्बी यात्रा

(घ) आदिम युग का मानव

(iv) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है-

(क) परिवर्तन की सदी

(ख) परिवर्तन ही जीवन है

(ग) प्रकृति का प्रभाव

(ग) आदिम युग का मानव

(v) उज्ज्वल और परिवर्तित शब्दो में क्रमशः उपसर्ग और प्रत्यय है-

(क) उज्, त (ख) उत्, इत

(ग) उज्ज्व, तित (घ) ज्व, इत

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

मनुष्य को चाहिए कि संतुलित रहकर अति के मार्गों का त्याग कर मध्यम मार्ग को अपनाए। अपने सामर्थ्य की पहचान कर उसकी सीमाओं के अंदर जीवन बिताना एक कठिन कला है। सामान्य मनुष्य अपने अहं के वशीभूत होकर अपना मूल्यांकन अधिक कर बैठता है और इसी के फलस्वरूप वह उन कार्यों में हाथ लगा देता है जो उसकी शक्ति में नहीं हैं। इसलिए सामर्थ्य से अधिक व्यय करने वालों के लिए कहा जाता है कि 'तेते पाँ पसारिए जेती लांबी सौर'। उन्हीं के लिए यह कहा गया है कि अपने सामर्थ्य को विचार कर उसके अनुरूप कार्य करना और व्यर्थ के दिखावे में स्वयं को न भुला देना एक कठिन साधना तो अवश्य है पर सबके लिए यही मार्ग अनुकरणीय है।

(i) अति का मार्ग क्या होता है?

(क) असंतुलित मार्ग (ख) संतुलित मार्ग

(ग) अमर्यादित मार्ग (घ) मध्यम मार्ग

(ii) कठिन कला क्या है?

(क) सामर्थ्य के बिना सीमारहित जीवन बिताना

(ख) सामर्थ्य को बिना पहचाने जीवन बिताना

(ग) सामर्थ्य की सीमा में जीवन बिताना

(घ) सामर्थ्य न होने पर भी जीवन बिताना

(iii) मनुष्य अहं के वशीभूत होकर-

(क) अपने को महत्वहीन समझ लेता है

(ख) किसी को महत्व देना छोड़ देता है

(ग) अपना सर्वस्व खो बैठता है

(घ) अपना अधिक मूल्यांकन कर बैठता है

(iv) 'तेते पाँव पसारिए जेती लांबी सौर' का आशय है-

(क) सामर्थ्य के अनुसार कार्य न करना

(ख) सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना

(ग) व्यर्थ का दिखावा करना

(घ) आय से अधिक व्यय करना

(v) प्रस्तुत गंद्याश का शीर्षक हो सकता है-

(क) आय के अनुसार व्यय

(ख) दिखावे में जीवन बिताना

(ग) सामर्थ्य से अधिक व्यय करना

(घ) सामर्थ्य के अनुसार कार्य करना

7. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

और न कोई इस मंदिर का हो सकता अधिकारी
भारतवासी ही हम इसके रक्षक और पुजारी
भाई, भारतभूमि हमारी।
आज जो यह तुम देख रहे हो महलें और अटारी
लगा रक्त का गारा इसमें तन की ईंट हमारी
तन-मन देकर खूब सजाई यह सुन्दर फुलवारी
फूल सूँघ लो पर न तोड़ना मर्जी बिना हमारी
जग सिर बिच यह नीलकमल सम विकसित मुनि मनहारी।
हम इसके मधु पीवनहारे कारे भ्रमर सुखारी
रत्नवती इस वसुंधरा के हम ही हैं भण्डारी
इस यशुमति के पुत्र सदा हम गोप कृष्ण हलधारी।।

(i) 'मंदिर' शब्द से किसकी ओर संकेत किया गया है?

(क) भारतवासी (ख) मातृभूमि

(ग) संस्कृति (घ) सभ्यता

(ii) महलें और अटारी का तात्पर्य है-

(क) दुख-अशांति

(ख) बड़े-बड़े

(ग) सुख-समृद्धि के प्रतीक

(घ) लहलहाते खेत

(iii) 'रक्त का गारा और तन की ईंट' बताते हैं-

(क) स्वतंत्रता संग्राम की गाथा

(ख) भवन निर्माण की गाथा

(ग) भारतीयों के मेहनत की गाथा

(घ) त्याग-बलिदान की गाथा

(iv) वसुंधरा को रत्ननवती क्यों कहा गया है?

(क) इसकी धरती अन्न से भरी रहती है

(ख) इसके किसान अन्न-रत्न उपजाते हैं

(ग) इसमें रत्न हीरे-जवाहरात की खान है

(घ) यह सोने की चिड़िया है

(v) 'हलधारी' शब्द से किसकी ओर संकेत किया गया है?

(क) देश के रक्षक

(ख) देश के किसान

(ग) देश के निर्माता

(घ) देश के नेता

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2013]

अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफानों में
सहनशीलतर, दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में
वहीं पंथ-बाधा तो तोड़े, बहते हैं जैसे हो निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर
आज देश की भावी आशा बनी तुम्हारी ही तरूणाई
नए जन्म की श्वास तुम्हारे अंदर जगकर है लहराई।।

(i) काव्यांश में किन लोगों की ओर संकेत है?

(क) सहनशीलों की ओर

(ख) नवयुवकों की ओर

(ग) प्रगतिशीलों की ओर

(घ) देशवासियों की ओर

(ii) वे बाधाओं में भी किसकी तरह बढ़ते जा रहे हैं?

(क) हवा की तरह (ख) तूफानों की तरह

(ग) सैनिकों की तरह (घ) निर्झर की तरह

(iii) युवकों की तरूणाई का लाभ दिखार्द दे रहा है-

(क) देश में नई चेतना के रूप में

(ख) देश की प्रगति एवं आशा के रूप में

(ग) युवकों की प्रेरणा के रूप में

(घ) औद्योगिक विकास के रूप में

(iv) जीवन पृष्ठो पर युवकों से क्या आशा की गई है?

(क) नई बहादुरी की

(ख) नए इतिहास की

(ग) विकास के नए अध्याय की

(घ) नए वसंत की

(v) 'विश्व' शब्द का पर्याय नहीं है-

(क) जग (ख) संसार

(ग) पृथ्वी (घ) जगत

9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2014]

नारी केवल कामिनी नहीं, जगद्धात्री भी है, अलंकरण-मात्र ही नहीं, समाज को जीवंत बनाने वाली प्रेरणाशक्ति भी है। आज जनमानस इस दृष्टिकोण से वंचित है। नारी इतनी शक्तिहीन नहीं है। माता बनकर उसकी शक्ति परोक्षरूप में अपने बालकों के चरित्र-निर्माण में कार्य करती है। प्रियारूप में वह समस्त दया, करूणा, ममता और माधुर्य का उपहार देकर पुरूष को उसके कार्यक्षेत्र के लिए नई ऊर्जा प्रदान करती है। विद्या-बुद्धि में गार्गी तथा अपाला बनकर और शौर्य में लक्ष्मीबाई एवं चाँदबीबी बनकर उसने अपने तेजस्वी रूप का परिचय समय-समय पर दिया है। स्वदेश में ही नहीं, विदेश में भी ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। जोन ऑफ़ आर्क ने एक साथ आत्मिक बल और शारीरिक बल के समन्वय से ऐसी ज्योति जलाई जो युगों-युगों तक उनका नाम अमर रखेगी। इतिहास के पन्ने इस बात के साक्षी हैं कि नारी केवल चौका-चूल्हा ही नहीं समहाला, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर घोड़े की पीठ पर चढ़कर रणक्षेत्र में भी वीरता का परिचय दिया। अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए आततायी को धूल चटा दी।

(i) माता के रूप में नारी का महत्वपूर्ण कार्य है

(क) पालन-पोषण करना

(ख) परिवार सम्हालना

(ग) दया-ममता बिखेरना

(घ) चरित्र-निर्माण करना

(ii) नारी किस रूप में पुरूष को नई ऊर्जा प्रदान करती है?

(क) माता के रूप में (ख) जगद्धात्री के रूप में

(ग) प्रिया के रूप में (घ) दासी के रूप में

(iii) विद्या-बुद्धि में किन नारियों ने तेजस्वी रूप दिखाया है?

(क) लक्ष्मीबाई एवं चाँदबीबी

(ख) सीता और सावित्री

(ग) द्रौपदी और गांधारी

(घ) गार्गी तथा अपाला

(iv) नारियों ने आततायी को धूल क्यों चटाई?

(क) अपनी रक्षा के लिए

(ख) देश की रक्षा के लिए

(ग) मर्यादा की रक्षा के लिए

(ग) पति की रक्षा के लिए

(v) 'परोक्ष' शब्द विपरीतार्थक शब्द है

(क) समक्ष (ख) विपक्ष

(ग) प्रत्यक्ष (घ) अप्रत्यक्ष

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2014]

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि मानवीय गुणों का अधिकाधिक विकास विपरीत परिस्थितियों में ही होता है। जीवन में सर्वत्र इस सत्य के उदाहरण भरे हुए हैं। कष्ट और पीड़ा आंतरिक वृत्तियों के परिशोधन के साथ ही एक ऐसी आंतरिक दृढ़ता को जन्म देते हैं जो मनुष्य को तप्त स्वर्ण की भाँति बनाता है। विपत्तियों के पहाड़ के टकराकर उसका बल बढ़ता है। हृदय में ऐसी अद्‌भुत वृत्ति का जन्म होता है कि एक बार कष्टों से जूझकर फिर वह उनकों खेल समझने लगता है। उसके हृदय में विपत्तियों को ठोकर मारकर अपना मार्ग बना लेने की वीरता उत्पन्न हो जाती है। मन की भाँति ही शरीर की दृढ़ता शारीरिक श्रम के द्वारा आती है। शारीरिक परिश्रम उसके शरीर को बलिष्ठ बनाता है। विपत्तियों में तप कर दृढ़ हुए शरीर की भाँति परिश्रम की अग्नि में तप कर शरीर का लौह इस्पात बन जाता है। जब एक शायर ने कहा कि 'मुश्किलें इतनी पड़ीं मुझ पर कि आसाँ हो गई', तो वह इस सत्य से परिचित था। चारित्रिक दृढ़ता के लिए जो कार्य कष्टों का आधिक्य करता है, शारीरिक दृढ़ता के लिए वही कार्य श्रम करता है। दोनों ही ऐसे हथौड़े हैं जो पीट-पीट कर शरीर और मन में इस्पाती दृढ़ता को जन्म देते हैं।

(i) विपरीत परिस्थितियाँ कारण है

(क) अनुकूल परिस्थितियों को रोकने की

(ख) समस्या-समाधान की

(ग) सामाजिक चुनौतियों स्वीकारने की

(घ) मानवीय गुणों के विकास की

(ii) मनुष्य को सोने जैसा शुद्ध बनाने में सहायक है

(क) शरीर की दृढ़ता (ख) मन की दृढ़ता

(ग) आंतरिक वृत्ति (घ) विपत्तियों से टकराव

(iii) विपत्तियों के बीच अपना मार्ग बना लेने की क्षमता कब उत्पन्न होती है?

(क) बाधाओं से बचकर

(ख) कष्टों से खेलकर

(ग) कष्टों से जूझकर

(घ) साधन-संपन्न बनकर

(iv) 'लोहा इस्पात बन जाता है' - कथन का आशय है

(क) दुर्बल सबल बन जाता है

(ख) बलहीन बलवान बन जाता है

(ग) सबल अतिसबल बन जाता है

(घ) निर्बल प्रबल बन जाता है

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

(क) मन और शरीर

(ख) मानसिक पीड़ा और शारीरिक कष्ट

(ग) मन और शरीर की दृढ़ता

(घ) मानव का विकास

11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2014]

पहले से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डर कर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से, श्रमजल से।
ब्रह्मा का अभिलेख-
पढ़ा करते निरूद्यमी प्राणी
धोते वीर कु-अंक भाल का
बहा भ्रवों से पानी।
भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का,
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।
पूछो किसी भाग्यवादी से,

यदि विधि-अंक प्रबल है,
पद पर क्यों देती न स्वयं
वसुधा निज रतन उगल है?

(i) मनुष्य को सुख प्राप्त होता है
(क) भाग्य के बल से (ख) भुजाओं के बल से
(ग) विद्या-बल से (घ) धन के बल से

(ii) कैसे लोग भाग्यवादी होते हैं?
(क) कायर (ख) परिश्रमी
(ग) निरूद्यमी (घ) आलसी

(iii) मनुष्य प्रकृति को हरा सकता है
(क) उद्यम और परिश्रम से
(ख) आतंक और भय से
(ग) उग्रता और शोषण से
(घ) भाग्य और पौरूष से

(iv) भाग्यवाद-रूपी हथियार से शोषक
(क) लोगों को भ्रमित करते हैं
(ख) दूसरों का हिस्सा दबाकर रखते हैं
(ग) क्रान्ति नहीं होने देते
(घ) अत्याचार करते हैं

(v) काव्यांश का मूल संदेश है
(क) भाग्यवादियों को डराना
(ख) उद्यम और परिश्रम का महत्व बताना
(ग) वसुधा के रत्नों के बारे में बताना
(घ) वीरों के लक्षण बताना

12. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [1 × 5 = 5] [CBSE 2014]

विघ्नों का दल चढ़ आए तो, उन्हें देख भयभीत न होंगे,
अब न रहेंगे दलित दीन हम, कहीं किसी से हीन न होंगे,
क्षुद स्वार्थ की खातिर हम तो कभी न गर्हिता कर्म करेंगे।
पुण्यभूमि यह भारतमाता, जग की हम तो भीख न लेंगे।

मिसरी-मधु-मेवा-फल सारे, देती हमकों सदा यही है,
कदली, चावल, अन्न विविध और क्षीर सुधामय लुटा रही है।

आर्यभूमि उत्कर्षमयी यह, गूँजेगा यह गान हमारा।
कौन करेगा समता इसकी, महिमामय यह देश हमारा।।

(i) लोग निंदित कर्म क्यों करते हैं?
(क) दूसरों को सताने के लिए
(ख) छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए
(ग) दूसरों को पीछे छोड़ने के लिए
(घ) अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए

(ii) काम करते हुए लोग प्रायः डरते हैं
(क) शत्रुओं से (ख) विघ्न-बाधाओं से
(ग) क्षुद्र स्वार्थों से (घ) सहायता न मिलने से

(iii) कोई देश हमारे देश से समता नहीं कर सकता क्योंकि हमारा देश
(क) विशाल है (ख) शक्तिशाली है
(ग) संपन्न है (घ) महिमावान् है

(iv) 'जग की हम तो भीख न लेंगे' का भाव है?
(क) हम किसी से भीख नहीं माँगेंगे
(ख) हम बेसहारा हैं तो स्वाभिमानी भी हैं
(ग) सहायता के लिए विदेशियों के सामने हाथ नहीं फैलाएँगे
(घ) पराधीन रहकर भी हम स्वावलंबी बनेंगे

(v) कविता में भारत का विश्लेषण नहीं है
(क) महिमामय
(ख) गर्हित
(ग) उत्कर्षमय
(घ) पुण्यभूमि

13. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखो-

[2 × 6 = 12] [CBSE 2016]

हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ एक तरफ भौतिक समृद्धि अपनी ऊँचाई पर है, तो दूसरी तरफ चारित्रिक पतन की गहराई है। आधुनिकीकरण में उलझा मानव सफलता की नित नहीं परिभाषाएँ खोजता रहता है और अपनी अंतहीन इच्छाओं के रेगिस्तान में भटकता रहता है। ऐसे समय में सच्ची सफलता और सुख-शांति की प्यास से व्याकुल व्यक्ति अनेक मानसिक रोगों का शिकार बनता जा रहा है। हममें से कितने लोगों को इस बात का ज्ञान है कि जीवन में सफलता प्राप्त करना और सफल जीवन जीना, यह दोनों दो अलग-अलग बातें हैं। यह जरूरी नहीं कि जिसने अपने जीवन में साधारण कामनाओं को हासिल कर लिया हो, वह पूर्णतः संतुष्ट और प्रसन्न भी हो। अतः हमें गंभीरतापूर्वक इस बात को समझना चाहिए कि इच्छित फल

को प्राप्त कर लेना ही सफलता नहीं है। जब तक हम अपने जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का सिंचन नहीं करेंगे, तब तक यथार्थ सफलता पाना हमारे लिए मुश्किल ही नहीं, अपितु असंभव कार्य हो जाएगा, क्योंकि बिना मूल्यों के प्राप्त सफलता केवल क्षणभंगुर सुख के समान रहती है।

कुछ निराशावादी लोगों का कहना है कि हम सफल नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी तकदीर या परिस्थितियाँ ही ऐसी हैं। परंतु यदि हम अपना ध्येय निश्चित करके उसे अपने मन में बिठा लें, तो फिर सफलता स्वयं हमारी ओर चलकर आएगी। सफल होना हर मनुष्य का जन्मशिद्ध अधिकार है, परंतु यदि हम अपनी विफलताओं के बारे में ही सोचते रहेंगे, तो सफलता को कभी हासिल नहीं कर पाएँगे। अतः विफलताओं की चिंता न करें, क्योंकि वे तो हमारे जीवन का सौंदर्य हैं और संघर्ष जीवन का काव्य है, कई बार प्रथम आघात में पत्थर नहीं टूट पाता, उसे तोड़ने के लिए कई आघात करने पड़ते हैं, इसलिए सदैव अपने लक्ष्य को सामने रख आगे बढ़ने की जरूरत है। कहा भी गया है कि जीवन में सकारात्मक कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

(क) मनुष्य के मानसिक रोग और अशांति का कारण किसे माना गया है?

(ख) सफलता पाना और सफल जीवन जीना दोनों बातें अलग कैसे हैं?

(ग) गद्यांश में जीवन का सौंदर्य और संघर्ष किसे बताया गया है? क्यों?

(घ) पत्थर का उदाहरण क्यों दिया गया है?

(ङ) वास्तविक सफलता पाने के लिए क्या आवश्यक है और क्यों?

(च) आशय स्पष्ट कीजिए : ''संघर्ष जीवन का काव्य है।''

14. काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखो–

[2 × 4 = 8] [CBSE 2016]

वह जागता है
रात के सन्नाटे में
दिन का कोलाहल उसे सोने नहीं देता?
वह अरमानों को सँजोता है और
सिर्फ अपने लिए जीता है।
रात के सन्नाटे में वह सोच पाता है, विवेक को जगा पाता है
तभी तो दिन को बर्दाश्त कर पाता है!
वह परेशान है दिन के कोलाहल से,
वही ढोंग, दिखावा, झूठे रिश्ते,
छल, छद्म और पाखंड दम घुटता है उसका
इसीलिए जागना चाहता है
रात के सन्नाटे में।

(क) काव्यांश में दिन और रात किस बात के प्रतीक माने गए हैं?

(ख) विवेक किसे कहा जाता है? कवि का विवेक कब जागता है?

(ग) कवि को दिन में परेशानी क्यों होती है?

(घ) आशय स्पष्ट कीजिए : ''तभी तो दिन को बर्दाश्त कर पाता है!''

15. गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दो–

[2 × 6 = 12] [CBSE 2017]

पता नहीं क्यों, उनकी कोई नौकरी लंबी नहीं चलती थी। मगर इससे वह न तो परेशान होता, न आतंकित, और न ही कभी निराश उनके दिमाग में आती। यह बात उनके दिमाग में आई कि उन्हें अब नौकरी के चक्कर में रहने की बजाय अपना काम शुरू करना चाहिए। नई ऊँचाई तक पहुँचने का उन्हें यही रास्ता दिखाई दिया। सत्य है, जो बड़ा सोचता है, वहीं एक दिन बड़ा करके भी दिखाता है और आज इसी सोच के कारण उनकी गिनती बड़ व्यक्तियों में होती है। हम अक्सर इंसान के छोटे-बड़े होने की बातें करते हैं, पर दरअसल इंसान की सोच ही उसे छोटा या बड़ा बनाती है। स्वेट मार्डेन अपनी पुस्तक 'बड़ी सोच का बड़ा कमाल' में लिखते हैं कि यदि आप दरिद्रता की सोच को ही अपने मन में स्थान दिए रहेंगे, तो आप कभी धनी नहीं बन सकते, लेकिन यदि आप अपने मन में अच्छे विचारों को ही स्थान देंगे और दरिद्रता, नीचता आदि कुविचारों की ओर से मुँह मोड़े रहेंगे और उनको अपने मन में कोई स्थान नहीं देंगे, तो आपकी उन्नति होती जाएगी और समृद्धि के भवन में आप आसानी से प्रवेश कर सकेंगे।

'भारतीय चिंतन में ऋषियों ने ईश्वर के संकल्प मात्र से शृष्टि रचना को स्वीकार किया है और यह संकेत दिया है कि व्यक्ति जैसा बनना चाहता है, वैसा बार-बार सोचे। व्यक्ति जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है।' सफलता की ऊँचाइयों को छूने वाले व्यक्तियों का मानना है कि सफलता उनके मस्तिष्क से नहीं, अपितु उनकी सोच से निकलती है। व्यक्ति में सोच की एक ऐसी जादुई शक्ति है कि यदि वह उसका उचित प्रयोग करे, तो कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है। इसलिए सदैव बड़ा सोचें, बड़ा सोचने से बड़ी उपलब्धियाँ हासिल होंगी। फायदे बड़े होंगे और देखते-देखते आप अपनी बड़ी सोच द्वारा बड़े आदमी बन

जाएँगे। इसके लिए हैजलिट कहते हैं–महान सोच, जब कार्यरूप में परिणत हो जाती है, तब वह महान कृति बन जाती है।

(क) गद्यांश में किस प्रकार के व्यक्ति के बारे में चर्चा की गई है?

(ख) गद्यांश में समृद्धि और उन्नति के लिए क्या सुझाव दिए गए हैं?

(ग) भारतीय विचारधारा में संकल्प और चिंतन का क्या महत्व है?

(घ) गद्यांश में किस जादुई शक्ति की बात की गई है? उसके परिणाम हो सकते हैं?

(ड.)सफलता' और 'आतंकित' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग और प्रत्यय का उल्लेख कीजिए।

(च) गद्यांश से दो मुहावरे चुनकर उनका वाक्य प्रयोग कीजिए।

16. काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दो–

[2 × 4 = 8] [CBSE 2017]

इस पृथ्वी पर
एक मनुष्य की तरह
मैं जीना चाहता हूँ
वे खत्म करना चाहते हैं
बैक्टीरिया की तरह
उनके तमाम हथकंडों के बावजूद
मैं नहीं मरता
उपेक्षा, भूख और तिरस्कार से लड़ते-झगड़ते
बढ़ गई है मेरी प्रतिरोधक सामर्थ्य
मैं मृत्यु से नहीं डरता
और अमरत्व में मेरा विश्वास नहीं
लेकिन मैं नहीं चाहता प्रतिदिन मरना
थोड़ा-थोड़ा
किंचित विनम्रता
किंचित अकड़
बेहतर शृष्टि के लिए
मैं एक पके फल की तरह टपकना चाहता हूँ
जिसे लपकने के लिए
झुक जाएँ एक साथ
असंख्य नन्हे-नन्हे हाथ
अधूरी लड़ाई बढ़ाने के लिए
फल के रस की तरह
मैं उनके रक्त में घुल जाना चाहता हूँ
मैं एक मनुष्य की तरह मरना चाहता हूँ।

(क) कवि की प्रतिरोध क्षमता कैसे बढ़ गई है?

(ख) कवि के 'हथकण्डों' शब्द के प्रयोग का तात्पर्य क्या है?

(ग) मैं नहीं चाहता प्रतिदिन मरना का आशय क्या है?

(घ) पके फल की तरह टपकने की चाह की गई है?

17. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 20-30 शब्दों में लिखिए:

[9 Marks] [CBSE 2018]

हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिन्ह है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम से उत्तम वस्तु एक बार हँस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी से अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हँसो और पेट फुलाओ। हँसी कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों पर खीझने वाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाक्रीटस 109 वर्ष तक जिया। हँसी-खुशी का नाम जीवन है। जो रोते हैं उनका जीवन व्यर्थ है कवि कहता है – 'जिन्दगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते है।' मनुष्य के शरीर के वर्णन पर एक विलायती विद्वान ने पुस्तक लिखी है। उसमें वह कहता है कि उत्तम सुअवसर की हँसी उदास-से-उदास मनुष्य के चित्त को प्रफुल्लित कर देती है। आनंद एक ऐसा प्रबल इंजन है कि उसमें शोक और दुख की दीवारों को ढा सकते हैं। प्राण रक्षा के लिए सदा सब देशों में उत्तम-से-उत्तम उपाय मनुष्य के चित्त को प्रसन्न रखना है। सुयोग्य वैद्य अपने रोगी के कानों में आनंदरूपी मंत्र सुनाता है।

एक अंग्रेज डॉक्टर कहता है कि किसी नगर में दवाई लदे बीस गधे ले जाने से एक हँसोड़ आदमी को ले जाना अधिक लाभकारी है।

(क) हँसी भीतरी आनंद को कैसे प्रकट करती है? [2]

(ख) पुराने समय में लोगों ने हँसी को महत्व क्यों दिया? [2]

(ग) हँसी को एक शक्तिशाली इंजन के समान क्यों कहा गया है? [2]

(घ) हेरीक्लेस और डेमाक्रीटस के उदाहरण से लेखक क्या स्पष्ट करना चाहता है? [2]

(ड.) गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। [1]

18. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः

[6 Marks] [CBSE 2018]

मैं चला, तुम्हें भी चलना है असि धारों पर
सर काट हथेली पर लेकर बढ आओं तो।
इस युग को नूतन स्वर तुमको ही देना है,
अपनी क्षमता को आज जरा आज़माओं तो।
दे रहा चुनौती समय अभी नवयुवकों को
मैं किसी तरह मंज़िल तक पहले पहुँचूँगा।
तुम बना सकोगे भूतल का इतिहास नया,
मैं गिरे-हुए लोगों को गले लगाऊँगा।
क्यों ऊँच-नीच, कुल, जाति रंग का भेद-भाव?
मैं रूढ़िवाद का कल्मष-महल ढहाऊँगा।
जिनका जीवन वसुधा की रक्षा हेतु बना
मरकर भी सदियों तक यों ही वे जीते हैं।
दुनिया को देते हैं यश की रसधार विमल
खुद हँसते-हँसते कालकूट को पीते हैं।
है अगर तुम्हें यह भूख- 'मुझे भी जीना है'
तो आओ मेरे साथ नींव में गड़ जाओ।
ऊपर इसके निर्मित होगा आनंद-महल
मरते-मरते भी दुनिया में कुछ कर जाओ।

(क) कवि को नवयुवकों से क्या-क्या अपेक्षाएँ हैं? [2]

(ख) 'मरकर भी सदियों तक जीना' कैसे संभव है? स्पष्ट कीजिए। [2]

(ग) भाव स्पष्ट कीजिएः [2]

'दुनिया को देते हैं यश की रसधार विमल,
खुद हँसते-हँसते कालकूट को पीते हैं।'

उत्तर माला

1. (i) (ग)
(ii) (ख)
(iii) (क)
(iv) (ख)
(v) (ग)

2. (i) (ग)
(ii) (क)
(iii) (ख)
(iv) (ग)
(v) (क)

3. (i) (ख)
(ii) (ख)
(iii) (ख)
(iv) (ग)
(v) (क)

4. (i) (ग)
(ii) (ख)
(iii) (क)
(iv) (ग)
(v) (ख)

5. (i) ग
(ii) घ
(iii) क
(iv) ख
(v) क

6. (i) क
(ii) ग
(iii) घ
(iv) ख
(v) घ

7. (i) ख
(ii) ग
(iii) घ
(iv) ख
(v) क

8. (i) ग
(ii) घ
(iii) ख
(iv) ग
(v) ग

9. (i) घ
(ii) ग
(iii) घ

(iv) ग

(v) ग

10. (i) ग

(ii) घ

(iii) ख

(iv) ग

(v) घ

11. (i) ख

(ii) ख

(iii) क

(iv) ख

(v) ख

12. (i) ख

(ii) ग

(iii) घ

(iv) ग

(v) ख

13. (क) मनुष्य के मानसिक रोग और अशांति का कारण उसकी अंतहीन इच्छाएं हैं। मनुष्य अपनी सफलताओं की प्यास की व्याकुलता से मानसिक रोगों का शिकार होता जा रहा है।

(ख) सफलता पाना और सफल जीवन जीना दोनों अलग बाते हैं, क्योंकि जब तक हम इच्छित फल को नहीं पाते , तब तक हम सफल नहीं होते। लेकिन यदि हम अपने जीवन में सकारात्मक सोच रखते हैं, तो हमारा जीवन सफल होता है।

(ग) गद्यांश में जीवन का सौंदर्य और संघर्ष विफलताओं को बताया गया है।

(घ) पत्थर का उदाहरण इसलिए दिया गया है, क्योंकि जिस प्रकार एक बार चोट/आघात करने से पत्थर नहीं टूटता उसे तोड़ने के लिए कई बार कोशिश करनी पड़ती है। उसी तरह से जीवन में सफलता पाने के लिए हमें बार-बार प्रयास करना पड़ता है।

(ड.)वास्तविक सफलता पाने के लिए जीवन में सकारात्मक सोच रखना बहुत आवश्यक है। साथ ही जीवन में एक ध्येय निश्चित करना भी बहुत जरूरी है।

(च) आशय- यह सत्य ही है कि संघर्ष जीवन का काव्य है। संघर्ष करने से ही जीवन में सफलता मिलती है। जब तक हम किसी भी चीज को पाने के लिए संघर्ष नहीं करते, तब तक हमें वह सफल रूप से प्राप्त नहीं होती।

14. (क) काव्यांश में दिन को झल्लाहट, हड़बड़ी तथा झूठ का प्रतीक माना गया है और रात को विवेक का प्रतीक माना गया है, जब कवि ढंग से सोच पाता है।

(ख) विवेक, अंतःकरण की शक्ति को कहा जाता है। कवि का विवेक तब जागता है, जब उसके आस-पास शोर मचाने वाले, ढ़ोगी लोग नहीं होते।

(ग) कवि को दिन में परेशानी इसलिए होती है कि दिन में वह सही तरीके से कोई भी काम नहीं कर पाता, क्योंकि उसके आस-पास बहुत से लोग ऐसे होते हैं, जो शोर मचाते हैं।

(घ) इस पंक्ति का आशय है कि कवि रात को शांत समय में, विवेकपूर्ण तरीके से सोचता है तथा कार्य सम्पूर्ण करता है। लेकिन दिन में तो शोर इतना होता है कि वह अपने कोई भी काम सम्पूर्ण नहीं कर पाता।

15. (क) गद्यांश में एक ऐसे व्यक्ति के बारे में चर्चा की गई है, जो अपना खुद का काम करके ऊँचाई तक पहुंचना चाहता है। ऐसे व्यक्ति ऊँचाई तक पहुंचने के लिए बड़ा ही सोचते हैं।

(ख) समृद्धि तथा उन्नति के लिए ये सुझाव दिए गए हैं कि यदि आज हम मन में अच्छे विचारों को स्थान देंगें तथा दरिद्रता, नीचता आदि कुविचारों की ओर से मुंह मोडेंगें तो हमारी उन्नति अपने-आप हो जाएगी।

(ग) भारतीय विचारधारा में संकल्प और चिंतन का बहुत महत्व है। उन्होंने यह बताया है कि हम अगर किसी चीज के लिए अगर संकल्प कर लेते हैं तो वह पूरी हो जाती है। साथ ही यह भी संकेत दिया है कि जो जैसा बनना चाहता है, वह भी बन जाता है।

(घ) गद्यांश में व्यक्ति की सोच को जादुई शक्ति कहा गया है। क्योंकि हम अगर बड़ा सोचते हैं तो बड़ी उपलब्धियाँ हासिल होंगी, बड़े फायदे होंगे तथा देखते ही देखते बड़े आदमी बन जाएंगें।

(ड़) सफलता- उपसर्ग -सफल

प्रत्यय- ता

अंतकित – उपसर्ग – आ

प्रत्यय – इत

(च) मुंह मोड़ना– हमें जटिल परिस्थितियों से कभी मुंह नहीं मोड़ना चाहिए।

ऊँचाइयों को छूना– मेहनत करने पर ही हम सफलता की ऊचाइयों को छू सकते हैं।

16. (क) कवि की प्रतिरोध क्षमता उपेक्षा, भूख और तिरस्कार से संघर्ष करते–करते बढ़ गई हैं।

(ख) कवि के 'हथकण्डों' शब्द का तात्पर्य यह है कि अनेकों उपाय, जो उसे समाप्त करने के लिए लगाए जा रहे हैं। वे सब उनकी दृढ इच्छा के सामने टिक नहीं पाते। अर्थात् जब इंसान अपने किसी कार्य/बात के प्रति कट्टर हो जाता है तो उसके सामने किसी भी तरह के हथकण्ड़े/उपाया नहीं टिकते हैं।

(ग) कवि का आशय है कि वह हर दिन बेइज्जत नहीं होना चाहता, घुट–घुट कर नही मरना चाहता, बल्कि एक पके हुए फल की तरह सृष्टि की भलाई करते हुए इस दुनिया से चले जाना चाहता है।

(घ) जिस प्रकार एक पका हुआ फल जब टूट कर गिरता है, तो उसे लपकने के लिए बच्चों से लेकर बड़ों तक भागते हैं। उसके पकेपन तथा मीठे पन का स्वाद उठाते हैं, उसी तरह कवि भी एक समझदार तथा बुद्धिवान इंसान बनकर ही दुनिया से जाना चाहता है ताकि बाद में लोग उसके गुणों को याद करें तथा अपनाएँ।

17. (क) हँसी भीतरी आनंद का बाहरी चिह्न है। यह शरीर को स्वस्थ रखने का सबसे अच्छा साधन है। अगर हम अन्दर से स्वस्थ तथा खुश होते हैं तो हमारे चेहरे पर स्वयं ही हँसी प्रकट हो जाती है।

(ख) पुराने समय में हँसी को बहुत महत्व दिया गया है। पुराने लोग कहते थे कि जितना हँसोगे उतनी ही आयु बढ़ेगी। इसलिए हँसो और लम्बा जिओ।

(ग) हँसी को एक शक्तिशाली इंजन इसलिए माना गया है क्योंकि इससे शोक व दु:ख की दीवारों को गिराया जा सकता है।

(घ) हेरीक्लेस के उदाहरण से लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि वह हमेशा अपने कर्मों पर खीझता ही रहता था, इसलिए कम जिया। जबकि डेमाक्रीट्स हमेशा खुश रहता था, इसलिए वह 109 वर्ष तक जिया। इस प्रकार लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि हँसने तथा प्रसन्न रहने से लम्बी आयु तक जिया जा सकता है।

(ड़) हँसी हर मर्ज़ की दवा

18. (क) कवि को नवयुवकों से यह अपेक्षाएँ हैं कि वे इस दुनिया का विकास करने में योगदान देंगे। वे एक नया इतिहास बनाएँगे।

(ख) अगर हम अपना सब कुछ इस देश तथा मानवता के लिए न्योछावर कर देते हैं तो हम मरकर भी सदियों तक जीते हैं। अर्थात् सब लोग हमें याद करते हैं।

(ग) इन पंक्तियों के द्वारा कवि यह कहना चाहता हैं कि नवयुवक इस दुनिया में वसुधा का यश फैलाने के लिए जहर का घूँट तक पी जाते हैं, मगर चेहरे पर कोई निराश भावना नहीं लाते। कहने का तात्पर्य यह है कि वे नवयुवक जो अपनी धरती को अपना तन–मन–धन सबकुछ अर्पण कर देते हैं, अर्थात् धरती के लिए कुर्बानी दे देते हैं, उनका हमेशा यशगान होता है।

Smart Notes ....

Smart Notes ....

खण्ड ख

व्यावहारिक व्याकरण

व्यावहारिक व्याकरण

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए-

(i) पार्क में एक सुन्दर बच्चा <u>खेल रहा है</u>। [1]

(ii) <u>सुबह-सुबह दौड़ना</u> अच्छा होता है। [1]

(ख) समास-विग्रह कर समास का नाम लिखिए- [1]

हवनसामग्री [CBSE 2011]

2. (क) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए-

(i) तुम्हारा <u>विद्यालय</u> कहाँ है? [1]

(ii) तुम्हें <u>तेजी से</u> चलना चाहिए। [1]

(iii) <u>तुम</u> कहाँ जा रहे हो? [1]

(ख) सन्धि-विच्छेद कीजिए- [1]

पुरूषोत्तम [CBSE 2011]

3. (क) रचना की दृष्टि से वाक्यों के प्रकार बताइए-

(i) वह बाजार गया क्योंकि उसे कुछ खरीदना था। [1]

(ii) जब वह वहाँ पहुँचा तब पुलिस ने उसको पकड़ लिया। [1]

(iii) तुम वहाँ जाओं और उसको लेकर आ जाओ। [1]

(ख) सन्धि कीजिए- [1]

प्राण + अन्तक [CBSE 2011]

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए- [CBSE 2011]

(i) क्या आप पढ़ लिए हैं? [1]

(ii) आशा है तुम सकुशलपूर्वक होगे। [1]

(iii) कौन मकान सजाए गए थे? [1]

5. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए- [CBSE 2011]

(क) तूती बोलना [1]

(ख) कफ़न सिर पर बाँधना [1]

(ग) न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी [1]

(घ) एक पंथ दो काज [1]

6. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए-

(i) <u>सामने वाले पार्क में</u> मैं रोज टहलता हूँ। [1]

(ii) <u>मेरे पड़ोस वाले</u> भाईसाहब आज जा रहे हैं। [1]

(ख) समास-विग्रह कर समास का नमा लिखिए- [1]

कांतिहीन

(ग) समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए- [1]

घोड़े की सवारी [CBSE 2012]

7. (क) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए-

(i) <u>तुम्हारा</u> घर कहाँ है? [1]

(ii) वह एक <u>बुद्धिमान</u> व्यक्ति है। [1]

(iii) हमें बड़ों को <u>सम्मान</u> देना चाहिए। [1]

(ख) सन्धि-विच्छेद कीजिए- [1]

पर्यावरण [CBSE 2012]

8. (क) रचना की दृष्टि से वाक्यों के प्रकार बताइए-

(i) जो धनवान है उन्हें उदार होना चाहिए। [1]

(ii) वे बाजार गए और पुस्तक लेकर आए। [1]

(iii) तुम ही हो जिनकी बात मैं सुन सकता हूँ। [1]

(ख) सन्धि कीजिए- [1]

यथा+उचित [CBSE 2012]

9. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए-

(i) घास पर चलना निषेध है। [1]

(ii) तुम सपरिवार सहित आना। [1]

(iii) तुम जैसा करोगे सो भरोगे। [1]

(ख) सन्धि-विच्छेद कीजिए- [1]

मदांध [CBSE 2012]

10. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए। [CBSE 2012]

(क) नमक हलाल होना [1]

(ख) लकीर का फ़कीर होना [1]

(ग) अधजल गगरी छलकत जाय [1]

(घ) चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात [1]

11. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए:

(i) <u>भोर में दिखाई देने वाला तारा</u> आज नहीं है। [1]

(ii) <u>किस्मत का मारा</u> वह जेल में मर गया। [1]

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए-

(i) <u>हम</u> अपने काम की ओर ध्यान नहीं देते। [1]

(ii) इस <u>देश</u> के वीरों ने प्रतिष्ठा के लिए प्राण न्यौछावर कर दिए। [1]

(iii) वे बहुत जल्दी <u>घबरा जाते हैं।</u> [1]

[CBSE 2013]

12. (क) रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार लिखिए-

सच बोलो लेकिन कड़वा सच मत बोलो। [1]

(ख) निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए-

(i) वे लोग आज सुबह की ट्रेन से आए और शाम को चले गए। (मिश्र वाक्य में) [1]

(ii) यह वही दुकान है। मैं यहीं से सब्जी खरीदता हूँ। (संयुक्त वाक्य) [1]

(ग) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए-

(i) हमारा उद्देश्य सफलता प्राप्ति होनी चाहिए। [1]

(ii) राष्ट्रपिता का देश सदा आभारी रहेगा। [1]

(iii) अध्यापक ने चिल्लाया। [1]

[CBSE 2013]

13. (क) निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए-

रामेश्वर, छात्रावास। [1]

(ख) निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए-

फल + अनुसार, सु + आगत। [1]

[CBSE 2013]

14. (क) निम्नलिखित का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए। [1]

नीलमणि।

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए- [1]

अनुभव से सिद्ध। [CBSE 2013]

15. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए [CBSE 2013]

(i) सुध-बुध खोना [1]

(ii) आवाज़ उठाना [1]

(iii) नाच न जाने आँगन टेढ़ा [1]

(iv) मुँह की खाना [1]

16. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए:

(i) <u>कमज़ोर नींव से</u> मकान कमज़ोर है। [1]

(ii) मैं तुमसे <u>पाँच साल बड़ा</u> हूँ और हमेशा रहूँगा। [1]

(ख) विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए: [1]

स्नेहहीन

(ग) समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए: [1]

आदेश के अनुसार [CBSE 2014]

17. (क) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए:

(i) उसे बहुत जल्दी <u>क्रोध</u> आता है। [1]

(ii) कहानी जीवन को अनुभव <u>देती है</u>। [1]

(iii) उसकी पढ़ाई <u>अच्छी</u> चल रही है। [1]

(ख) संधि विच्छेद कीजिए: [1]

भुवनेश [CBSE 2014]

18. (क) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: (1 × 3 = 3)

(i) सत्याग्रह-आंदोलन के दौरान उन्हें कारावास की सजा भोगनी पड़ी। (मिश्र वाक्य में बदलिए) [1]

(ii) कलकत्ता में इस दिन स्वतंत्रता-दिवस मनाने के लिए लोग बढ़-चढ़कर भाग ले रहे थे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए) [1]

(iii) उस पार्क में आज सभा होने वाली है और नेताओं के भाषण होने वाले हैं। (मिश्र वाक्य में बदलिए) [1]

(ख) संधि कीजिए: [1]

प्रतीक + आत्मक [CBSE 2014]

19. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए:

(i) तुम मेरे पड़ोसी हो मैं आपको भली-भाँति जानता हूँ। [1]

(ii) यह पद केवल मात्र महिलाओं के लिए आरक्षित है। [1]

(iii) कश्मीर में अनेक दर्शनीय स्थल देखने योग्य हैं। [1]

(ख) संधि विच्छेद कीजिए: [1]

स्वाधीन [CBSE 2014]

20. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए: [CBSE 2014]

(i) बाग़-बाग़ होना [1]

(ii) होश उड़ना [1]

(iii) चोर की दाढ़ी में तिनका [1]

(iv) नेकी कर दरिया में डाल [1]

21. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए:

(i) तुमने एकाएक <u>इतना मधुर</u> गाना क्यों छोड़ दिया? [1]

(ii) गाँव में हर वर्ष <u>पशु-पर्व का अयोजन</u> होता है। [1]

(ख) विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए: [1]

विश्वसंगठन

(ग) समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए: [1]

सुदंर हैं जो नयन [CBSE 2015]

22. (क) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए:

(i) मैदान में हज़ारों आदमियों की <u>भीड़</u> होने लगी। [1]

(ii) आंदोलनकारी शहर में प्रदर्शन <u>कर रहे थे।</u> [1]

(iii) वे <u>धीर-धीरे</u> सभास्थल की ओर बढ़ रहे थे। [1]

(ख) संधि विच्छेद कीजिए: [1]

पुष्पोद्यान [CBSE 2015]

23. (क) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए:

(i) जब क्रांतिकारी ने झंडा गाड़ा तब पुलिस ने उसे पकड़ लिया। (वाक्य-भेद लिखिए) [1]

(ii) आज झंड़ा फहराया जाएगा और प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। (मिश्र वाक्य में बदलिए) [1]

(iii) जब वे प्रतियोगिता में भाग लेने गए तो बाहर रोक लिए गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए) [1]

(ख) संधि कीजिए: [1]

धन + आगम [CBSE 2015]

24. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए:

(i) हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होनी चाहिए। [1]

(ii) केवल यहाँ दो पुस्तकें रखीं हैं। [1]

(iii) उसने आज घर में क्या करा? [1]

(ख) संधि विच्छेद कीजिए: [1]

अत्यधिक [CBSE 2015]

25. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए: [CBSE 2015]

(i) हाथ फैलाना [1]

(ii) राई का पर्वत करना [1]

(iii) जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराइ [1]

(iv) हाथ कंगन को आरसी क्या? [1]

26. शब्द और पद में क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाइए। [1 + 1 = 2] [CBSE 2016]

27. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: [1 × 3 = 3] [CBSE 2016]

(i) ज्यों ही वह पहुँचा वर्षा होने लगी।

(सरल वाक्य में बदलिए)

(ii) जब उसने भाषण शुरू किया तो तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत हुआ। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(iii) मैंने वहाँ एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति देखा।
(मिश्र वाक्य में बदलिए)

28. (क) निम्नलिखित का विग्रह करके समास का नाम लिखिएः
ऋणमुक्त, चन्द्रखिलौना [1 + 1 = 2]

(ख) निम्नलिखित का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिएः
धन और दौलत, राष्ट्र की संपत्ति [1 + 1 = 2]
[CBSE 2016]

29. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिएः
[CBSE 2016]

(क) वह लोग कहाँ के रहने वाले हैं? [1]

(ख) कृपया मेरी बात सुनने की कृपा करें। [1]

(ग) हमने उन्हें आज भोजन पर बुलाए हैं। [1]

(घ) शिक्षक ने उसकी खूब प्रशंसा करी। [1]

30. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाएः
[1 × 2 = 2] [CBSE 2016]
छक्के छुड़ाना, आँखें खुल जाना

31. शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित शब्द और पद को समझाए। [1 + 1 = 2] [CBSE 2017]

32. निर्देशानुसार वाक्य रूपांतरण कीजिए-
[1 × 3 = 3] [CBSE 2017]

(i) वह फल खरीदने बाजार गया। वहां से फल लेकर आ गया। (संयुक्त वाक्य में)

(ii) चाय पीने की यह विधि है। जापानी में उसे चा-नो-यू कहते हैं। (मिश्र वाक्य में)

(iii) भारतीय सैनिक ऐसे हैं कि कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता। (सरल वाक्य में)

33. (क) निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए- [CBSE 2017]

(i) नीलकमल [1]

(ii) घुड़साल [1]

(ख) निम्नलिखित शब्दों को समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए-

(i) नया जो आभूषण [1]

(ii) गगन में विचरण करने वाला [1]

34. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए-
[CBSE 2017]

(i) सावित्री सत्यवान की पत्नी रहीं। [1]

(ii) प्रधानाचार्य छात्र को बुलाए। [1]

(iii) वह अनुत्तीर्ण होकर परीक्षा में फेल हो गया। [1]

(iv) मोहन ने सोया। [1]

35. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो- [1]
मुठभेड़ होना, एक-एक शब्द को चाट जाना।
[CBSE 2017]

36. शब्द पद कब बन जाता है? उदाहरण देकर तर्कसंगत उत्तर दीजिए। [CBSE 2018] [1 + 1 = 2]

37. नीचे लिखे वाक्यों का निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिएः
[CBSE 2018] [1 × 3 = 3]

(क) जापान में चाय पीने की एक विधि है जिसे 'चा-नो-यू' कहते हैं। (सरल वाक्य में)

(ख) तताँरा को देखते ही वामीरो फूट-फूट कर रोने लगी। (मिश्र वाक्य में)

(ग) तताँरा की व्याकुल आँखें वामीरो को ढूँढ़ने में व्यस्त थीं। (संयुक्त वाक्य में)

38. (क) निम्नलिखित शब्दों का सामासिक पद बनाकर समास के भेद का नाम भी लिखिएः
जन का आंदोलन, नीला है जो कमल [2]

(ख) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास के भेद का नाम लिखिएः [2]
नवनिधि, यथासमय [CBSE 2018]

39. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए -
[1 × 4 = 4]

(क) वह गुनगुने गर्म पानी से स्नान करता है।

(ख) माताजी बाज़ार गए हैं।

(ग) अपराधी को मृत्युदंड की सजा मिलनी चाहिए।

(घ) मैं मेरा काम कर लूँगा। [CBSE 2018]

40. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाएः
मौत सिर पर होना, चेहरा मुरझा जाना
[CBSE 2018] [1 + 1 = 2]

उत्तर माला

1. (क) (i) क्रिया पदबन्ध
(ii) क्रिया विशेषण पदबन्ध

(ख) हवन के लिए सामग्री - तत्पुरुष समास

2. (क) (i) विद्यालय- जातिवाचक संज्ञा, एकवचन पुल्लिंग

(ii) तेजी से- गुणवाचक विशेषण, एकवचन

(iii) तुम- पुरूषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग

(ख) पुरूष + उत्तम - पुरुषोत्तम

3. (क) वाक्यों के प्रकार

(i) मिश्र वाक्य

(ii) मिश्र वाक्य

(iii) संयुक्त वाक्य

(ख) प्राणान्तक

4. (i) क्या आपने पढ़ लिया।

(ii) आशा है तुम कुशलपूर्वक होगे।

(iii) कौन से मकान सजाए गए थे।

5. (क) हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की तो पूरे विश्व में तूती बोलती है।

(ख) देश से आतंकवादियों को जड़ से खत्म करने के लिए सेना ने सिर पर कफन बाँध लिया है।

(ग) सारा दिन टी.वी. पर कार्टून देखते रहते हो, पढ़ाई का नामो निशान है ही नहीं। अब मैं घर से टी.वी. ही हटा देती हूँ तब जा कर तुम पढ़ाई करोगे। सही ही कहा है न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

(घ) मैं कल गई तो थी इंटरव्यू देने, लेकिन साथ ही मैं अपनी दोस्त से भी मिल आई। सच ही साबित हुआ - एक पंथ दो काज।

6. (क) (i) संज्ञा पदबन्ध

(ii) विशेषण पदबन्ध

(ख) कांतिहीन- कांति से हीन - तत्पुरुष समास

(ग) घोड़े की सवारी - घुड़सवार - तत्पुरुष समास

7. (क) (i) तुम्हारा - पुरुषवाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग

(ii) बुद्धिमान - भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन

(iii) सम्मान - भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लि

(ख) परि + आवरण - पर्यावरण

8. (क) (i) मिश्रवाक्य

(ii) संयुक्त वाक्य

(iii) मिश्रवाक्य

(ख) परि + आवरण - पर्यावरण

9. (क) (i) घास पर चलना मना है।

(ii) तुम सपरिवार आना।

(iii) तुम जैसा करोगे वैसा भरोगे।

(ख) मद + अन्ध

10. (क) आज की दुनिया में नमक हलाल सेवक बहुत कम मिलते हैं।

(ख) आप कितना ही शाम को समझा दो, लेकिन वह हमेशा लकीर का फ़कीर ही बना रहेगा।

(ग) राजू है तो आठवीं फेल, लेकिन बनता बहुत पढ़ा-लिखा है। सच ही कहा है- अधजल गगरी छलकत जाय।

(घ) इस तरह से घमण्ड न करो, बस थोड़े ही समय के बाद फिर से अपनी जगह पर आ जाओगे सच ही कहा है- चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

11. (क) (i) संज्ञा पदबंध

(ii) सर्वनाम पदबंध

(ख) (i) <u>हम</u> - पुरूषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरूष, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

(ii) <u>देश</u> - जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग

(iii) <u>घबरा जाते हैं</u>- अकमर्क क्रिया, बहुवचन, वर्तमानकाल, पुल्लिंग।

12. (क) सयुंक्त वाक्य

(ख) (i) वे लोग आज सुबह की ट्रेन से जैसे आए, शाम को चले गए।

(ii) यह सब्जी की दुकान है और मैं यहीं से सब्जी खरीदता हूँ।

(ग) (i) सफलता प्राप्ति हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

(ii) देश सदा राष्ट्रपिता का आभारी रहेगा।

(iii) अध्यापक चिल्लाया।

13. (क) राम + ईश्वर,

छात्र + आवास

(ख) फलानुसार, स्वागत

14. (क) नीलमणि - नीली है जो मणि - कर्मधारय समास

(ख) अनुभवसिद्ध - तत्पुरूष समास

15. (i) **सुध-बुध खोना-** शाहरूख खान की फिल्म देख कर मैं अपनी सुध-बुध खो बैठी।

(ii) **आवाज़ उठाना-** हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ एकजुट होकर आवाज़ उठानी चाहिए।

(iii) **नाच न जाने आँगन टेढ़ा-** तुम्हें लड्डू बनाने तो आते नहीं और कहते हो कि बूंदी ठीक नहीं है।

(iv) **मुँह की खाना–** पाकिस्तान को 1972 के युद्ध में मुँह की खानी पड़ी थी।

16. (क) (i) विशेषण पदबंध

(ii) संख्यावाची विशेषण

(ख) स्नेहहीन – स्नेह से हीन – तत्पुरूष समास

(ग) आदेशानुसार – यथा आदेश – अव्ययीभाव समास

17. (क) (i) क्रोध – भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन

(ii) देती है – अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, स्त्रीलिंग

(iii) अच्छी – भाववाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग , एकवचन

(ख) भुवन + ईश

18. (क) (i) सत्याग्रह आंदोलन जैसे ही शुरू हुआ उन्हें कारवास की सजा भोगनी पड़ी।

(ii) कलकत्ता में इस दिन स्वतंत्रता दिवस मनाया गया और लोगों ने इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

(iii) उस पार्क में जो सभा होने वाली है उसमें नेताओं के भाषण भी होंगे।

(ख) प्रतीकात्मक

19. (क) (i) आप मेरे पड़ोसी हो यह मैं भली-भाँति जानता हूँ।

(ii) यह पद केवल महिलाओं के लिए आरक्षित है।

(iii) कश्मीर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं।

(ख) स्व + आधीन

20. (i) कश्मीर जाने की बात सुनकर मेरा मन बाग़-बाग़ हो गया।

(ii) जब मैं घर पहुँची और घर का ताला टूटा देखा तो यह देखकर मेरे होश उड़ गए।

(iii) मैंने जब राम से पूछा कि क्या तुमने मेरी कॉपी चुराई है तो यह सुनकर चिराग भागने लगा। यह देखकर मैंने जब उससे पूछा कि उसने चुराई तो उसने हामी में जबाव दिया। यह सच ही है कि "चोर की दाढ़ी में तिनका"।

(iv) हमें अपने कर्म करते रहने चाहिए, कभी फल की उम्मीद नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह कहावत प्रसिद्ध है कि 'नेकी कर दरिया में डाल'।

21. (क) (i) विशेषण पदबंध

(ii) संज्ञा पदबंध

(ख) विश्व में संगठन- तत्पुरूष समास

(ग) सुनयन- कर्मधारय

22. (क) (i) भीड़- समूहवाचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन

(ii) कर रहे थे- भूतकाल, अकर्मक क्रिया, बहुवचन

(iii) धीरे-धीरे – क्रिया विशेषण

(ख) पुष्प + उद्यान – पुष्पोद्यान

23. (क) (i) मिश्र वाक्य

(ii) आज जब झंडा फहराया जाएगा तब प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

(iii) वे प्रतियोगिता में भाग लेने गए और उन्हें बाहर रोक दिया गया।

(ख) धनागम

24. (क) (i) हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होना चाहिए।

(ii) यहाँ केवल दो पुस्तकें रखी हैं।

(iii) उसने आज घर में क्या किया?

(ख) अति + अधिक

25. (i) हमें कभी भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाने चाहिए।

(ii) सीमा छोटी सी बात को इतना बड़ा कर देती है कि लगता है राई का पर्वत बना रही हो।

(iii) अरे नरेश! नगर में रहकर गाँव के बारे में सम्पूर्ण जानकारी नहीं ली जा सकती। तुम यह नहीं जानते कि-जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई।

(iv) तुम कह रहे हो कि इस घर के चार दरवाजे हैं, मैं कह रही हूँ कि पाँच दरवाजे हैं। चलो, वहीं चलकर देख लेते हैं, हाथ कंगन को आरसी क्या।

26. शब्द – जब कोई शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है तो वह पद कहलाता है।

जैसे-कमल पानी में खिलता है।

27. (i) उसके वहाँ पहुँचते ही वर्षा होने लगी।

(ii) उसने भाषण शुरू किया और तालियों की गड़गड़ाहट से उसका स्वागत हुआ।

(iii) जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा, मैंने एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति देखा।

28. (क) ऋणमुक्त – क्षण से मुक्त – तत्पुरूष

चन्द्रखिलौना – चंद्र जैसा खिलौना है जो – कर्मधारय समास

(ख) धन और दौलत – धन-दौलत – द्वन्द्व समास

राष्ट्र की संपति – राष्ट्र संपति-तत्पुरूष समास

29. (क) ये लोग कहाँ के रहने वाले हैं?

(ख) कृपया मेरी बात सुनें।

(ग) हमने उन्हें आज भोजन पर बुलाया।

(घ) शिक्षक ने उसकी खूब प्रशंसा की।

30. छक्के छुड़ा देना

1983 के विश्वकप में भारतीय क्रिकेट टीम ने वेस्ट इंडीज की टीम के छक्के छुड़ा दिये।

आँखे खुल जाना

मेरे पिताजी ने मुझे परीक्षा की तैयारी करने के लिए बहुत बोला था, लेकिन मैंने उनकी बातें नहीं मानी, जब परीक्षा का नतीजा निकला तो जाकर मेरी आँखें खुल गई।

31. शब्द भाषा की सबसे छोटी इकाई को शब्द कहते हैं।

जैसे-कमल, रात, बरसात।

पद - शब्दों के समूह को पद कहते हैं।

जैसे-कमल के फूल तालाब में खिलते हैं।

32. (i) वह फल खरीदने बाजार गया और वहाँ से फल लेकर आ गया।

(ii) चाय पीने की एक ऐसी विधि जिसे जापानी में चा-नो-यू कहते हैं।

(iii) भारतीय सैनिकों की कोई बराबरी नहीं कर सकता।

33. (क) (i) नीलकमल - नीला है जो कमल - कर्मधारय समास

(ii) घुड़साल - घोड़े की साल - तत्पुरूष समास

(ख) (i) नवभूषण - कर्मधारय

(ii) नभचर - कर्मधारय

34. (i) सावित्री सत्यवान की पत्नी थी।

(ii) प्रधानाचार्य ने छात्र को बुलाया।

(iii) वह परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो गया।

(iv) मोहन सो गया।

35. कल रात पुलिस तथा डकैतों में मुठभेड़ हो गई थी।

कल की परीक्षा के लिए नकुल ने किताब का एक-एक शब्द चाट लिया है।

36. जैसे-

शब्द - कमल, रात, बरसात

पद - कमल पानी में खिलता है।

37. (1) जापान में चाय पीने की विधि को चा-नो-यू कहते हैं।

(2) वामीरो ने तताँरा को जैसे ही देखा, फूट-फूट कर रोने लगी।

(3) तताँरा की आँखें व्याकुल थीं और वामीरो को ढूँढने में व्यस्त थीं।

38. (क) (1) जनांदोलन - तत्पुरूष समास

(2) नीलकमल - कर्मधारय समास

(ख) (1) नव निधि - नयी है जो निधि - कर्मधारय

(2) यथासमय - समय के अनुसार - अव्ययीभाव

39. (1) वह गुनगुने पानी से स्नान करता है।

(2) माताजी बाजार गई हैं।

(3) अपराधी को मृत्यु दंड मिलना चाहिए।

(4) मैं अपना काम स्वयं कर लूँगा।

40. (1) ट्रेन/रेलवे ट्रैक पर मोबाइल पर बातें करते हुए चलना ऐसे है, मानों मौत सर पर खेल रही हो।

(2) लगता है तुमने सुबह से कुछ खाया नहीं है तभी तो तुम्हारा चेहरा मुरझा गया है।

Smart Notes ....

खण्ड ग

पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक स्पर्श

गद्य खण्ड

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः [CBSE 2018]

'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर पर्वत के रूप-स्वरूप का चित्रण कीजिए।[2]

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- [CBSE 2011] [5]

सोहत ओढ़ैं पीत पटु स्याम सलौने गात।
मनी नीलमणि-सैल पर आतपु पर्‌यौ प्रभात।।
जपुमाला, छापैं, तिलक सरे न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचे बृथा, साँचे राँचै रामु।।

(i) दोहे में किसके सौन्दर्या का चित्रण है-
(क) नीलमणि शैल (ख) प्रभात की धूप
(ग) राधाजी (घ) श्रीकृष्ण

(ii) नीलम के पर्वत से श्रीकृष्ण की तुलना क्यों की गई है?
(क) विशालता और महानता के कारण।
(ख) सुबह की धूप पड़ने के कारण।
(ग) रंग और दीप्ति के कारण।
(घ) स्याम सलौने होने के कारण।

(iii) सुबह की धूप की कल्पना का आधार है-
(क) प्रातः काल का सौन्दर्य।
(ख) पीले दुपट्टे की चमक।
(ग) नीलम के पर्वत का सौन्दर्य।
(घ) श्रीकृष्ण के चेहरे की दमक।

(iv) ईश्वर को वही प्रिय है जो-
(क) तपस्या करता है।
(ख) सत्यनिष्ठ है।
(ग) भक्ति करता है।
(घ) माला जपता है।

(v) 'जपु-माला, छापैं, तिलक' हैं-
(क) हिंदू होने की पहचान।
(ख) धर्म के बाहरी चिह्न।
(ग) निरर्थक लक्षण।
(घ) कच्चे मन का सहारा।

3. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए। [CBSE 2011]

बिहारी के दोहों में लोकव्यवहार और नीतिज्ञान आदि की बातें भी मिलती हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। [3]

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः

[CBSE 2013] [5]

कहलाने एकत बसत अहि, मयूर, मृग, बाघ।

जगतु तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ निदाघ।।

(i) प्रस्तुत दोहे में किन प्राणियों में आपसी बैर बताया गया है?

(क) मानव और दानव में, आतंकी और उपद्रवी में

(ख) सिंह और चुहे में, कौआ और कोयल में

(ग) साँप और मोर में, हिरण और बाघ में

(घ) तोता और चिड़ीमार में, तैराक और मछली में

(ii) ये प्राणी आपसी बैर कब भूल जाते हैं?

(क) आपत्ति आने में

(ख) एक जगह रहने पर

(ग) ग्रीष्म की अत्यधिक गर्मी होने पर

(घ) भोजन न मिलने पर

(iii) कवि ने ग्रीष्म ऋतु की तुलना किससे की है?

(क) पेट की आग से

(ख) तपोवन से

(ग) दावानल से

(घ) सूरज से

(iv) 'दीरघ-दाघ निदाघ' का अर्थ है-

(क) गर्मी के लंबे दिन

(ख) सूरज की गर्मी वाला आसमान

(ग) लंबी और तपाने वाली रातें

(घ) ग्रीष्म ऋतु की तेज गर्मी

(v) पद्यांश में 'एकत' शब्द का तत्सम रूप है-

(क) एकता (ख) एकल

(ग) एकत्र (घ) एकांत

5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।

[CBSE 2014]

गोपियों द्वारा श्री कृष्ण की बाँसुरी छिपाए जाने में क्या रहस्य है? 'दोहे' कविता के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए। [3]

6. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।

[CBSE 2016]

बिहारी ने जगत को तपोवन क्यों कहा है और इससे क्या संदेश देना चाहा है? [2]

7. बिहारी के दोहों की रचना मुख्यतः किन भावों पर आधारित है? उनके मुख्य ग्रन्थ और भाषा के नाम का उल्लेख करो। [CBSE 2017] [2]

8. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः [CBSE 2018]

बिहारी में 'जगतु तपोवन सौ कियौ' क्यों कहा है? [1]

9. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए- [CBSE 2011] [5]

चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,

विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।

घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,

अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तेरे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(i) अभीष्ट मार्ग से क्या तात्पर्य है?

(क) अपनी इच्छा का मार्ग।

(ख) रुचि, योग्यता के अनुसासर मार्ग।

(ग) पूर्वजों द्वारा अपनाया मार्ग।

(घ) दूसरों द्वारा बताया मार्ग।

(ii) विघ्न-बाधा आने पर क्या करना चाहिए।

(क) ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।

(ख) बाधा को दूर करना चाहिए।

(ग) डटकर मुकाबला करना चाहिए।

(घ) सहर्ष खेलना चाहिए।

(iii) कवि के अनुसार सच्चा मानव कौन है?

(क) जो दूसरों पर प्राण न्योछावर करे।

(ख) जो अभीष्ट मार्ग में बढ़ता रहे।

(ग) जो विपत्ति-बाधाओं की चिंता न करे।

(घ) जो औरों को तारता हुआ स्वयं तरे।

(iv) समर्थ भाव क्या है?

(क) दूसरों को मारकर स्वयं जीवित रहना।

(ख) दूसरों की निन्दा कर स्वयं की प्रशंसा करना।

(ग) दूसरों को सफलता दिलाकर स्वयं सफलता पाना।

(घ) दूसरों को पछाड़कर स्वयं आगे बढ़ना।

(v) कवि परस्पर मेलजोल बढ़ाने का परामर्श क्यों देता है?

(क) प्रेम से रहने के लिए।

(ख) भेदभाव न बढ़ने देने के लिए।

(ग) एक ही मार्ग से आगे बढ़ने के लिए।

(घ) समर्थ भाव बढ़ाने के लिए।

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिएः

[CBSE 2013] [5]

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(i) 'मर्त्य' किसे कहते हैं?

(क) यमराज (ख) असुर

(ग) मरणशील (घ) सुर

(ii) मृत्यु की सार्थकता है-

(क) देशहित में

(ख) कीर्ति के प्रसार में

(ग) बलिवेदी पर चढ़ने में

(घ) सबके याद करने में

(iii) कवि ने किसे पशु के समान नहीं माना है?

(क) जो केवल अपनी भलाई सोचता है

(ख) जो दूसरों की निंदा करता है

(ग) जो दूसरों से ईर्ष्या करता है

(घ) जो दूसरों के काम आता है

(iv) 'आप आप ही चरे' का आशय है-

(क) स्वार्थ-सिद्धि

(ख) परार्थ सिद्धि

(ग) संकुचित विचार रखना

(घ) उदार होना

(v) प्रस्तुत काव्यांश से क्या संदेश मिलता है?

(क) हमेशा अपने स्वार्थ में लगा रहना चाहिए

(ख) मानव मात्र की भलाई करनी चाहिए

(ग) दूसरों के खातिर मर जाना चाहिए

(घ) जानवर की तरह जीना चाहिए

11. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः

[CBSE 2014]

'मनुष्यता' कविता के आधार पर किंही तीन मानवीय गुणों के बारे में लिखिए। [3]

12. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः

[CBSE 2014]

'मनुष्यता' कविता के आधार पर किंही तीन मानवीय गुणों के बारे में लिखिए। [3]

13. 'मनुष्यता' कविता में कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा गया है और क्यों? [CBSE 2017] [2]

14. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [CBSE 2011]

(क) अपने प्रियतम को प्राप्त करने के लिए जो दीप जलाया गया है, उसकी क्या विशेषताएँ हैं? 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता के आधार पर लिखिए। [3]

(ख) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री का स्नेहहीन दीपक से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए। [3]

15. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2013]

(क) "मधुर-मधुर मेरे दीपक जल" कविता में कवयित्री ने दीपक से किस बात का आग्रह किया है और क्यों? [3]

(ख) महादेवी वर्मा ने अपनी कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' को किसका प्रतीक माना है और आकाश के चमकते तारो को स्नेहहीन क्यों कहा है? [3]

16. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2014] [5]

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण
विश्व-शलभ सिर धुन कहता मैं
हाय! न जल पाया तुझमें मिल,
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल!

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत् ले घिरता है बादल
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल!

(i) पतंगे को पश्चात्ताप है कि वह
(क) दिये का प्रकाश न पा सका
(ख) दीपक से एकाकार न हो सका
(ग) दीपक के स्नेह से वंचित रहा
(घ) ज्वाला-कण न बन सका

(ii) स्नेहहीन दीपक किन्हें कहा गया है?
(क) टिमटिमाते तारों को
(ख) चमकते जुगनुओं को
(ग) तेलरहित दीपकों को
(घ) जगमगाते चाँद को

(iii) किस पंक्ति के कथन में विरोध दिखाई पड़ता है?
(क) सारे शीतल कोमल नूतन
(ख) हाय! न जल पाया तुझसें मिल
(ग) स्नेहहीन नित कितने दीपक
(घ) जलमय सागर का उर जलता

(iv) सागर का हृदय क्यों जलता है?
(क) घिरते बादलो को देखकर
(ख) तारों को चमकता देखकर
(ग) बादलों मे बिजली की कौंध देखकर
(घ) विहँसते दीपक को देखकर

(v) पद्यांश में बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?
(क) असंख्य तारे छिप जाते हैं
(ख) वह अनंत सीमा वाला है
(ग) गर्जन करता है पर बरसता नहीं
(घ) बिजली का प्रकाश लेकर धिरता है

17. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः [CBSE 2015]

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने दीपक से मोम की तरह घुलने के लिए क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए कि उस घुलने में उसका कौन-सा भाव छिपा है। [3]

18. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः [CBSE 2016]

'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' में दीपक से ज्वाला-कण कौन माँग रहा है और क्यों? [2]

19. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः [CBSE 2018]

महादेवी वर्मा की कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' किनके प्रतीक हैं? [2]

20. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः [CBSE 2011]

'कर चले हम फिदा' कविता में 'साथियों' सम्बोधन किनके लिए किया गया है औ उनसे क्या अपेक्षा की गई है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। [3]

21. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए। [CBSE 2013]

'कर चले फिदा' कविता में कवि ने 'साथियों' संबोधन किसके लिए किया है और किस काफिले का आगे बढ़ाते रहने को कहा है? [3]

22. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2014] [5]

राह कुर्बनियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफिलें
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
जिंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियों
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों।

(i) 'राह कुर्बनियों की न वीरान हो'- का क्या तात्पर्य है?
(क) सैनिक सोच-समझकर आगे बढ़ें
(ख) सैनिक देश के बारे में सोचते रहें
(ग) बलिदानी सैनिकों की परंपरा बनी रहे
(घ) बलिदानी सैनिक आगे बढ़ने की सोच में रहे

(ii) सैनिक किसे सजाने के लिए कहते हैं?
(क) देश की कुर्बानियों को
(ख) जश्न मनाने वालों को
(ग) भारतमाता को
(घ) बलिदानी सैनिकों के जत्थों को

(iii) 'फ़तह का जश्न' से तात्पर्य है

(क) आगे बढ़ने की खुशियाँ

(ख) मृत्यु की खुशी

(ग) जीते जाने की खुशियाँ

(घ) जीत की खुशियाँ

(iv) 'सिर पर कफ़न बाँधने' का किस ओर संकेत है?

(क) सिर बचाने की ओर

(ख) देश पर बलिदान की ओर

(ग) सिर पर मुकुट बाँधने की ओर

(घ) जीवित रहने की ओर

(v) 'काफ़िले' शब्द का अर्थ है

(क) कायरों का गिरोह

(ख) वीरों का समुदाय

(ग) बलिदानियों का झुंड

(घ) यात्रियों का समूह

23. 'कर चले हम फ़िदा' कविता में किस प्रकार की मृत्यु को अच्छा कहा गया है और क्यों? इससे कवि क्या संदेश देना चाहता है? [CBSE 2016] [5]

24. 'कर चले हम फिदा' कविता में धरती को दुलहन क्यों कहा गया है? [CBSE 2017] [2]

25. 'कर चले हम फिदा' अथवा 'मनुष्यता' कविता को प्रतिपाद्य लगभग 100 शब्दों में लिखिए। [CBSE 2018] [5]

26. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।

[CBSE 2013]

आत्मत्राण कविता में कवि ने क्या संदेश दिया है? [3]

27. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।

[CBSE 2014]

'आत्मत्राण' कविता की पंक्ति 'तव मुख पहचानू. छिन-छिन में' का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए। [3]

25. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।

[CBSE 2016]

'आत्मत्राण' कविता में कवि किससे और क्या प्रार्थना करता है? [1]

29. 'आत्मश्राण' शीर्षक का अर्थ बताते हुए उसकी सार्थकता, कविता के संदर्भ में स्पष्ट करो- [CBSE 2017] [5]

उत्तर माला

1. प्रस्तुत कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' के आधार पर कवि ने पर्वत को मंडलाकार, बहुत विशाल कहा है तथा उस पर फूल रूपी हजारों आँखें अपनी परछाईं को तालाब में निहार रही है। पर्वत की विशालता इस बात से पता चलती है कि उसे निहारने के लिए दो जोड़ी आँखें काफी नहीं है बल्कि हजारों आँखें पर्वत की विशालता को निहारने के लिए उपयुक्त है।

2. (i) घ

(ii) क

(iii) घ

(iv) ख

(v) ख

3. यह सत्य है कि बिहारी के दोहों में लोकव्यवहार तथा विज्ञान की बातें मिलती है जैसे- बार-बार राम का नाम जपने से परमात्मा प्राप्त नहीं होते, यदि सच्चे मन से प्रार्थना की जाए तो वह ज़्यादा सफल होती है।

4. (i) ग - साँप और मोर, हिरण और बाघ में

(ii) ग - ग्रीष्म की अत्यधिक गर्मी होने पर

(iii) ख - तपोवन

(iv) क - गर्मी के लंबे दिन

(v) क - एकता

5. गोपियाँ द्वारा कृष्ण की मुरली छुपाए जाने में यह रहस्य है कि वे कृष्ण से बाते कर सके। गोपियाँ कृष्ण से बात करना चाहती थी इसीलिए उन्होंने कृष्ण की मुरली छुपाकर रख दी। जब वे ढूंढ़ते हुए मुरली माँगते हैं तो गोपी उसके पास मुरली नही है यह बात सौगंध खाकर कहती है लेकिन उसकी कुटिल मुस्कान बता देती है कि मुरली उसी के पास है। जब कृष्ण फिर माँगते हैं तो देने से मना कर देती है। इस प्रकार गोपियाँ कृष्ण से बात करने का आनंद उठाती है।

6. बिहारी ने जगत को तपोवन इसलिए कहा है क्योंकि इतनी भयंकर गर्मी पड़ रही है कि सारा संसार ही इस प्रचंड गर्मी से जल रहा है। इस गर्मी के कारण जन्मजात शत्रुता भूलकर साँप-मोर, मृग-बाघ एक जगह ऐसे बैठे हैं जैस तपोवन में तपस्वी एक साथ मिलकर तपस्या करते हैं।

इसमें कवि हमें यह संदेश देना चाहते हैं कि मुसीबत के समय हमें आपसी शत्रुता भूलकर एकजुट हो जाना चाहिए।

7. बिहारी के दोहों की रचना खासतौर पर प्रेम, भक्ति आडम्बर इत्यादि पर आधारित है। उनका मुख्य ग्रन्थ 'बिहारी सतसई है,

जिनकी भाषा - मानक ब्रज है।

8. जिस प्रकार तपोवन में सभी तपस्वी आपसी प्रेम और सद्भाव से रहते हैं वैसे ही प्रचंड गर्मी से बचने के लिए सभी प्रकार के जीव-जन्तु आपसी दुश्मनी भुलाकर प्रेम व सद्भाव से रहते हैं।

इस प्रकार कवि मानव को इसी प्रेम एवं सद्भाव का संदेश देते हैं ताकि वो विपरीत परिस्थितियों में भी आपसी सद्भाव एवं भाईचारे को बनाये रखें।

9. (i) क - अपनी इच्छा का मार्ग।

(ii) ख - बाधा को दूर करना चाहिए।

(iii) घ - जो औरों को तारता हुआ स्वयं तरे।

(iv) ग - दूसरों को सफलता दिलाकर स्वयं सफलता पाना।

(v) ग - एक ही मार्ग से आगे बढ़ने के लिए।

10. (i) ग - 'मरणशील'

(ii) घ - सबके भाव करने पर

(iii) घ - जो दूसरों के काम आता है

(iv) क - स्वार्थ-सिद्धि

(v) ग - दूसरों के खातिर मर जाना चाहिए।

11. मनुष्यता कविता में कई मानवीय गुणों की बात क गई है। प्रथम हमें परोपकार का जीवन जीना चाहिए जैसे रंतिदेव, महर्षि दधीचि, कर्ण आदि लोगों ने किया। इन सभी महापुरुषों ने दूसरों के हित के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिए यहाँ तक की अपने प्राण भी। दूसरा हमें कभी अंहकार नहीं करना चाहिए क्योंकि ईश्वर सबके साथ होता है। तीसरा हमें पशुओं की तरह जीवन नहीं जीना चाहिए क्योंकि पशुओं की तरह जीने-मरने से संसार में जन्म लेने का कोई अर्थ नहीं। मनुष्य जीवन ऐसा जियो की मरने पर आपकी मृत्यु सुमृत्यु में बदल जाए।

12. इस कविता के द्वारा कवि ने मनुष्यता के तीन मानवीय गुण ये बताएँ है- उदारता, त्याग की भावना तथा करूणा भाव। सच्ची मानवता तो वह है कि जब हम पूरी मानव जाति का भला सोचे। साथ ही बिना किसी भेद भाव के मानवता की रक्षा करे। वही मनुष्य उदार होता है जो अपना वर्चस्व बलिदान कर देता है। वह केवल अपने बारे में ही नहीं सोचता, बल्कि पूरी दुनिया के बारे में सोचता है।

13. 'मनुष्यता' कविता में उस मृत्यु को सुमृत्यु कहा गया है, जब हम दूसरों को बचाने के लिए अपनी जान न्योछावर कर देते है। तब हमारा जीवन तथा मृत्यु दोनों सफल हो जाते हैं।

14. (क) जिस प्रकार दीपक जलने पर पतंगा उसके साथ जल जाता है, तथा उसी में समा जाना चाहता है, उसी प्रकार प्रियतम को पाने के लिए मीरा जी खुद को किसी भी सीमा तक जाने को तैयार रहती है।

(ख) यहाँ स्नेहहीन दीपक से मतलब तारो का है। क्योंकि वे संसार को कोई लाभ नहीं पहुँचा पाते।

15. (क) इस कविता में इस बात का आग्रह किया जा रहा है कि वह हर पल, हर दिन जलता रहे। यहाँ जलने से अभिप्राय हम अपने कर्मों से ले सकते हैं। क्योंकि किसी भी व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन कर्म करना पड़ता है। क्योंकि कोई भी काम एक दिन में तो होता नहीं, बल्कि सालों लग जाते हैं।

(ख) इस कविता में 'दीपक' तथा 'प्रियतम' का प्रतीक- स्वयं कवियत्री तथा ऐसा लक्ष्य जिस तक हर व्यक्ति पहुँचना चाहता है। आकाश के तारों को स्नेहहीन इसलिए कहा है क्योंकि उनके पास खुद की रोशनी तो है नहीं, साथ ही वह दुनिया के किसी काम के भी नहीं है। इनसे किसी का कोई भला तो होने वाला नहीं है। इसलिए ये तारे स्नेहहीन है।

16. (i) ख - दीपक से एकाकार न हो सका

(ii) क - टिमटिमाते तारों को

(iii) घ - जलमय सागर का उर जलता

(iv) ग - बादलों में बिजली की कौंध देखकर

(v) घ - बिजली का प्रकाश लेकर घिरता है

17. कवयित्री अपने दीपक से मोम की तरह पिघलने के लिए कहती है ताकि वह अपनी कोमल भावनाओं को प्रभु के चरणों में समर्पित कर दे। इस तरह घुलने में कवियत्री का भाव यह है कि वह अपने जीवन का एक-एक कण प्रभु के चरणों में समर्पित करना चाहती है। वह इस तरह जल-जल कर प्रसन्न होना चाहती है।

18. 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' में दीपक के ज्वाला-कण सारे शीतल, कोमल और नूतन पदार्थ ज्वाला-कण माँग रहे हैं। ये ज्वाला-कण इसलिए माँग रहे है। ताकि ये भी दीपक की तरह जागरूक होकर जल सकें और दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत बन सकें।

19. कवयित्री ने प्रस्तुत कविता 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' में 'दीपक' को प्रभु आस्था का प्रतीक माना है जो कवयित्री के हृदय में ज्वलित है तथा कवयित्री ने 'प्रियतम' का सीधा संबंध उनको प्रिय लगने वाले व्यक्ति या उसके स्वामी को बताया है।

20. कवि ने 'साथियों का सम्बोधन अपने देश के लोगों के लिए किया है। उन सभी से यह अपेक्षा की गई है वे सैनिकों द्वारा शुरू की गई लड़ाई को जारी रखें, हमेशा आगे बढ़ते रहें।

21. कवि ने 'साथियों' का संबोधन का इस्तेमाल- देशवासियों के लिए किया है। साथ ही यह भी कहा है कि जब हमारे सैनिक कुर्बान होते हैं तो उनकी जगह पर कभी खतम न होने वाला सैनिकों का काफिला होना चाहिए। यह काफिला हमेशा आगे ही बढ़ते रहना चाहिए।

22. (i) ग - बलिदानी सैनिकों की परंपरा बनी रहे

(ii) घ - बलिदानी सैनिकों के जत्थों को

(iii) ख - मृत्यु की खुशी

(iv) ख - देश पर बलिदान होने की ओर

(v) ग - बलिदानियों का झुडं

23. 'कर चले हम फिदा' कविता में देश पर बलिदान होने को (मृत्यु को) अच्छा कहा गया है क्योंकि देश पर मरने वाला हमेशा याद किया जाता है। देश की सुरक्षा में अपने प्राणों की आहूति देकर देश की आन-बान और शान को बनाए रखता है, देश पर बलिदान होना उसकी जवानी को सार्थक करता है। वह देशवासियों के लिए राष्ट्र के लिए शहीद होने का प्रेरणास्रोत बनता है। देश जवान के इस बलिदान को न भूलता हैं न व्यर्थ जाने देता हैं। इसलिए उसकी मृत्यु को अच्छा कहा गया है। इससे कवि हमें देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम तथा देश पर कुर्बान होने का संदेश देना चाहता है।

24. कहते है कि इंसान को सबसे प्रिय अपनी दुल्हन होती है, क्योंकि वह उसकी देखभाली करती है, उसका सम्मान होता है, उसका पहला प्यार होती है। अगर कोई उस पर बुरी नजर डाले तो वह व्यक्ति उस व्यक्ति की जान भी ले सकता है। यही कारण है कि धरती को दुल्हन कहा गया है।

25. देश की रक्षा का उत्तरदायित्व हमारे वीर सिपाही के कंधों पर होता है। सैनिक कहता है कि देश के लिए बलिदान का अवसर रोज-रोज नहीं आता अतः इसका सिलसिला चलते रहना चाहिए। देश की मर्यादा और सीमाओं के विरूद्ध उठने वाले दुश्मन के हर वार का मुँह तोड़ जवाब देना हीं इसका उद्देश्य है। देश के लिए बलिदान होने वाला सैनिक अपने साथियों को बताता है कि उसने तथा उसके काफिले के अन्य सैनिकों ने भीषण कष्ट और संकट सहन करके भी शत्रुओं के साथ मुकाबला किया और वे लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। उनके होते कोई भी शत्रु देश की सीमाओं में प्रवेश न कर सके इस हेतु वो हमेशा देश की रक्षा हेतु तत्पर रहते हैं।

अथवा

प्रस्तुत कविता 'मनुष्यता' के माध्यम से कवि मानवता, एकता, सहानुभूति, उदारता और करूणा का संदेश देना चाहता है। वह मनुष्य को स्वार्थ, भिन्नता, वर्गवाद, जातिवाद, आदि संकीर्णताओं से मुक्त करना चाहता है। वह मनुष्य में उदारता के भाव भरना चाहता है। कवि चाहता है कि हर मनुष्य समस्त संसार में अपनत्व की अनुभूति करे। वह दुखियों, वंचितों और जरूरत मंदों के लिए बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार हो। वह कर्ण, दधीचि आदि के अतुल त्याग से प्रेरणा ले। वह अपने मन में करूणा का भाव जगाए। वह अभिमान, लालच और अधीरता का त्याग करे।

26. कवि ने इस कविता के द्वारा यह संदेश दिया है कि हमें हर मुसीबत का सामना स्वयं करना चाहिए, सिर्फ परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर हो। हमें अपने बल पर सारे काम करने चाहिए। हर समय परमात्मा को तंग नहीं करना चाहिए।

27. इन पंक्तियों में कवि यह कहना चाहता है कि ईश्वर मैं सुख के दिनों में भी सिर झुकाकर हमेशा आपको याद करता रहूँ। क्योंकि लोग दुख के दिनों में ईश्वर को याद करते हैं लेकिन कवि सुख के दिनों में।

28. 'आत्मत्राण' कविता में कवि ईश्वर से यह प्रार्थन करता हैं कि वह नहीं चाहता हैं कि ईश्वर प्रतिदिन की विपदाओं से उसे ना बचाए ना ही सांत्वना दें बल्कि कवि तो सिर्फ यह चाहता है कि मुसीबत की घड़ी में वह भयभीत न हो और आने वाली मुसीबत या दुख पर विजय प्राप्त कर सकें।

29. इस कविता के शीर्षक 'आत्म श्राण' का अर्थ कि स्वयं को किसी भी हालत में ऊपर उठाना यहाँ इस कविता में कवि सबको अपना काम खुद करने की बात कर रहा है। परमात्मा से वह सिर्फ इतना चाह रहा है। कि वे उसका सिर्फ उत्साह, जोश तथा मनोबल बढाएँ। हम यह भी कह सकते हैं कि कवि अपनी सभी जिम्मेदारियाँ खुद ही उठाना तथा निभाना चाहता है। इसलिए यह शीर्षक 'आत्म श्राण' बिल्कुल सही है।

Smart Notes .....

काव्य खण्ड

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दो– [CBSE 2017] [5]

खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, महत्व की बात है यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) महत्व की बात क्या है और क्यों?

(ख) शाश्वत मूल्य क्या है तथा इन मूल्यों से समाज को क्या लाभ हैं?

(ग) समाज को पतन की ओर ले जाने वाले कौन है?

2. 'बड़े भाई साहब' कहानी के आधार पर लगभग 100 शब्दों में लिखिए कि लेखक ने समूची शिक्षा प्रणाली के किन पहलुओं पर व्यंग्य किया है? आपके विचारों से इसका क्या समाधान हो सकता है। तर्कपूर्ण उत्तर लिखिए।

[CBSE 2018] [5]

3. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः [CBSE 2018]

तताँरा–वामीरो कथा के आधार पर प्रतिपादित कीजिए कि रूढ़ियाँ बंधन बनने लगें तो उन्हें टूट जाना चाहिए। [2]

4. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः [CBSE 2018]

हमारी फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन 'ग्लोरीफाई' क्यों कर दिया जाता है? 'तीसरी कसम' के शिल्पकार शैलेन्द्र के आधार पर उत्तर दीजिए। [2]

5. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः

[CBSE 2012]

'गिरगिट' पाठ में शासन की किन प्रवृतियों का उल्लेख किया गया है? [3]

6. 'गिरगिट' कहानी में लेखक ने समाज की किन कुसंगतियों की ओर संकेत किया है? अपने शब्दों में लिखो?

[CBSE 2011] [5]

7. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः [CBSE 2013]

'गिरगिट' कहानी में शासक और पुलिस अधिकारी के किस रूप को उजागर किया गया है? क्या वह रूप आपकों भी अपने परिवेश में दिखाई देता है? [3]

8. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2013] [5]

मै तुझे छोड़ने वाला नहीं। और उसकी उँगली भी जीत के झंडे की तरह गड़ी दिखाई दे रही थी। ओचुमेलॉव ने इस व्यक्ति को पहचान लिया। वह ख्यूक्रिन नामक सुनार था और इस भीड़ के बीचों बीच, अपनी अगली टाँग पसारे,

नुकीले मुँह और पीठ पर फैले पीले दागवाला, अपराधी-सा नज़र आता, सफेद बारजोई पिल्ला, ऊपर से नीचे तक दिखाई पड़ रहा था। उसकी आँसुओं से सनी आँखों में संकट और आतंक की गहरी छाप थी।

(क) ख्यूक्रिन नामक सुनार कैसी प्रवृत्ति का व्यक्ति था और कैसा नज़र आ रहा था?

(ख) भीड़ में वह अपनी उँगली का प्रदर्शन कैसे और क्यों कर रहा था?

(ग) कुत्ते की आँखों में आतंक की छाप क्यों थी?

9. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दोः [CBSE 2014]

मुआवज़ो पाने के लिए ख्यूक्रिन ने क्या-क्या कारण दिए? 'गिरगिट' पाठ के आधार पर लिखिए। [3]

10. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दो- [CBSE 2017] [5]

(क) 'गिरगिट' कहानी में पुलिस और जनता के संबंधों को कैसे दिखाया गया है?

(ख) शुद्ध सोना और गिन्नी में क्या अन्तर है?

(ग) काठगोदाम के पास भीड़ क्यों इकट्ठी हो गई थी?

11. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 20-30 शब्दों में लिखिएः [CBSE 2018]

'गिरगिट' पाठ में चौराहे पर खड़ा व्यक्ति जोर-जोर से क्यों चिल्ला रहा था? [1]

12. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दो-

[CBSE 2011]

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुख होने वाले', पाठ में लेखक ने प्रेम और अपनत्व की भावना के अभाव के क्या कारण बताए है? अपने शब्दों में लिखो- [3]

13. 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखो। [CBSE 2011] [5]

14. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो [CBSE 2013]

(क) प्रकृति में आए असंतुलन से क्या-क्या बदलाव आए हैं? इससे मानव जाति के लिए क्या-क्या खतरे पैदा हो गए हैं? 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए। [2]

(ख) 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक पाठ के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है? आपके विचार में क्या होना चाहिए? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [2]

15. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दोः [CBSE 2014]

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में समुद्र के क्रोध का क्या कारण बताया गया है? उसने अपना क्रोध कैसे शांत किया? अपने शब्दों में लिखिए। [2]

16. प्रकृति में आए असंतुलन के कारण और उसके परिणामों की चर्चा, 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर कीजिए? [CBSE 2014] [5]

17. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः [CBSE 2014] [5]

उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंड़े को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंड़ा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुख देख देखकर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए। इस गुनाह को खुदा से मुआफ़ कराने के लिए दसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं। सिर्फ रोती रही।

(क) माँ के दुख का क्या कारण था और उसका दुख कैसे बढ़ गया?

(ख) माँ के गुनाह और उसके प्रायश्चित पर टिप्पणी कीजिए।

(ग) माँ ने खुदा से क्या दुआ माँगी?

18. किन्हीं दो प्रश्ना का उत्तर दीजिएः [CBSE 2015]

'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में समुद्र के क्रोध का क्या कारण बताया गया है? उसने अपना क्रोध कैसे शांत किया? अपने शब्दों में लिखिए। [2]

19. प्रकृति में आए असंतुलन के कारण और उसके परिणामों की चर्चा, 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर कीजिए? [CBSE 2015] [5]

20. 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या कुप्रभाव पड़ा है? अपने शब्दों में विस्तार से लिखिए। [CBSE 2016] [5]

21. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दो-

[CBSE 2011]

'गिन्नी' का सोना' पाठ के आधार पर लिखिए कि कि कौन से मूल्स शाश्वत है? इन मूल्यों की जीवन में उपयोगिता बताइए। [3]

22. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– [CBSE 2011]

अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादो में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था।

(क) "खट्टी-मीठी यादों और रंगीन सपनों" का तात्पर्य समझाइए।

(ख) हमारे समस्त प्रयास वर्तमान के लिए क्यों होने चाहिए?

(ग) चाय पीने के बाद लेखक को किन परिवर्तनों का अनुभव हुआ? [5]

23. 'गिन्नी का सोना' पाठ में लेखक के अनुसार 'सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए'। [CBSE 2013] [5]

24. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

[CBSE 2013] [5]

एक महीने में पूरा होने वाला काम एक दिन में ही पूरा करने की कोशिश करने लगे।

वैसे भी दिमाग की रफ्तार हमेशा तेज़ ही रहती हैं। उसी 'स्पीड' का इंजन लगाने पर वह हज़ार गुना अधिक रफ्तार से दौडने लगता है। फिर एक क्षण ऐसा आता है तब दिमाग का तनाव बढ़ जाता है और पूरा इंजन टूट जाता है।... यही कारण है जिससे मानसिक रोग बढ़ गए है।

(क) जापान के लोग अधिकतर किस रोग से ग्रस्त रहते हैं और क्यों?

(ख) दिमाग का तनाव बढ़ने पर लोग क्या करते हैं।

(ग) 'झेन परम्परा' की देन क्या है?

25. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दो: [CBSE 2014]

जापान में मानसिक रोग के क्या कारण हैं? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं? 'झेन की देन' पाठ के आधार पर तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। [2]

26. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

[CBSE 2016]

'गिन्नी का सोना' पाठ में शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है? [2]

27. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– [CBSE 2011] [5]

किस्सा क्या हुआ था उसको उसके पद से हटाने के बाद हमने वज़ीर अली को बनारस पहुँचा दिया और तीन लाख रूपया सालाना वज़ीफा मुकर्रर कर दिया। कुछ महीने बाद गवर्नर जनरल ने उसे कलकत्ता (कोलकाता) तलब किया। वज़ीर अली कंपनी के वकील के पास गया जो बनारस में रहता था और उससे शिकायत की कि गवर्नर जनरल उसे कलकत्ता में क्यूँ तलब करता है। वकील ने शिकायत की परवाह नहीं की। उल्टा उसे बुरा-भला सुना दिया तो वज़ीर अली के तो दिल में यूँ अंग्रेजों के खिलाफ नफ़रत कूट-कूट कर भरी है, उसने खंजर से वकील का काम तमाम कर दिया।

(क) वज़ीर अली कौन था? उसे किसने बनारस पहुँचाया?

(ख) वज़ीर अली ने वकील की हत्या क्यों की?

(ग) पद से हटाए जाने के बदले में वज़ीर अली को क्या दिया गया?

28. 'कारतूस' पाठ के आधार पर सोदाहरण सिद्ध कीजिए कि वज़ीर अली एक जाँबाज सिपाही था।

[CBSE 2013] [5]

29. वज़ीर अली को एक जाँबाज़ सिपाही क्यों कहा गया है? उसके सैनिक जीवन के क्या लक्ष्य थे? 'कारतूस' पाठ के आधार पर विस्तार से लिखिए। [CBSE 2014] [5]

30. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: [CBSE 2016]

(क) ख्यूक्रिन कौन था? उसने मुआवजा पाने के लिए क्या दलील दी? [2]

(ख) आदत अली को अवध के तख्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था? [1]

31. वज़ीर अली कौन था तथा उसके चरित्र की क्या विशेषताएँ हैं। अपने शब्दों में सोदाहरण स्पष्ट करो।

[CBSE 2017] [5]

उत्तर माला

1. (क) महत्व की बात यह है कि हम सब मिलकर एक साथ सफलता की ओर चलें। क्योंकि इससे ही समाज को किसी भी क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

(ख) शाश्वत मूल्य वे है जो आदर्शवादियों से मिलते हैं। इन मूल्यों के समाज के लोगों को आपसी प्रेम तथा भाईचारे की भावना बढ़ती है।

(ग) जो व्यवहारवादी लोग होते हैं वे ही समाज को पतन की ओर ले जाते है। क्योंकि वे सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं, समाज का भला नहीं सोचते।

2. प्रस्तुत कहानी पाठ 'बड़े भाई साहब' में लेखक ने शिक्षा के अनुपयोगी तौर-तरीकों के ऊपर व्यंग्य किया है- चूंकि छात्रों को पाठ्यक्रम में दिए गए अध्याय जैसे : गणित से सम्बंधित ज्यामिती अध्याय में कठिन प्रमेय एवं सवाल पढ़ाये जाते हैं जिनका भविष्य में उतना उपयोग नहीं होता तथा परीक्षक कॉपी जाँचते समय अनावश्यक बातों के लिए छात्रों को फेल कर देते हैं एवं पुस्तक में लिखित बातों को सही मानकर उसे ही याद करने को कहते हैं जो शिक्षा के स्तर के उतार-चढ़ाव की तरफ इशारा करता है।

इस प्रकार छात्रों को भविष्य उपयोगी एवं व्यवाहारिक ज्ञान दिया जाये ताकि वो अपने भविष्य को उज्जवल बना सकें।

3. प्रस्तुत वाक्य रूढ़ीवादी बंधन के दुष्प्रभाव की तरफ इशारा करता है। इस प्रकार 'तताँरा-वामीरो' कथा के अनुसार रूढ़िवादी बंधन तताँरा और वामीरों के प्रेम सम्बन्ध के मध्य रूकावट बन गया था जिसे हटाने के लिए नायक ने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था।

4. प्रायः फिल्म निर्माता पैसा कमाने के लिए फिल्मों में त्रासद स्थितियों का चित्रांकन 'ग्लोरीफाई (गुणगान)' करते हैं। क्योंकि वे फिल्मों में दुःखों एवं त्रासदी से सम्बंधित कई ऐसे वीभत्स रूपों को प्रस्तुत करते हैं, जिससे दर्शक अन्त तक फिल्मों से भावनात्मक तौर पर जुड़े रह सकें।

5. यह कहानी शक्तिशाली लोगो द्वारा कमज़ोर लोगों के शोषण पर आधारित है। इसी तरह की प्रवृतियाँ भी हमारे समाज में भी है। बड़े-बड़े अधिकारी गिरगिट की तरह रंग बदलते है। कमज़ोर तथा झोपड़ी पट्टी में रहने वाले लोगों को सुख-सुविधाओं की इमेशा से कमी रही है।

6. 'गिरगिट' कहानी में लेखक ने समाज में हो रही विषमताओं की ओर संकेत किया है। शक्तिशाली तथा सत्ताधारी लोग समाज में ऐश कर रहे हैं, जबकि कमजोर वर्ग के लोग दैनिक वस्तुओं के लिए भी तरस रहे हैं। उदाहरण के लिए जिलाधिकारी के घर पर पानी बरबाद होता रहता है, जबकि झोपड़ पट्टी के लोगों को पानी की एक बूँद भी नसीब नहीं होती। सरकारी अधिकारी गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं। भ्रष्टाचार का बोलबाला है। समाज में अगर कोई सत्ताधारी/शक्तिशाली व्यक्ति अपराध करता है तो सजा उसे न होकर किसी कमज़ोर को उसके बदले में दंड दिया जाता है और उसे दोषी साबित किया जाता है।

7. इस कहानी में शासक और पुलिस अधिकारी को भ्रष्ट रूप में दिखाया गया है। साथ ही रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, अवसर वादिता पर भी व्यंग्य किया गया है। पूरी शासन व्यवस्था चापलूसी पर टिकी होती है। हमारे समाज में इस तरह की विसंगतियाँ दिखाई दे रही हैं। हर दिन समाचार-पत्र, खबरों में इस तरह खबरे छपती रहती है। सच बोलने वाला या आदर्शवादिता को अपनाने वाला इसके सामने टिक नहीं पाता।

8. (क) ख्यूक्रिन पेशे से सुनार था। उसका कहना था कि उसका काम पेचीदा किस्म का है, जिसके लिए उसे अपने हाथों का प्रयोग करना पड़ता है। वह इसके लिए मुआवज़ा माँग रहा था। इससे यह पता चलता है कि वह लालची किस्म का था।

(ख) भीड़ में उसने अपनी उँगली का प्रदर्शन एक जीत के झण्डे की तरह किया हुआ था। वह लोगों को ऐसा करके अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

(ग) कुत्ते की आँखों में आतंक की छाप इस लिए थी, क्योंकि चारों तरफ भीड़ जमा हो गई थी और हो सकता था कि वे लोग उसे मार भी दे।

9. ख्यूक्रिन एक सोनार था। मुआवजा पाने के लिए उसने दलील देते हुए कहा कि हुजूर! मै एक कामकाजी आदमी हूँ मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है। मुझे लगता है कि मेरी ऊँगली एक हफ़्ते तक अब काम करने लायक नहीं हो पाएगी अतः इसके मालिक से मुझे हरजाना दिलवाया जाए। यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है हुजूर! कोई आदमखोर जानवर हमें काट खाएँ और हम उन्हें बरदाश्त करते रहें। अगर हर कोई इसी तरह काट खाना शुरू कर दे तो जिंदगी तो नर्क हो जाए।

10. (क) इस कहानी में पुलिस और जनता के कटु संबंधों को दर्शाया गया है। पुलिस अधिकारी भ्रष्ट हो गए हैं। पुलिस अधिकारी भ्रष्ट हैं तथा वे जनता के लिए काम करने में भी आना-कानी करते है। वे तानाशाह होते हैं।

(ख) शुद्ध सोना मिलावट रहित होता है जबकि गिन्नी के सोने में ताबाँ होता है। इसलिए वह शुद्ध सोने से ज़्यादा मज़बूत होता है।

(ग) काटगोदाम के पास किसी व्यक्ति को एक कुत्ते ने काट लिया था। वह आदमी उस कुत्ते को पकड़ कर चिल्ला रहा था। उसे देखने के लिए ही वहाँ बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

11. एक कुत्ते के पिल्ले ने ख्यूक्रिन की अँगुली में काट लिया था जिससे वह मुआवजा पाने के लिए चौराहे पर खड़े होकर जोर-जोर से चिल्ला रहा था।

12. लेखक ने इस पाठ के द्वारा यह बताने की कोशिश की है कि समाज में अब प्रेम और अपनत्व की भावना खत्म होती जा रही है क्योंकि अब इंसानों ने अपनी दुनिया काफी सीमित कर ली है। कोई किसी तरह ध्यान नहीं देता और न ही परवाह या प्रेम करता है। सब लोग स्वार्थी हो जाए हैं। यहाँ तक कि लोगों का जानवरों पक्षियों के प्रति भी प्रेम खत्म होता जा रहा है।

13. लेखक ने इस पाठ में यह बताया है कि बढ़ती आबादी का पर्यावरण पर बहुत असर पड़ रहा है। आज आबादी बढ़ने की वजह से जंगलों को काटा जा रहा है, पशु-पक्षियों को घर से बेघर किया जा रहा है। कही पर बाढ़े आ रही हैं तो कहीं पर अकाल पड़ रहा है। मौसम भी बड़ी जल्दी-जल्दी परिवर्तित हो रहे हैं। जिससे पर्यावरण का संतुलन काफी बिगड़ चुका है। पेड़ों के कटने की वजह से गर्मी बढ़ती जा रही है, जिससे उत्तरी-ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव के ग्लेशियर पिघलते जा रहे हैं। इस प्रकार पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है, जिससे तापमान में काफी वृद्धि हो रही है। इन सब का एक ही कारण है- बढ़ती आबादी।

14. (क) प्रकृति में आए असंतुलन का कारण बढ़ती जन संख्या है। इस असंतुलन ने पूरे पर्यावरण को खराब कर दिया है। समुद्र को पीछे धकेल दिया। समुद्र के तट पर बड़ी-बड़ी इमारतें बना दी गई हैं। पेड़ों को काटा जा रहा हैं। पशु-पक्षियों का घर भी उनसे छिन गया है। वातावरण में गर्मी बढ़ गई है। मौसम का कोई ठिकाना नहीं है। बरसातें अपने समय पर नहीं आ रही। कभी तुफान, कभी भूकंप तथा कभी अकाल आ रहे हैं। इसी के साथ ही अनेकों बीमरियाँ भी फैल रही हैं। इस प्रकार इन सबके बढ़ने का एक ही कारण है-बढ़ती हुई आबादी, जिन पर हमें नियंत्रण करना होगा।

(ख) लेखक इस पाठ के माध्यम से यह संदेश देना चाहता है कि हमें प्रकृति का ध्यान रखना चाहिए। आज प्राकृतिक संतुलन बिगड़ गया है। आबादी बढ़ गई है। रहने की जगह खत्म हो रही है। समुद्रों को पीछे धकेला जा रहा है। इन सब कारणों से कभी भूकंप, तो कभी गर्मी, तो कभी अकाल और तो और कभी बाढ़ें आ रही है। मेरे विचार से यह संतुलन बिगाड़ना नहीं चाहिए। क्योंकि अगर हमारी वजह से प्रकृति संतुलन बिगड़ा तो प्रकृति भी बहुत जबरदस्त जवाब दे सकती है। इसलिए हमें अपनी हद में रहना चाहिए।

15. कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेल कर उसकी जमीन को हथिया रहे थे। बेचारा समंदर लगातार सिमटता जा रहा है। पहले उसने अपन फैली हुई टांगे स्मेटी, थोड़ा सिमटकर बैठ गया। फिर जगह कम पड़ी तो सिकुड़कर बैठ गया। फिर खड़ा हो गया जब खड़ा रहने की जगह कम पड़ी तो उसे गुस्सा आ गया।

समुद्र ने अपना क्रोध शांत करने के लिए एक दिन अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को तीन दिशाओं में फेंक दिया।

16. बढ़ती हुई आबादियों का पर्यावरण पर बहुत कुप्रभाव पड़ा। इस बढ़ती हुई आबादियों ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया। बढ़ती हुई आबादियों ने समंदर को पीछे सरकाना चालू का दिया, पेड़ों को रास्ते से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण ने पंछियों को बस्तियों से भागना शुरू कर दिया हैं। जो कि प्रकृति में आए अंसतुलन का मुख्य कारण था। इसके परिणामस्वरूप बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया है। अब गरमी में ज्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, जलजलें, सैलाब, तूफान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम है।

17. (क) घर में कबूतर के जोड़े ने अंडे दिए थे। एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था। दूसरा अंडा माँ बचाने की कोशिश कर रही थी लेकिन उनसे भी अंडा टूट गया। माँ के दुख का यह कारण था। इस घटना से कबूतर इधर-उधर फड़फड़ाने लगे और उनकी आँखों में आँसू आ गए। ये देखकर माँ का दुख और भी बढ़ गया।

(ख) माँ से जानबूझकर कबूतर के अंडे टूटे नहीं थे उनका कोई गुनाह नहीं था लेकिन कबूतर के दुख को देखकर वो अपने आपको गुनाहगार मानने लगी और इस

गुनाह को खुदा से माफ कराने के लिए प्रायश्चित स्वरूप पूरे दिन रोजा रखा। दिन भर कुछ खाया-पिया नहीं। सिर्फ रोती रही। ये बात जीव-जंतुओं के प्रति मानवीय संवेदना, सहानुभूति, दया आदि भाव परिलक्षित होता है।

(ग) माँ ने खुदा से अपने गुनाह माफ करने की दुआ माँगी।

18. समुद्र के गुस्से कारण था कि धीरे-धीरे उसका सिमटना। मुबंई जैसे बड़े महानगरों में जनंसख्या बढ़ने की वजह से आवास की समस्या बढ़ती जा रही है। इस लिए बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे धकेल कर बड़ी-बड़ी इमारतें बना रहे हैं इसलिए समुद्र अपने पाँव नहीं फैला पा रहा है। अतः गुस्से को शांत करने के लिए उसने तीन जहाजों को गेंद की तरह हवा में उछाल दिया।

19. प्रकृति में असंतुलन का कारण बढ़ती जनसंख्या है। इस असंतुलन ने पूरे पर्यावरण को खराब कर दिया है। समुद्र को पीछे धकेल दिया। समुद्र के तट पर बड़ी-बड़ी इमारतें बना दी गई है। पेड़ों को काटा जा रहा है। पशु-पक्षियों का घर भी उनसे छिन गया है। वातावरण मे गर्मी बढ़ गई है। मौसम का कोई ठिकाना नही हैं। बरसाते अपने समय पर नहीं आ रही। कभी तूफान, कभी भूकंप तथा कभी अकाल आ रहे है। इसी के साथ ही अनेकों बीमारियाँ भी फैल रही है। इस प्रकार इन सब के बड़ने का एक ही कारण है- बढ़ती हुई आबादी, जिन पर हमें नियंत्रण करना होगा।

20. बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर बहुत कुप्रभाव पड़ा। इस बढ़ती हुई आबादी ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ दिया बढ़ती हुई आबादी ने समुद्र को पीछे से सरकाना चालू कर दिया, पेड़ों को रास्ते से हटाना शुरू कर दिया है, फैलते हुए प्रदूषण से पंछियों ने बस्तियों से भागना शुरू कर दिया है। बारूदों की विनाशलीलाओं ने वातावरण को सताना शुरू कर दिया है। अब गरमी में ज़्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, ज़लज़लें, सैलाब, तूफान और नित नए रोग, मानव और प्रकृति के इसी असंतुलन के परिणाम है।

21. आज के समय में सत्य, अहिंसा, समता तथा विश्वबंधुता आदि मूल्य शाश्वत हैं। वर्तमान समय में सत्य की बजाए असत्य का बोलबाला है। अंहिसा की जगह हिंसा में पैर पसार लिए है। समता की जगह भेदभाव ने अपनी जड़े जमा ली है। जबकि इन सभी मूल्यों की हमारे समाज को बहुत आवश्यकता है। ताकि एक स्वस्थ समाज बन सके।

22. (क) खट्टी-मीठी' यादों से तात्पर्य है। कि भूतकाल में जो भी कुछ हम सुख-दुख भोग चुके हैं, उन्हें याद करते समय मन में जैसे भाव आएँ, यादे भी वैसी हो जाती है। जैसे कि अगर कोई सुखद यादें है तो उन्हें मीठी याद कहा जाता है तो अगर कोई दुखद यादें है तो उन्हें खट्टी याद कहा जाता है।

'रंगीन सपने' से तात्पर्य है कि जब हम भविष्य के लिए कुछ कल्पनाएँ करते हैं या फिर कुछ रूचि रखते है जो एक सपने की तरह होता है। साथ ही हम भविष्य में उन्हें पूरा करना भी चाहते है तो उन्हें रंगीन सपने कहा जाता है।

(ख) हमारे समस्त प्रयास वर्तमान ही होने चाहिए। क्योंकि हमें वर्तमान को सत्य मान कर उसी में जीना चाहिए। अर्थात् जो अभी हो रहा है, उसी में ही जीना चाहिए।

(ग) चाय पीने के बाद लेखक के दिमाग से भूत और भविष्य उड़ गया तथा वह सिर्फ वर्तमान के लिए ही सोच रहा था।

23. लेखक का कहना है कि हमारा अतीत तथा हमारा भविष्य दोनों अभी नहीं है। इसलिए उसके बारे में अभी उत्साहित नहीं होना चाहिए। अतीत बीत चुका है। भविष्य का कोई पता नहीं है। जब सब कुछ हमें पता है तो फिर हम वर्तमान में क्यों नहीं जीते। वर्तमान समय ही सत्य है, तो हमें इसी सत्य में जीना चाहिए। वर्तमान पर तो हम आज के सुरज दुख को अनुभव कर सकते हैं।

24. (क) जापान के लोग मानसिक रोग से ग्रस्त रहते हैं, क्योंकि वहाँ के लोगों की ज़िन्दगी की रफ्तार काफी बढ़ गई है।

(ख) दिमाग का तनाव बढ़ने पर लोग चाय पीते हैं। इस चाय पीने के बाद दिमाग की रफ्तार कुछ कम हो जाती है साथ ही मन में भी शान्ति छा जाती है।

(ग) 'झेन परम्परा' की देन में जापानी लोगों की 'चाय' पीने की पद्धति है, जिसमें लोग कुछ समय गुज़ार कर अपने जीवन की व्यस्तता से भरे जीवन में शांति पा लेते हैं।

25. जापान के लोगों के जीवन की रफ्तार बढ़ गई है। वहाँ कोई चलता नहीं, बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं बकता है। जापानी जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं। क्योंकि वे अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने लगे हैं। मैं इन कारणों से पूर्ण रूप से सहमत हूँ क्योंकि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान बर्बाद हो गया था उसे फिर से खड़ा होना था। ये बाद वहाँ के नागरिकों के मन में समा गई थी और वे अन्य देशों के मुकाबले कई गुना काम करते थे।

26. 'गिन्नी का सोना' पाठ में शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से इसलिए की गई है क्योंकि शुद्ध आदर्श शुद्ध सोने की तरह होते हैं। जिस प्रकार शुद्ध सोने में किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती उसी प्रकार शुद्ध आदर्श में किसी प्रकार की व्यावहारिकता की मिलावट नहीं होती।

व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से इसलिए की गई है क्योंकि जिस प्रकार शुद्ध सोने में ताँबा मिलाकर गिन्नी का सोना बनाया जाता है उसी प्रकार आदर्श में व्यावहारिकता का ताँबा मिलाया जाता है। जिस प्रकार ताँबा सोने को चमक और मजबूती तो देता है लेकिन उसकी शुद्धता चली जाती है ठीक उसी प्रकार व्यावहारिकता देखने में तो अच्छी लगती है किंतु उसके पीछे के शुद्ध आदर्श खो जाते हैं।

27. (क) वजीर अली एक जाँबाज सिपाही था। वह अंग्रेजों के सख्त खिलाफ था। उसे अंग्रेजों ने बनारस पहुँचाया था।

(ख) जब वज़ीर अली को बनारस भेज दिया गया था, तब कुछ महीने के बाद गर्वनर जनरल ने उसे कलकत्ता बुलाया तो इस बारे में व़जीर ने वकील ने वकील से शिकायत की, लेकिन वकील ने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, तब गुस्से में आकर व़जीर ने वकील की हत्या कर दी।

(ग) वजीर अली को बनारस पहुँचाने के बाद अंग्रेजों ने तीन लाख रुपये सालाना वजीफा देना आरम्भ कर दिया था। लेकिन वजीर अली को गर्वनर जनरल कलकता बार-बार बुलाता था, जो वजीर अल को पसन्द नहीं था। जब यह शिकायत उसने उस कंपनी के वकील से की तो वकील ने उसे डाँटना शुरू कर दिया था, तभी वज़ीर अली ने उसे मार डाला।

28. वज़ीर अली को जाँबाज सिपाही इसलिए कहा गया है, क्योंकि वह बहुत हिम्मती तथा साहसी था। उसे अपनी मंजिल को प्राप्त करने में काफी जान लगानी पड़ी। उसके सैनिक जीवन का लक्ष्य हिन्दुस्तान से अंग्रेजों को बाहर खदेड़ना था। जब उससे अवध की नियुक्ति छीन ली गई तब से ही उसने यह ठान लिया कि वह इन अंग्रेजों को अपने वतन से खदेड़ कर ही चैन लेगा। उसने जनरल के सामने पेश होने से इंकार कर दिया। गुस्से में आकर उसने कंपनी के वकील की हत्या कर दी। उसने बड़ी निडरता से अंग्रेजों का उस डैरे में मुकाबला किया, जहाँ उसे पकड़ने के बाद रखने की योजना बनाई जा रही थी। वहाँ घुस कर कर्नल को जान से मारने की धमकी भी दे दी थी। इस प्रकार हम कह सकते है कि वज़ीर अली जाँबाज़ सिपाही था।

29. वजीर अली को एक जाँबाज़ सिपाही निम्न कारणों से कहा गया है। पहला वजीर अली कंपनी के वकील के पास किसी बात को लेकर शिकायत करने गया था लेकिन वकील ने शिकायत की परवाह नहीं की और उल्टा उसे बुरा-भला सुना दिया। वजीर अली के मन में पहले से ही अंग्रेजों के खिलाफ नफरत थी अतः उसने खंजर से वकील का कत्ल कर दिया। दूसरा वजीर अली कर्नल के खेमे में कारतूस लेने के लिए अकेले पहुँच जाता है और उसे जान से मारने की धमकी देकर लौट जाता है।

वज़ीर अली के सैनिक जीवन का एक ही लक्ष्य था कि किसी भी तरह से सआदत अली को उसके बाद पद से हटाकर खुद अवध पर कब्जा करे और अंग्रेजों को हिंदुस्तान से बाहर निकाल दे।

30. (क) ख्यूक्रिन एक सोनार था मुआवजा पाने के लिए उसने दलील देते हुए कहा कि हुजूर! मैं एक कामकाजी आदमी हूँ मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है। मुझे लगता है कि मेरी उँगली एक हफ़्ते तक अब काम करने लायक नहीं हो पाएगी अतः इसके मालिक से मुझे हरज़ाना दिलवाया जाए। यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है हुजूर! कि आदमखोर जानवर हमें काट खाएँ और हम उन्हें बरदाशत करते रहें। अगर हर कोई इसी तरह काट खाना शुरू कर दे तो ज़िंदगी तो नर्क हो जाए।

(ख) सआदत अली अंग्रेजों का मित्र था। कर्नल से उसकी खूब जमती थी। कर्नल ने अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए उसे अवध के तख्त पर बिठाया था। सआदत अली बहुत ऐश पसंद आदमी था। सआदत अली ने अवध का नवाब बनते ही कर्नल को अपनी आधी जायदाद और दस लाख रुपए नगद दे दिए थे इसके बाद दोनों मजे करने लगे।

31. वज़ीर अली मासिक उद्दोला का बेटा था तथा सआदत अली का सबसे बड़ा दुश्मन। वज़ीर अली बड़ा होकर एक जाँबाज़ सिपाही बना तथा वह इतना बहादुर था कि अंग्रेज अफसर ने पास आकर कारतूस माँग कर ले भी गया, लेकिन किसी की गिरफ्त में नहीं आया। वज़ीर अली के मन में अंग्रेजों के प्रति गुस्से की भावना थी। इसलिए वह अंग्रेजों को कड़ी टक्कर भी दे रहा था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वज़ीर अली एक जाँबाज़ सिपाही था।

Smart Notes .....

संचयन

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. 'हरिहर काका' कहानी के आधार पर बताइए कि एक महंत से समाज की क्या अपेक्षा होती है। उक्त कहानी में महंतों की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए। उत्तर लगभग 150 शब्दों में दीजिए। [CBSE 2018] [5]

2. **निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।** [CBSE 2011]

टोपी एक सुविधा-सम्पन्न परिवार से था, फिर भी इफ़्फ़न की हवेली की तरफ उसके खींचे चले जाने के क्या कारण थे? स्पष्ट करो। [2]

3. 'सपनों के से दिन' में पी.टी साहब द्वारा विद्यार्थियों को अनुशासित करने की युक्तियाँ, वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के अनुसार कहाँ तक उचित है? उसमें निहित जीवन-मूल्यों पर अपने तर्क पूर्ण विचार प्रस्तुत करो। [CBSE 2011] [4]

4. **निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।**

[CBSE 2013]

'सपनों के से दिन' के पाठ में लेखक को कब लगता था कि वह भी एक फौजी है? कारण सहित लिखिए। [2]

5. मास्टर प्रीतमचन्द्र को स्कूल से निलंबित क्यों कर दिया गया? निलंबन के औचित्य और उस घटना से उभरने वाले जीवन-मूल्यों पर अपने विचार लिखिए।

[CBSE 2013] [4]

6. **निम्नलिखित में से प्रश्नों के उत्तर दीजिएः**

[CBSE 2014]

(क) 'सपनों के-से दिन' पाठ में लेखक को स्कूल जाने का उत्साह नहीं होता था, क्यों? फिर भी ऐसी कौन-सी बात थी जिस कारण उसे स्कूल जाना अच्छा लगने लगा? कारण सहित स्पष्ट कीजिए। [3]

(ख) 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर पी.टी किन्ही तीन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [3]

7. आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशसित बनाए रखने के लिए क्या तरीके निर्धारित हैं? 'सपनों के-से दिन' पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में कहाँ तक उचित लगती हैं? जीवन-मूल्यों के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। [CBSE 2014] [4]

8. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः** [CBSE 2016] [5]

अकसर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। या हम तो भूतकाल में रहते है। या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वह सत्य है। उसी में जीना चाहिए।

(क) गंद्याश में लेखक ने किन बातों में उलझे रहने की बात कहीं है?

(ख) आशय स्पष्ट कीजिएः "असल में दोनों काल मिथ्या है।"

(ग) लेखक ने सत्य किसे कहा है और क्यों?

9. 'सपनों के से दिन' पाठ में पी. टी. सर की किन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख किया गया है? वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में स्वीकृत मान्यताओं और पाठ में वर्णित युक्तियों के संबंध में अपने विचार जीवन मूल्यों की दृष्टि से व्यक्त कीजिए। [CBSE 2017] [5]

10. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए। [CBSE 2011]

'टोपी शुक्ला' पाठ में इफ़्फ़न' की दादी मे स्वभाव की उन विशेष्ताओं का उल्लेख करों जिनके कारण टोपी ने दादी बदलने क बात कही? [2]

11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

[CBSE 2013]

(क) 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर बताइए कि टोपी को किन-किन से अपनापन मिला? क्या आज के समय में भी ऐसे अपनेपन की प्राप्ति संभव है? [3]

(ख) किन बातों से पता चलता है कि टोपी को इफ्फन की दादी बहुत प्रिय थी? [3]

12. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए।

[CBSE 2014]

टोपी ने मुन्नी बाबू के बारे में कौन-सा रहस्य छिपाकर रखा था और क्यों? विस्तार से समझाए। [3]

13. जीवन मूल्यों के आधार इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला के संबंधों की समीक्षा कीजिए। [CBSE 2016] [5]

14. इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला की मित्रता भारतीय समाज के लिए किस प्रकार प्रेरक है? जीवन-मूल्यों की दृष्टि से लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिए। [CBSE 2018] [5]

उत्तर माला

1. प्रस्तुत कहानी 'हरिहर काका' के आधार पर समाज को महंत से यह अपेक्षा होती है कि वह समाज में रहने वालों पर परोपकार करें व उनकी समस्याओं को सुलझायें। धन-दौलत की लालसा न करके ईश्वर की भक्ति में ही मन लगाए तथा ईश्वर का भजन करके लोगों का भला करें। आजकल बाहरी आडंबर रचाने वाले बहुत से महंत हैं जो कि ईश्वर के नाम पर करोड़ों की संपत्ति हड़प लेते है और धर्म के नाम पर पाखंड रचाकर गंदे कार्य करते हैं जिससे लोग किसी भी महंत पर विश्वास नहीं करते। जिस प्रकार उक्त कहानी में महंत स्थायी है। वह कार्य को पूरा करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। साथ ही षड़यंत्र रचता है और लोगों को अपनी बात मनवाने के लिए बहलाता फुसलाता है तथा जबरदस्ती करता है।

2. इस पाठ में यह दिखाया गया है कि माँ-बाप बच्चों की पढ़ाई में रूचि नहीं लेते थे। वह इसलिए क्योंकि उनका मानना था कि बच्चों को बड़े होकर वही बही खते ही लिखने हैं बस उतना ही सिखा देंगे। पढ़ाई पी.टी सब बेकार समझते थे। पढ़ाई पर पैसा खर्च करने से बेहतर उसे किसी व्यापार में लगा देना सही होगा।

3. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियाँ थोड़ी अटपटी लगती हैं। आज के संदर्भ में देखे तो विद्यार्थियों/बच्चों को शारीरिक दण्ड देना अपराध माना जाता है। आज के समय में यही प्रथा-प्रचलित है कि हम बच्चों को प्यार से समझाएँ तथा सुधारें। पिछले ज़माने में बच्चों को जिस तरह से दडं दिए जाते थे, उसके बारे में सोच कर तो आत्मा ही काँप जाती है। पहले डंडों से पिटाई करके बच्चों को समझाया जाता था, जिससे बच्चे समझते तो नहीं थे, बल्कि ढीठ हो जाते थे।

4. विद्यालय में जब परेड होती थी तो लेखक भी उसमें शामिल होता था। राइट टर्न, लेफ्ट टर्न और अबाउट टर्न लेते हुए एडियों को मरोड़ कर ठक-ठक की आवाज़ निकालता था तब ऐसा लगता था कि वह भी एक महत्वपूर्ण इंसान फौजी बन गया है।

5. मास्टर प्रीतम सिंह को निलंबित कर दिया गया था। क्योंकि वे कड़क थे तथा हमेशा बच्चों को पीटते रहते थे। वे हर बच्चे की छोटी-छोटी शरारत पकड़ते थे तथा उनकों सुधारने में वे एक अलग ही शैली का प्रयोग करते थे। इसी तरह एक दिन वह बड़ी बेरहमी से बच्चों की धुनाई कर रहे थे तो हेडमास्टर ने उन्हें देख लिया। इसलिए उन्हें मुउत्तल कर दिया गया।

6. (क) नयी श्रेणी में जाने, नयी कापियों किताबों से आती विशेष गंध, आगे की मुश्किल पढ़ाई और कुछ नए मास्टरों की मार-पीट के भय के कारण लेखक को स्कूल जाने का उत्साह नही होता था। फिर भी लेखक को स्कूल जाना एक-दो कारणों से अच्छा भी लगने

लगा जिसमें मास्टर प्रीतमचंद का स्काउटों को परेड करवाना था। जिसमें लेफ्ट-राइट की आवाज़, मुहँ में सीटी से मार्च कराना, बूटों की ठक-ठक की आवाज व अकड़कर चलना आदि कारण शामिल था।

(ख) पी.टी मास्टर साहब की पहली चारित्रिक विशेषता यह थी कि वे बहुत ही अनुशासन प्रिय शिक्षक थे। उनके अनुशासन की वजह से ही प्रार्थना सभा और स्कूल में छात्र पंक्तिबद्ध व अनुशासित रहते। दूसरा वे बहुत अच्छा पी.टी कराते थे जिसकी वजह से बहुत सारे बच्चे स्कूल आते थे। तीसरा वे कठोर होते हुए भी बहुत नर्म दिल के व्यक्ति थे, पक्षी प्रेमी थे। अपने पाले हुए तोते से बड़ी मीठी-मीठी बातें करते तथा उसे बादाम की गिरियाँ खिलाते।

7. आज की शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित रखने के लिए कई तरह की योजनाएँ बनाई गई हैं जैसे अनुशासन के लिए उन्हें अंक दिए जाने के साथ तरह-तरह के पुरस्कार भी दिए जाते हैं। अनुशासन में रखने के लिए शिक्षक-अभिभावक मीटिंग रखी जाता है, बच्चों को अभिप्रेरित किया जाता है। छात्रों को उनके मुताबिक सुविधाएँ देने का प्रयास किया जाता है। साथ की उनकी दिनचर्या ऐसी बनाई जाती है ताकि वे अनुशासित रह सकें। उनके मनोरंजन का भी भरपूर ध्यान रखा जाता है।

सपनों के-से दिन में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में बिल्कुल अनुचित हैं। क्योंकि आज के संदर्भ में छात्रों को प्रेम, सहानुभूति, ममत्व और अपनत्व के माध्यम से ही सिखाया जा सकता है।

8. (क) अकसर हम या तो गुज़रे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं।

(ख) लेखक रवींद्र केलेकर जी ने इन पंक्तियों में यह समझाने का प्रयास किया है कि भूतकाल और भविष्यकाल दोनों मनुष्य के लिए झूठे हैं क्योंकि एक बीत चुका है जिसमें हम कुछ नहीं कर सकते और दूसरा आनेवाला जिसके बारे में हमें कुछ पता ही नहीं। और हम इन्हीं दोनों कालो में उलझे रहकर अपने वर्तमान को भूल जाते हैं। अतः ये दोनों ही हमारे लिए मिथ्या हैं।

(ग) लेखक ने वर्तमान समय को ही सत्य कहा है क्योंकि जिस क्षण हम जी रहे होते हैं वह वर्तमान ही होता है और हमें भूत व भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान में ही जीना चाहिए, वर्तमानकाल अनंतकाल जितना विस्तृत है। यही हमारे भूत और भविष्य का आधार है।

9. पी.टी. सर बहुत ही सख्त मिज़ाज के अध्यापक थे। बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए वे सख्त से सख्त कार्यवाही करते थे। उनकी नज़र बहुत पैनी थी, तथा वे हर बच्चे की छोटी से छोटी गलती को भी पकड़ लेते थे उन्हें अपने उच्च अधिकारियों से भी कोई डर नहीं था। वे अपनी तोते को बहुत ही प्यार से बादाम खिलाते थे तथ बहुत ही मोम दिल इंसान थे। अगर देखा जाए तो पाठ में वर्णित शिक्षा व्यवस्था में शारीरिक दण्ड की बात की गई है जोकि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मान्य नहीं है। पाठ के बच्चों के साथ सख्ती से पेश आया जा रहा है लेकिन आज हम बच्चों या विद्यार्थियों के साथ ऐसे पेश नहीं आ सकते, क्योंकि इससे बच्चा निराश तथा उदास हो जाता है और डाँट सबके सामने पड़ने पर आहत भी होता है तथा आत्महत्या तक की भी नौबत आ जाती है। इसलिए वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में से पेश आना अमान्य है, जो काफी हद तक सही भी है।

10. इफ़्फ़न की दादी स्वभाव से बहुत अच्छी थी। वह पक्की नमाज़ी थी तथा अनेक धार्मिक स्थलों की यात्रा कर आई थी। साथ बहुत ही खुशमिजाज औरत थी। वह अपने पोते के दोस्त टोपी को बहुत प्यार करती थी। साथ ही उसे कहानियाँ भी सुनाती थी। वह कभी भी किसी के साथ जबरदस्ती नहीं करती थी।

11. (क) 'टोपी शुक्ला' को अपने दोस्त इफ्फन के घरवालों खास और पर उसकी दादी से काफी अपनापन मिला। इफ्फन भी टोपी से बहुत स्नेह करता था, लेकिन मधुर रिश्ता इफ्फन की दादी से बना।

नही, आज के समय में ऐसे अपनेपन की प्राप्ति संभव नहीं हैं क्योंकि आज सब स्वार्थी हो गए हैं। कोई किसी का भला नहीं करना चाहता।

(ख) टोपी को इफ्फन के घर जाना बहुत अच्छा लगता था क्योंकि इफ़्फ़न की दादी उससे बहुत प्यार करती थी। दादी उसे ढेर सारी कहानियाँ सुनाती थी। इससे स्पष्ट होता है कि टोपी को इफ़्फ़न की दादी बहुत प्रिय थी। उसने तो इफ्फन से दादी बदलने की बात भी कर दी थी।

12. टोपी ने मुन्नी बाबू को रहीम कबाबची की दुकान पर कबाब खाते देखा था और मुन्नी बाबू ने उसे एक इकन्नी रिश्वत की दी थी। टोपी को मुन्नी बाबू का यह रहस्य मालूम था। किंतु वह चुगलखोर नहीं था। इसलिए मुन्नी बाबू का यह रहस्य उसने छुपाकर रखा था।

13. सहयोग, सहानुभूति, प्रेम, अपनापन आदि जीवन मूल्यों के आलोक में हम कह सकते हैं कि इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला के संबंध बेजोड़ थे। टोपी के अपनेपन की पहली खोज पूरी होती है अपने अजीज़ दोस्त इफ़्फ़न में। टोपी शुक्ला अपनी हर एक बात इफ़्फ़न को बताता था। दोनों का बालमन एक-दूसरे से जुड़ चुका था। अतः वे दोनों अपना हर दुख-दर्द एक दूसरे से कहकर अपना मन हल्का कर लेते थे। टोपी का जुड़ाव इफ़्फ़न के साथ ही नहीं बल्कि उसकी दादी और उनकी भाषा से भी हो गया था। अपने घर में अम्मी शब्द के कोहराम पर भी टोपी इफ़्फन के घर जाने से मना नहीं करता और दूसरे दिन इफ़्फ़न को सारी बाते बताते हुए दादी बदलने को कहता था। टोपी को फल खाना पसंद था इसलिए इफ़्फ़न उसे फल खरीदकर खिलाता था और वो भी टोपी के साथ उसी के संबंधों में जुड़ा रहता था।

14.
- आत्मीयता व सच्ची मित्रता
- धार्मिक सद्भाव
- सुख-दुख में सहयोगी होना

व्याख्यात्मक हलः

प्रस्तुत कहानी टोपी शुक्ला में इफ़्फन व टोपी जिगरी दोस्त हैं। दोनों आजाद प्रवृत्ति के हैं। अलग-अलग धर्म के होने पर भी दोनों में आत्मीयता है। दोनों एक-दूसरे के धर्मों का सम्मान करते हैं। सुख-दुःख में सहभागी होते हैं तथा एक-दूसरे के मनोभावों को समझते हैं। इस प्रकार से दोनों धार्मिक सद्भावना के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। दोनों के अनुसार प्रेम न जाने जात-पाँत, प्रेम न जाने खिचड़ी-भात। दोनों अपने प्रेम के आड़े धर्म, जात-पाँत, रहन-सहन, हैसियत व रीति-रिवाज को नहीं आने देते। इस प्रकार वर्णित कहानी यह संदेश देती है कि प्रेम किसी बात का पाबंद नहीं होता।

Smart Notes ....

Smart Notes .....

खण्ड घ

लेखन

लेखन

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न

1. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखो– [5 Marks] [CBSE 2011]

(क) देशाटन

(ख) उत्तराखण्ड की त्रासदी

(ग) श्रम का महत्व

2. व्यापार प्रबन्ध राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी पुस्तकें वी पी पी द्वारा भेजने हेतु एक पत्र लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2018]

अथवा

आपके पिताजी द्वारा एक मास पूर्व प्रेषित जाँच सौ रुपये का मनीऑर्डर अभी तक आपको प्राप्त नहीं हुआ है। अपने क्षेत्र के अधीक्षक, डाक सेवाएँ को इसी सन्दर्भ में पत्र लिखो।

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80–100 शब्दों पर एक अनुच्छेद लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2012]

(क) श्रम का महत्व

तात्पर्य

सफलता का सोपान

भविष्य का निर्माण

(ख) उत्तराखण्ड की त्रासदी

कारण

जनजीवन की क्षति

जनसामान्य का सद्भाव

(ग) देशाटन

अर्थ और नेत्र

नए स्थानों की जानकारी

नए लोगों से मेलजोल

4. आपके विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशभक्तों की जीवनी, चित्र, आदि की प्रदर्शनी लगाई गई, जिसे स्थानीय लोगों ने बहुत सराहा। किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखकर प्रदर्शनी का समाचार प्रकाशित करने का अनुरोध कीजिए।

[5 Marks] [CBSE 2012]

अथवा

आपके विद्यालय में आयोजित 'वन महोत्सव' के अवसर पर वृक्षारोपण से संबंधित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करते हुए पर्यावरण मंत्री, भारत सरकार को पत्र लिखिए।

5. दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए: [5 Marks] [CBSE 2013]

(क) **हमारे देश पर पड़ता प्रभाव**

हमारा देश–इसका प्राचीन रूप तथा संस्कृति

विदेशी प्रभाव

परिणाम

(ख) **भारत में सूखे की समस्या**

सूखे के कारण

प्रभाव

बचने के उपाय

(ग) **देशाटन**

क्या है?

उपयोगिता और साधन

प्रोत्साहन के उपाय

6. विद्यालय में आयोजित सामजिक विज्ञान प्रदर्शनी में अपनी सहभागिता के बारे में मित्र को पत्र लिखिए।

[5 Marks] [CBSE 2012]

अथवा

बरसात के दिनों में जल जमाव के कारण होने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए नगर निगम अधिकारी को पत्र लिखिए।

7. दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए:

[5 Marks] [CBSE 2014]

(क) <u>जीव–जंतु और मानव</u>

सहज संबंध

उपयोगिता

सुझाव

(ख) <u>संयुक्त परिवार</u>

संयुक्त परिवार का अर्थ

संबंधों में पड़ती दरार

जोड़ने से लाभ

(ग) <u>परोपकार</u>

आवश्यकता

लाभ

जीवन में कितना संभव

8. जल–भराव के कारण आपके इलाके में मच्छरों से होने वाली बीमारियों की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य–अधिकारी को पत्र लिखिए।

[5 Marks] [CBSE 2014]

अथवा

जब–तब बिजली की आपूर्ति ठप हो जाने से हो रही कठिनाई को दूर करने के आपेक्षित उपाय करने के लिए बिजली बोर्ड–अधिकारी को पत्र लिखिए।

9. विद्यालय में आयोजित सामाजिक विज्ञान–प्रदर्शनी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को, इसकी उपयोगिता बताते हुए, प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए।

[5 Marks] [CBSE 2015]

अथवा

जल–बोर्ड द्वारा दूषित जल की आपूर्ति के कारण जन–सामान्य को हो रही कठिनाइयों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अध्यक्ष, जल–बोर्ड को एक पत्र लिखिए।

10. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2016]

(क) देशाटन

(ख) विज्ञान के आधुनिक चमत्कार

(ग) शारीरिक श्रम

11. यात्रा करते समय मेट्रों में छूट गए अपने बैग और मोबाइल को मेट्रो कर्मचारी द्वारा आपको वापिस भेज दिए जाने पर उसकी प्रशंसा करते हुए प्रबंधक को पत्र लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2016]

12. विद्यालय के वार्षिकोत्सव की सूचना साहित्यिक क्लब की 'प्राचीर' पत्रिका के लिए लगभग 30 शब्दों में लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2016]

13. बढ़ती महँगाई के संबंध में मित्रा से हुए वार्तालाप को संवाद के रूप में लगभग 50 शब्दों में लिखो।

[5 Marks] [CBSE 2016]

14. अपने पुराने घरेलू फर्नीचर को बेचने के लिए विज्ञापन तैयार करे। [5 Marks] [CBSE 2016]

15. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखो। [5 Marks] [CBSE 2017]

(क) अपनी प्यारी भाषा

(ख) स्वच्छता अभियान

(ग) लड़कियों की शिक्षा

16. आए दिन बस चालकों की असावधानी के कारण हो रही दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को एक पत्र लिखित।

[5 Marks] [CBSE 2017]

17. विद्यालय में साहित्यिक क्लब के सचिव के रूप में 'प्राचीर' पत्रिका के लिए लेख, कविता, निबंध आदि विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत करने हेतु सूचना पट के लिए एक सूचना लगभग 30 शब्दों में लिखिए। [5 Marks] [CBSE 2017]

18. पुस्तक मेले में जाने के लिए उत्सुक पुत्री और उसकी माँ के बीच संवाद को लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

[5 Marks] [CBSE 2017]

19. अपनी पुरानी पुस्तकें गरीब विद्यार्थियों में निःशुल्क वितरण करने के लिए एक विज्ञापन लगभग 25 शब्दों में लिखिए।

[5 Marks] [CBSE 2017]

20. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों का अनुच्छेद लिखिए:

[5 Marks] [CBSE 2018]

(क) भारतीय किसानों के कष्ट

- अन्नदाता की कठिनाइयाँ
- कठोर दिनचर्या
- सुधार के उपाय

(ख) स्वच्छता आंदोलन

- क्यों
- बदलाव
- हमारा उत्तरदायित्व

(ग) मन के हारे हार है मन के जीते जीत

- निराशा अभिशाप
- दृष्टिकोण परिवर्तन
- सकारात्मक सोच

21. बस में छूट गए सामान को आपके घर तक सुरक्षित रूप से पहुँचाने वाले बस कंडक्टर की प्रशंसा करते हुए उसे पुरस्कृत करने के लिए परिवहन अध्यक्ष को एक पत्र लगभग 100 शब्दों में लिखिए।[5 Marks] [CBSE 2018]

अथवा

अपने बैंक के प्रबंधक को पत्र लिखकर अपने आधार कार्ड को बैंक खाते से जोड़ने का अनुरोध कीजिए।

22. आप हिन्दी छात्र परिषद् के सचिव प्रगण्य हैं। आगामी सांस्कृतिक संध्या के बारे में अनुभागीय दीवार पट्टिका के लिए 25-30 शब्दों में सूचना तैयार कीजिए।

[5 Marks] [CBSE 2018]

अथवा

विद्यालय की सांस्कृतिक संस्था 'रंगमंच' की सचिव लतिका की ओर से 'स्वरपरीक्षा' के लिए इच्छुक विद्यार्थियों को यथासमय उपस्थित रहने की सूचना लगभग 20-30 शब्दों में लिखिए। समय और स्थान का उल्लेख भी कीजिए।

23. विद्यालय में मोबाइल फोन के प्रयोग पर अध्यापक और अभिभावक के बीच लगभग 50 शब्दों में संवाद लिखिए।

[5 Marks] [CBSE 2018]

अथवा

स्वच्छता अभियान की सफलता के बारे में दो मित्रों के संवाद को लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

24. अपने विद्यालय की संस्था 'पहरेदार' की ओर से जल का दुरूपयोग रोकने का आग्रह करते हुए लगभग 50 शब्दों में एक विज्ञापन का आलेख तैयार कीजिए।

[5 Marks] [CBSE 2018]

अथवा

विद्यालय की कलाविधि में कुछ चित्र (पेंटिंग्स) बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। इसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

उत्तर माला

1. (क) देशाटन:

देशाटन का मतलब है-देश भ्रमण या देश में घूमना। अर्थात् देश के विभिन्न प्रदेशों में घूमना ही देशाटन कहलाता है। विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति व जलवायु, वहाँ के ऐतिहासिक स्थल, तीर्थ स्थल आदि के बारे में भी जानना देशाटन का मुख्य उद्धेश्य होता है। देशाटन न केवल मनोरंजक होता है, बल्कि ज्ञानवर्धक भी होता है। इसमें हम किसी भी प्रदेश की संस्कृति,रहन-सहन, सभ्यता, भाषा, खान-पान आदि की भी जानकारी प्राप्त करते हैं। देशाटन से हमारा मानसिक विकास तो होता ही है, साथ ही शारीरिक विकास भी होता है। आजकल शिक्षा में भी देशाटन को प्रमुख स्थान दिया गया है। यही कारण है कि आजकल कई स्कूल अपने विद्यार्थियों को देशाटन के लिए अवश्य ले जाते हैं ताकि उनको अपना ज्ञान बढ़ाने का मौका मिले।

(ख) उत्तराखण्ड की त्रासदी

जब भी जलवायु बदलती है, तो तापमान कभी बढ़ता है, तो कभी घटता है जिससे काफी समस्याएँ पैदा हो

जाती हैं। ऐसी ही अनहोनी हमारे देश के उत्तराखण्ड प्रदेश में हुई थी, जब 16 जून 2013 को उत्तराखण्ड में भीषण प्राकृतिक आपदा आई थी। इस आपदा से तो पूरा उत्तराखण्ड ही बर्बाद हो गया था। केदारनाथ धाम की यात्रा के लिए गए देशी तथा विदेशी नागरिक भी इस त्रासदी की चपेट में आ गए थे तो कुछ को तो अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा था। इस तरह की आपदा/मुसीबत आज तक किसी ने अपनी आँखों से नहीं देखी थी। इस प्रकार जो स्थिति उत्तराखण्ड की आज है, वह हम शायद ही कभी भूला पाएँ। धन की हानि तो शायद पूरी हो जाए, लेकिन जन-सामान्य की हानि कभी पूरी नहीं हो पाएगी। घर के घर बह गए, जन-जीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया।

(ग) श्रम का महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह मेहनत में विश्वास भी करता है। इसके अलावा मनुष्य के पास भी नहीं है। हमारे जीवन में मेहनत/श्रम का बहुत महत्व है। भगवान कृष्ण ने भी हमें श्रम तथा कर्म करने का उपदेश दिया है। जो मनुष्य मेहनत करता है, वही पुरूषार्थी कहलाता है। अगर मनुष्य मेहनती नहीं होता तो शायद जो सुविधाएँ आज हमें मिल रही हैं, वह कभी भी न मिलती। कर्म करना ही मनुष्य का जीवन है। अगर हम श्रम नही करते तो गगनडुबी इमारतें, हवाई जहाज, रेलगाड़ियाँ, स्कूटर, टी.वी. सिनेमा तथा कारखाने कभी भी न बनते। श्रम करने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है तथा हमारे जीवन में उन्नति भी होती है।

2. सेवा में,

व्यापार प्रबंधक महोदय,

सरस्वती प्रकाशन

2876/नई सड़क,

नई दिल्ली- 1100002

मान्यवर,

आपसे अनुरोध है कि निम्नलिखित पुस्तकें वी.पी.पी. द्वारा भेजने की कृपा करें। यह आवश्यक है कि पुस्तकें नवीन संस्करण की ही हों। सबकी हालत भी ठीक हो। ये पुस्तकें मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखी गई हैं।

(1) गोदान (2) गबन (3) निर्मला

इन तीनों की 2-2 प्रतियाँ चाहिए।

भवदीय

च छ ज

अथवा

सेवा में,

अधीक्षक महोदय,

डाक सेवाएँ,

नई दिल्ली-110070

दिनांकः 11/7/2018

मान्यवर,

यह पत्र आपको सूचित करते हुए लिखा जा रहा है कि आज से लगभग एक महीने पहले मेरे पिताजी ने मुझे हॉस्टल में 500 रुपये मनीआर्डर कर के भेजे थे। इस बात को घटित हुए लगभग एकमास हो चुका है, लेकिन पैसे आज तक मेरे पास नहीं पहुँचे हैं। आपसे अनुरोध है कि इस समस्या की ओर ध्यान दें तथा मेरे पैसे मुझ तक पहुँचाने की शीघ्र अति शीघ्र व्यवस्था करें।

धन्यवाद।

भवदीय

क ख ग

3. (क) श्रम का महत्वः

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा वह मेहनत में विश्वास भी करता है। इसके अलावा मनुष्य के पास कुछ भी नहीं है। हमारे जीवन में मेहनत/श्रम का बहुत महत्व है। भगवान कृष्ण ने भी हमें श्रम तथा कर्म करने का आदेश दिया है। जो मनुष्य मेहनत करता है, वही पुरुषार्थी कहलाता है। अगर मनुष्य मेहनती नहीं होता तो शायद जो सुविधाएँ आज हमे मिल रही हैं वह कभी-भी न मिलती। कर्म करना ही मनुष्य का जीवन है। अगर हम श्रम नहीं करते तो गगनचुंबी इमारते, हवाई जहाज़, रेलगाड़ियाँ, स्कूटर, टी.वी, सिनेमा तथा कारखाने कभी भी न बनते। श्रम करने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है, तथा हमारे जीवन में उन्नति भी होती है।

(ख) **उत्तराखण्ड की त्रासदीः**

जब भी जलवायु बदलती है, तो तापमान कभी बढ़ता है, तो कभी घटता है जिससे काफी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं। ऐसी ही अनहोनी हमारे देश के उत्तराखण्ड में भीषण प्राकृतिक आपदा आई थी। इस आपदा से तो पूरा उत्तराखण्ड ही बर्बाद हो गया था। केदारनाथ धाम की यात्रा के लिए गए देशी तथा विदेशी नागरिक भी इस त्रासदी की चपेट में आ गए थे तथा कुछ को तो अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा था। इस तरह की आपदा/मुसीबत आज तक किसी ने अपनी आँखों से नहीं देखी थी। इस प्रकार जो स्थिति उत्तराखण्ड कर आज है, वह हम शायद ही कभी भुला पाएँ। धन की

हानि तो शायद पूरी हो जाए, लेकिन जन-सामान्य की हानि कभी पूरी नहीं हो पाएगी। घर के घर बह गए, जन-जीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया।

(ग) देशाटनः

देशाटन का मतलब है- देश भ्रमण या देश में घूमना अर्थात् देश के विभिन्न प्रदेशों में घूमना ही देशाटन कहलाता है। विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति व जलवायु, वहाँ के ऐतिहासिक स्थल, तीर्थ स्थल आदि के बारे में भी जानना देशाटन का मुख्य उद्देश्य होता है। देशांटन न केवल मनोरंजन होता है, बल्की ज्ञानवर्धक भी होता है। इसमें हम किसी भी प्रदेश की संस्कृति, रहन सहन, सभ्यता, भाषा खान-पान आदि की भी जानकारी प्राप्त करते है। देशाटन हमारा मानसिक विकास तो होता ही है, साथ ही शारीरिक विकास भी होता हैं आजकल शिक्षा में भी देशाटन को प्रमुख स्थान दिया गया है। यही कारण है कि आजकल कई स्कूल अपने विद्यार्थियों को देशाटन के लिए अवश्य ले जाते है ताकि उनको अपना ज्ञान बढ़ाने का मौका मिले।

4. सेवा में,

मुख्य सम्पादक

हिन्दुस्तान,

बाहदुर शाह ज़फर मार्ग,

नई दिल्ली।

विषय - स्वतन्त्रता दिवस पर लगाई गई प्रदर्शनी की जानकारी हेतू पत्र।

महोदय,

मैं अपने पसंदीदा अखबार के द्वारा अपने विद्यालय में लगाई गई प्रर्दशनी की जानकारी शहर के सभी लोगों तक पहुँचाना चाहती हूँ। महोदय, हमारे विद्यालय 'क.ख.ग.' में स्वतत्रन्ता दिवस पर हमारे स्वाधीनता सेनानियों के चित्र तथा उनके जीवन के बारे में प्रदर्शनी लगाई थी। हमारे विद्यालय में बहुत सारे स्थानीय लोग भी प्रदर्शनी देखने आए थे। उन्होंने भी इस प्रदर्शनी को बहुत ही शौक से देखा तथा इसे सराहा भी था।

अतः मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि आप हमारे विद्यालय की प्रदर्शनी की जानकारी आप अपने समचार पत्र में प्रकाशित करो, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोगों तक हमारे विद्यालय की प्रदर्शनी के बारे में खबर पहुँचे।

सधन्यवाद।

भवदीय,

च, छ, ज।

वसन्त कुँज,

नई दिल्ली।

अथवा

सेवा में,

पर्यावरण मंत्री,

भारत सरकार,

नई दिल्ली।

दिनाँक - 10/7/18

विषय - 'वन महोत्सव' के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित करते हुए पत्र।

महोदय,

मैं च. छ.ज. दिल्ली के एक प्रतिष्ठित विद्यालय 'क.ख.ग.' का विद्यार्थी हूँ। आने वाली 20 जुलाई को हमारे विद्यालय में 'वनमोहत्सव' मनाया जा रहा है। इस महोत्सव का शुभारम्भ करने के लिए आप से बढ़कर कौन होगा। अतः आप से निवेदन है कि इस अवसर के लिए आप कुछ वक्त निकालें तथा हमारे विद्यालय में होने वाले इस उत्सव का श्री गणेश करें। आपकी अति कृपा होगी। हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी,

प, फ, ब।

5. (क) हमारे देश पर पड़ता विदेशी प्रभाव

हमारा देश हमारी संस्कृति का परिचालक है। ऐसा कहा जाता है कि सबसे प्राचीन देशों तथा संस्कृति में भारत का स्थान सबसे पहला है। हमारे भारत में सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय थे, जहाँ पर विदेशों से लोग पढ़ाई करने के लिए आते थे। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता इतनी विशाल तथा पुरानी है कि लोग इस स्थान की सभ्यता पर अनुसंधान करने आते रहे हैं। लेकिन वर्तमान समय में हालात इतने बदल गए हैं कि अब हमारे युवा भारत में रहने को भी तैयार नहीं है। आज युवा वर्ग भारतीय खाना भी नहीं खाते या बहुत कम खाते हैं। भारतीय परिधान भी न के बराबर रह गए है। यहाँ तक कि जीवन शैली भी विदेशी अपनाने लगे हैं। यहाँ तक कि भाषा भी हिंदी की बजाए विदेशी बोलने लगे हैं। इस प्रकार हर तरफ से हमारे देश पर विदेशियों का प्रभाव पड़ रहा हैं, जोकि काफी चिंतनीय है। कही ऐसा न हो कि जो स्थिति वर्तमान में है,वह बढ़ न जाए। समय रहते हमें अपनी संस्कृति को बचाना होगा। अपने देश की पहचान को कायम रखना होगा।

(ख) **भारत में सूखे की समस्या**

आज के समय में जलवायु में बहुत परिवर्तन आ रहे हैं, जिसकी वजह से कभी गर्मी ज्यादा पड़ जाती है तो कभी सर्दी ज्यादा पड़ जाती है। कभी बरसात की मात्रा इतनी ज्यादा हो जाती है कि बाढ़ें आ जाती हैं। जब कभी मौसम में गर्मी ज्यादा हो जाती है तो वर्षा ऋतु का समय कम हो जाता है और बारिशें या तो कम होती हैं या फिर होती ही नही हैं, जिसकी वजह से अकाल या सूखा पड़ जाता है। बारिश की कमी की वजह से किसानों का हाल बहुत खराब हो जाता है। फसलें खराब हो जाती हैं तथा जो फसलें सही होती है, वे बाजार में ऊँचें दामों पर बिकती है। कई बार तो सूखे या अकाल की वजह से किसानों की मानसिक दशा इतनी खराब हो जाती है कि वे आत्महत्या कर बैठते हैं। कुदरत की मार से कई परिवार नष्ट हो जाते हैं लेकिन ऐसा न हो, तो उसके लिए हमें काफी उपाय सोचने होंगे। जैसे ऐसी कृषि तकनीक अपनाई जाए कि जिसमें कम पानी लगे, वर्षा के पानी को एकत्रित करके रख जाए। पानी की बरबादी को रोका जाए तथा पानी को प्रदूषित होने से रोका जाए, तो शायद सूखे/अकाल का सामना किया जा सकता है।

(ग) **देशाटन**

देशाटन का मतलब है- देश भ्रमण या देश में घूमनां। अर्थात् देश के विभिन्न प्रदेशों मे घूमना ही देशाटन कहलाता है। विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति व जलवायु, वहाँ के ऐतिहासिक स्थल, तीर्थ स्थल आदि के बारे में जानना देशाटन का मुख्य उद्देश्य होता है। देशाटन न केवल मनोरंजक होता है, बल्कि ज्ञानवर्धक भी होता है। इसमें हम किसी भी प्रदेश की संस्कृति, रहन-सहन, सभ्यता, भाषा, खान-पान आदि की भी जानकारी प्राप्त करते है। देशाटन हमारा मानसिक विकास तो होता ही है, साथ ही शारीरिक विकास भी होता है। आजकल शिक्षा में भी देशाटन को प्रमुख स्थान दिया गया है। यही कारण है कि आजकल कई स्कूल अपने विद्यार्थियों को देशाटन के लिए अवश्य ले जाते है ताकि उनकों अपना ज्ञान बढ़ाने का मौका मिले।

6. परीक्षा भवन,

नई दिल्ली -110070

कः खः गः

दिनाँक – 10/07/18

प्रिय राजेश,

स्नेह,

कहो कैसे हो? आशा करता हूँ के आप सब कुशलता पूर्वक होंगे। हम सब भी यहाँ ठीक-ठाक हैं।

आपकों यह जानकर खुशी होगी कि हमारे विद्यालय में पिछले सप्ताह एक विज्ञान प्रदर्शनी लगी थी। जिसमें मैने भी हिस्सा लिया था। इस प्रदर्शनी में मेरा ज्ञान भी बहुत बढ़ा तथा मज़ेदार अनुभव भी रहा। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य भी विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रूचि तथा जागरूकता फैलाना था, जो काफी हद तक सफल भी रहा। इस प्रकार मुझे इस प्रदर्शनी का हिस्सा बन कर काफी अच्छा लगा।

चलो, अब पत्र बंद करता हूँ। आशा करता हूँ कि तुम्हें भी मेरी बातों से कुछ जानकारी मिली होगी। मेरे पत्र का जवाब जरूर देना।

घर में सबकों प्रणाम कहना।

तुम्हारा दोस्त,

च छ ज।

अथवा

सेवा में,

नगर निगम अधिकारी,

नई दिल्ली - 110070

दिनांक – 10/07/18

विषय – बरसात में जल भराव के कारण होने वाली कठिनाइयों को दूर करने हेतु शिकायती पत्र।

महोदय,

मैं क; ख; ग, वसन्त कुँज, दिल्ली 110070 का निवासी हूँ। हमारे वसंत कुँज में बरसात के मौसम में बहुत जल भराव हो जाता है। क्योंकि यहाँ सफाई की उचित व्यवस्था नही है। नादियाँ तथा सड़के पानी तथा गदंगी से सरोतर हैं। यहाँ तक कि घरों के आगे भी 2-3 फुट तक पानी जमा हो जाता है, जिसमें कि घर से निकलना मुश्किल हो जाता है। बच्चे विद्यालय नही जा पा रहे है, बड़े लोग भी अपने काम पर नहीं जा पा रहे हैं। वे घर जो सड़क से नीचे हैं, उन घरों में तो बारिश का पानी भी भर गया है। इस प्रकार हम सब निवासियों को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

आपसे अनुरोध है कि आप इस समस्या का निदान शीघ्र अति शीघ्र करें। ताकि हमारी समस्या का निवारन हो पाए। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद!

भवदीय

क; ख; ग;

वसन्त कुँज निवासी

7. (क) **जीव जंतु और मानव**

प्रकृति ने मनुष्य और जीव जंतु को जीने तथा रहने के लिए बहुत जगह दी है। कहने का अभिप्राय है कि प्रकृति में मानव तथा जीव जंतु दोनों मिल-जुल कर रहते हैं। इन दोनों का आपसी संबंध भी बहुत गहरा है। जीव जंतु हमें बहुत कुछ देते हैं, बदले में उन्हें बस सुरक्षित रखने का अधिकार कर्तव्य हमारा होना चाहिए। हमारी दैनिक जरूरतों के लिए भी जीव जंतु बहुत मदद करते हैं, जैसे उनसे हमें दूध मिलता है, अण्डे मिलते हैं, यहाँ तक कि माँसाहारी लोगों के लिए तो वो अपने को बलिदान भी कर देते हैं। उनसे हमें शहद, ऊन रेशमी कपड़े तथा अन्य बहुत सारी उपयोगी चीजें भी मिलती हैं। इसलिए हमें उन जीव जंतुओं के साथ सहज संबंध बनाकर रखने चाहिए। उनके साथ क्रूरता से पेश नहीं आना चाहिए। कुत्ते तो हमारे घरों की रखवाली करते हैं। इसी प्रकार अन्य जानवर भी किसी न किसी रूप में हमारी मदद करते हैं। इस प्रकार जीव जंतुओं को सुरक्षित रखना बहुत जरूरी है।

(ख) **संयुक्त परिवार**

भारत संयुक्त परिवार प्रणाली के लिए प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध है। यहाँ पर अधिकतर लोग संयुक्त परिवार में ही रहते हैं। परिवार का अर्थ होता है, घर के सभी सदस्य जब एकसाथ मिलकर एक ही छत के नीचे रहते हैं एवं उस घर में एक ही रसोईघर होता हैं। संयुक्त परिवार का एक लाभ यह होता है कि कोई भी मुसीबत आने पर सब लोग एक हो जाते हैं तथा मुसीबत का डट कर मुकाबला करते हैं। भारत भी संयुक्त परिवार का एक उदाहरण है, जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग मिल-जुल कर रहते हैं। कहते हैं कि एकता में बल/शक्ति होती है इसलिए हमेशा मिल-जुल कर ही रहना चाहिए। लेकिन आज के समय संयुक्त परिवार प्रणाली खत्म होती जा रही है। एक हीं परिवार के सदस्यों के आपसी संबंध बिगड़ते जा रहे हैं। हर व्यक्ति को निजी जीवन पंसद है तथा वह अपनी आजादी भी चाहता है लेकिन संयुक्त परिवार की बात अलग ही होती है।

(ग) **परोपकार**

परोपकार दो शब्दों से मिलकर बना है- पर+उपकार- जिसका अर्थ है -दूसरों का भला करना। जब हम बिना किसी स्वार्थ के दूसरों के लिए कोई काम करते हैं जो वह परोपकार ही होता है। यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी इस भावना से भरे होते हैं। प्रकृति भी हमें परोपकार का संदेश देती है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो पशु-पक्षियों से अलग है। नदियाँ भी दूसरों के लिए पानी देती है, वृक्ष फल, पत्ते, छाया, सब्ज़ियाँ तथा दवाइयाँ देते हैं, गाय-भैसों से दूध तथा वायु से ऑक्सीजन मिलती है। पशु-पक्षी तो अपने आप को या अपने शरीर को मनुष्य को खाने के लिए दे देता है। इस प्रकार यह त्यागमय भावना हमें भी दूसरों का भला करने के लिए प्रेरित करती है। हम भी परोपकार कर सकते हैं, उसके भी अलग रूप हैं। हम अपनढ़ को पढ़ा सकते हैं, भूखे को खिला सकते हैं, बीमार को दवा दिला सकते हैं, पेड़ लगा सकते हैं, अंधों को सड़क पार करवा सकते हैं। यही सच्चा परोपकार है क्योंकि हम यहाँ निस्वार्थ भाव से काम कर रहे हैं।

8. सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारी,

संसद मार्ग,

नई दिल्ली।

दिनाँक - 10/07/18

विषय - जल भराव के कारण इलाके में मच्छरो से पैदा होने वाली बीमरियों की रोकथाम हेतु पत्र।

महोदय,

मैं कः खः गः वसंत कुँज निवासी आपसे अपने इलाके में होने वाली परेशनियों की रोकथाम के लिए पत्र लिखना चाहता हूँ।

आप तो जानते ही हैं कि बरसात का मौसम चल रहा है लेकिन गलियों तथा कॉलोनियों में पानी निकलने की सही व्यवस्था न होने की वजह से बरसात का पानी गलियों में जमा हो रहा है। घरों के आगे तो पानी 2-2 फुट तक जमा हो गया है, जिसकी वजह से घर से निकलना भी कठिन हो गया है। इसके अलावा जल भराव की वजह से काफी मच्छर पैदा हो रहे हैं, जिसकी वजह से बीमरियाँ भी होगीं। हर गली-मौहल्ले में स्थिति गंभीर हो जाएगी। अतः आपसे निवेदन है कि आप शीघ्रअति शीघ्र इस जल भराव की समस्या को निपटाने का प्रयास करे। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद!

भवदीय

वसंत कुँज निवासी

कः खः गः।

अथवा

सेवा में,

बिजली बोर्ड अधिकारी,

वसंत कुँज, नई दिल्ली।

दिनाँक - 10/07/18

विषय- बिजली की आपूर्ति ठप्प होने पर होने वाली कठिनाइयों को दूर करने के अपेक्षित उपाय करने हेतु पत्र।

महोदय,

मैं कः खः गः वसंत कुँज निवासी आपसे अपने इलाके वसंत कुँज में ठप होने वाली बिजली आपूर्ति से हो रही परेशानी को दूर करने के उपाय करने का अनुरोध करना चाहती हूँ।

पिछले कुछ दिनों से हमारे वसंत कुँज में लगातार बिजली जाने की समस्या हो रही है। कभी दिन में बिजली नहीं होती तो कभी रात में। गर्मी के मारे सबका बुरा हाल हो रहा है। उसके अलावा बिजली से होने वाले सभी काम रूक गए हैं। जिससे बहुत परेशानी हो रही है। आप से निवेदन है कि आप कृपा करके इस समस्या पर ध्यान दे ताकि हम सब वसंत कुँज निवासियों को राहत मिल सके।

सधन्वाद।

भवदीय,

वसंत कुँज निवासी।

9. सेवा में,

संपादक महोदय

हिन्दुस्तान, नई दिल्ली।

दिनाँक - 12/07/18

विषय - विद्यालय में आयोजित सामजिक-विज्ञान प्रदर्शनी का विवरण।

महोदय,

मैं कः खः गः वसंत कुँज, दिल्ली पब्लिक स्कूल का विद्यार्थी हूँ। मैं यह पत्र आपको यह बताने के लिए लिख रहा हूँ कि हमारे विद्यालय में हाल ही में 'सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी' लगी थी। इस प्रदर्शनी में दिल्ली के बहुत से स्कूलों ने हिस्सा लिया था। इस प्रदर्शनी को लगाने का उद्देश्य समाज की नीतियों तथा व्यवस्थाओं को समाज के लोगों को बताना था। साथ ही यह भी जोडना चाहता हूँ कि सामाजिक विज्ञान अच्छे नागरिक बनाने में भी काफी योगदान देता है।

इस प्रदर्शनी का उद्घाटन सामाजिक नेत्री श्रीमती नीलम खन्ना ने किया था। उन्होंने स्कूलों में सामाजिक विज्ञान पढ़ाने का समर्थन किया साथ ही उत्साहित भी किया कि इस प्रदर्शनी के जरिए लोगों में सामाजिक-विज्ञान के प्रति रूचि उत्पन्न की जा रही है। साथ ही लोग जागरूक भी हो रहे हैं। कुल मिलाकर कर यह प्रदर्शनी काफी सफल रही और मै चाहता हूँ कि आप इस प्रदर्शनी के बारे में अपने समाचार पत्र में लिखें ताकि अधिक से अधिक लोगों को इस विज्ञान के बारे में पता चले।

आशा है आप मेरी प्रार्थना पर ग़ौर करेंगे।

सधन्यवाद!

भवदीय

कः खः गः।

दिल्ली पब्लिक स्कूल

नई दिल्ली - 70

अथवा

सेवा में,

जल बोर्ड अधिकारी,

जल बोर्ड, नई दिल्ली।

दिनांक - 12/07/18

विषय- दूषित जल की वजह से हो रही कठिनाइयों की तरफ ध्यान।

महोदय,

मैं कः खः गः वसंत कुँज निवासी हमारे इलाके में हो रही दूषित जल आपूर्ति की तरफ इस पत्र के जरिए ध्यान दिलाना चाहता हूँ। हमारे घरों में लगभग पिछले सप्ताह से गंदे पानी की सप्लाई हो रही है। पानी पीने लायक तो बिल्कुल ही नहीं है, साथ ही अन्य कार्यों के लिए भी उपयोग नहीं है। इस समस्या की वजह से हम वसंत कुँज निवासियों को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। दूषित जल पीकर तो कुछ लोगों की हालत बहुत खराब हो रही है। आपसे निवेदन है कि आप जल्द से जल्द इस समस्या से हमें मुक्त करवाएँ। आपकी अति कृपा होगी।

सधन्यवाद।

भवदीय,

वसंत कुँज निवासी।

10. (क) देशाटन

देशाटन का मतलब है-देश भ्रमण या देश में घूमना। अर्थात् देश के विभिन्न प्रदेशों में घूमना ही देशाटन कहलाता है। विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति व जलवायु, वहाँ के ऐतिहासिक स्थल, तीर्थ स्थल आदि के बारे में भी जानकारी एकत्र करना देशाटन का मुख्य उद्देश्य होता है। देशाटन न केवल मनोरंजक होता है, बल्कि ज्ञानवर्धक भी होता है। इसमें हम किसी भी प्रदेश की संस्कृति,रहन-सहन, सभ्यता, भाषा, खान-पान आदि की भी जानकारी प्राप्त करते हैं। देशाटन से हमारा मानसिक विकास तो होता ही है, साथ ही शारीरिक

विकास भी होता है। आजकल शिक्षा में भी देशाटन को प्रमुख स्थान दिया गया है। यही कारण है कि आजकल कई स्कूल अपने विद्यार्थियों को देशाटन के लिएअवश्य ले जाते हैं ताकि उनको अपना ज्ञान बढ़ाने का मौका मिले।

(ख) विज्ञान के आधुनिक चमत्कार

अगर कहा जाए कि आज का युग विज्ञान का युग है तो गलत नहीं होगा। आज हम तकनीकी के सहारे न जाने कितने काम करते हैं। इस तकनीक ने हमारे जीवन को बहुत आराम दिया है। हमारी जिन्दगी को आसान बना दिया है। हर दिन हमारी आँखों के सामने न जाने कितने चमत्कार होते हैं। जैसे सुबह उठते ही अखबार हमारे घरों में पहुँचती है। यह विज्ञान की ही बदौलत है। हमारे घर में जितने भी इलेक्ट्रॉनिक्स के सामान हैं फ्रिज, टी.वी., ए.सी., माइक्रोवेब, पंखा आदि ये सब भी विज्ञान की देन है। विज्ञान के द्वारा ही हम एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचते हैं। इसी के द्वारा हम बड़ी-से-बड़ी बीमारियों पर जीत पा सकते हैं। विज्ञान की वजह से अंधविश्वास भी खत्म हो रहा है। इस प्रकार विज्ञान ने हमारे जीवन में चमत्कार ला दिया है। लेकिन इसके नुकसान भी बहुत हैं-जैसे मनुष्य ने अब अपने हाथों से काम करना बन्द कर दिया है या कम कर दिया है। विज्ञान के द्वारा देश की रक्षा के लिए हथियार भी बनवाए तो गए हैं लेकिन कई बार ये नुकसानदायक भी हो जाते हैं। इसकी वजह से बेकारी तथा बेरोजगारी की समस्या बढ़ती जा रही है।

(ग) शारीरिक श्रम

हमारे जीवन में शारीरिक श्रम की बहुत आवश्यकता है। जब हम शारीरिक श्रम नहीं करते हैं तब हमारा मोटापा भी बढ़ जाता है। हर दिन शारीरिक श्रम करने से न केवल हमारा दिमाग स्वस्थ रहता है बल्कि शरीर पर पभी इसका असर दिखाई देता हे। इससे हमारा दिल भी मजबूत होता है। यह हमारे मूड को भी ठीक करता है। आत्मविश्वास बढ़ाता है। लेकिन आज आधुनिकता की चमक-दमक भरी जिन्दगी में हमारे पास शारीरिक श्रम के लिए समय ही नहीं है। शहरों में तो लोग शारीरिक श्रम करना भूल ही गए हैं। अब हर काम के लिए मशीनें आ गई है इसलिए लोग मोटे होते जा रहे हैं तथा बीमारियों से ग्रस्त होते जा रहे हैं। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि आज का युवा श्रम नहीं करता जिसकी वजह से वह देश की रक्षा करने में कमजोर होगा क्योंकि वह स्वस्थ ही नहीं होगा। हमें इस ओर ध्यान देने की बहुत आवश्यकता है तथा बच्चों को स्वस्थ तथा सक्षम बनाने की तरफ ध्यान देने की भी जरूरत है।

11. सेवा में,

मैट्रो प्रबन्धक अधिकारी,

दिल्ली मैट्रो

दिनांक 12/07/2018

विषय-मैट्रो में छूटे सामान वापिस मिलने पर मैट्रो कर्मचारी की प्रशंसा हेतु पत्र।

महोदय,

मैं क. ख. ग. दिल्ली निवासी आपको धन्यवाद करते हुए तथा उस कर्मचारी की प्रशंसा करने के लिए पत्र लिख रहा हूँ जिसने मेरा मोबाइल तथा बैग को मुझ तक वापिस लौटा दिया। यह पिछले सप्ताह की बात है जब मैं हुडा सिटी सेन्टर से मैट्रो में बैठा था। मुझे सबसे आखिरी स्टेशन पर उतरना था। मैं एक कोनेवाली सीट पर बैठा-बैठा सो गया। मेरा बैग सीट के नीचे पड़ा हुआ था और मोबाइल भी उसमें था। जब मेरा स्टेशन आया तो मैं जल्दी से जागा और बिना सामान लिए ही ट्रेन से उतर गया। जब मैं नीचे पहुँचा अहसास हुआ कि मेरा मोबाइल व बैग दोनों ट्रेन में रह गए थे। मेरे तो पसीने छूट गए। तब मैं कस्टमर केयर/ग्राहक सेवा केन्द्र पर गया और वहाँ जाकर अपनी समस्या बताई। उन्होंने मुझे जल्द ही मोबाइल तथा बैग ढुढँवाने का भरोसा दिया। मैं यह सब सुनकर घर वापिस आ गया।

लेकिन अगले दिन ही मेरे घर के पते पर मैट्रो कर्मचारी मेरा सामान तथा बैग लेकर हाजिर हो गया। मेरे बैग पर ही मेरा पता भी लिखा हुआ था। बैग का सारा सामान ज्यों का त्यों था। मैंने उनको तथा उनकी ईमानदारी को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। इसी संदर्भ में मैंने यह पत्र आपको लिखा है। आशा है आप मेरे धन्यवाद को स्वीकार करेंगे।

भवदीय,

दिल्ली निवासी।

12. दिल्ली पब्लिक स्कूल

वसन्त कुँज

दिनांक 12/07/2018

आवश्यक सूचना

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि 25/08/2018 को हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा। जिसे भी इस कार्यक्रम में भाग लेना है, वह शीघ्रातिशीघ्र अपना नाम विद्यालय की प्रबंधक कमेटी में दे दें। नाम देने की अंतिम तिथि 25/07/2018 है।

छात्र संघ

13. राहुल – राजेश, कैसे हो?

राजेश–क्या बताऊँ, बहुत ही बुरा हाल है।

राहुल–क्यों क्या हो गया? इतने परेशान क्यों हो?

राजेश–दोस्त, महंगाई इतनी बढ़ती जा रही है कि आम खाना भी महँगा पड़ रहा है।

राहुल – हाँ, यह बात तो मुझे भी कचोट रही है। पर क्या करें।

राजेश–पर हमारी तन्ख्वाह तो उतनी की उतनी है। उसमें गुजारा कैसे हो?

राहुल – यह तो सच है कि आधे महीने में ही वेतन खत्म हो जाता है।

14. सेल! सेल! सेल!

बहुत ही अच्छी दशा में आकार का सोफा है। साथ में एक सुन्दर तथा मजबूत मेज भी है। मैं क. ख. ग. इसे बेचना चाहता हूँ, क्योंकि मेरा ट्रांसफर हो गया है, और मैं जिस शहर में जा रहा हूँ, वहाँ मुझे जो घर मिलने वाला है, वहाँ फर्नीचर पहले से ही है। आप मुझसे 9891502800 पर संपर्क कर सकते हैं।

धन्यवाद।

15. (क) **अपनी प्यारी भाषा**

हर इन्सान को अपनी भाषा प्यारी होती है। भाषा कैसी भी हो, कोई भी हो, उसके बिना दुनिया चल नहीं सकती। हम तो इन्सान हैं यहाँ तो पशु-पक्षियों की भी अपनी भाषा होती है। इस भाषा के द्वारा वे अपने सभी भाव प्रकट करते हैं। हम हिन्दुस्तान के नागरिक हैं तो हमारी भाषा हिन्दी है, जो राष्ट्रभाषा भी है। यह भाषा हमें बहुत प्यारी है। क्योंकि बचपन से ही हमें बोलचाल हिन्दी भाषा में ही करवाई गई है। इसलिए हमें हिन्दी का प्रयोग करते हुए कोई शर्म नहीं महसूस करनी चाहिए।

हिन्दी भाषा में बहुत सारी भाषाओं के शब्द हैं- जैसे अंग्रेज़ी, उर्दू, पुर्तगाली, फ्रेंच, स्पेनिश आदि। हमारे बैंकों, कार्यालयों तथा अन्य दफ्तरों में हिन्दी भाषा का प्रयोग होना शुरू हो गया है। हमारे काम भी हिंदी भाषा में ही होने चाहिए। इससे हिन्दी का प्रचार-प्रसार भी काफी बढ़ेगा। सभी तरह के बिल भी हिन्दी में हो। इस प्रकार हमें अपनी भाषा का सम्मान करना चाहिए तथा उस पर गर्व महसूस करना चाहिए।

(ख) **स्वच्छता अभियान**

स्वच्छता अभियान एक राष्ट्रीय अभियान है, जो हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महात्मा गाँधी जी की 145 वीं पुण्य तिथि पर 2 अक्तूबर, 2015 को आरम्भ किया था। यह एक ऐसा अभियान है, जो कि शहरों तथा गाँवों की सफाई के लिए शुरू किया गया था। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई तथा देश के बुनियादी ढांचों को बदलना आदि शामिल है। स्वच्छता अभियान देश भक्ति से प्रेरित अभियान है। यह 'राजनीति मुक्त' अभियान है। यह प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व के अधिकतर लोगों ने पहल की है। शिक्षक तथा विद्यार्थी इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। किस पेड़ की शाखाओं की तरह इस मिशन का उद्देश्य भी भारत के हर सदस्य को जोड़ना है, चाहे वे किसी भी व्यवसाय से हो। इस प्रकार स्वच्छता अभियान को चलाए रखना है ताकि सम्पूर्ण भारत स्वच्छ तथा साफ हो जाए।

(ग) **लड़कियों की शिक्षा**

शिक्षा हम सबके जीवन के लिए बहुत ज़रूरी है चाहे हम लड़का हों या लड़की। शिक्षा किसी भी व्यक्ति को एक निपुणता/कौशल देती है। जिससे कि हम नई चीज़ें सीख सकते हैं। महिलाएँ हमारे देश की आबादी का आधा हिस्सा है। इसलिए भी लड़कियों या महिलाओं के लिए भी शिक्षा बहुत ज़रूरी है। यह तो सबको पता है कि महिलाएँ/लड़कियाँ लड़कों से बेहतर काम कर सकती हैं। प्रारम्भिक काल में लड़कियों को पढ़ाया नहीं जाता था। लेकिन आज हमारे देश में इतनी तरक्की तो हो गई है कि अब हमारी लड़कियाँ पढ़ाई-लिखाई करती है तथा आसमान तक जा पहुँची है। आज महिलाएँ भी देश का भविष्य है। वे घर तथा कार्य दोनों को अच्छे से सँभाल सकती है। बेहतर अर्थव्यवस्था और बेहतर समाज लड़कियों की शिक्षा का ही नतीजा है। सबको पता है कि शिक्षा सबकी सोच का नज़रीया बदल देती है। इसलिए अगर हमारे समाज को बेहतरीन बनाना है तो महिलाओं की शिक्षा पर ज़रूर ध्यान देना चाहिए।

16. सेवा में

संपादक

दैनिक जागरण

नई दिल्ली

विषय –बस चालकों की असावधानी के कारण हो रही दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए पत्र।

मान्यवर,

आज मैं अत्यंत चिंतित मन से आपको पत्र लिख रहा हूँ। यह बहुत ही चिंता का विषय है आजकल बस चालकों की असावधानी के कारण दुर्घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही

है। बस चालकों के द्वारा यातायात के नियमों का पालन नहीं किया जाता। वे बहुत तेज गति से बसें चलाते हैं। जिस वजह से वह किसी और वाहन से टकरा जाते हैं और कभी कभार और अक्सर यह दुर्घटना भीषण रूप भी ले लेती है। बस चालकों की इन सावधानियों की वजह से कई मौतें हो जाती हैं। किसी-किसी का तो परिवार ही उजड़ जाता है।

आशा है कि आप अपने समाचार पत्र के द्वारा अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करेंगे।

भवदीय

नेहा

संजय नगर, नई दिल्ली.

17. **विद्यालय संबंधी सूचना**

विद्यालय के समस्त छात्र छात्राओं को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में साहित्यिक क्लब के सचिव के रूप में प्राचीर पत्रिका छापी जानी है। पत्रिका के लिए एक लेख, कविता, निबंध आदि प्रस्तुत करना चाहता है, वह एक सप्ताह के अंदर दिनांक 10-08-2018 तक कार्यालय में या अपने कक्षा अध्यापक के पास अवश्य प्रस्तुत करें।

18. पुत्री – मां, प्रगति मैदान में पुस्तक मेला लगा है।

माता – अरे वाह! यह तो बहुत अच्छी बात है।

पुत्री – आप मेरे साथ मेले में चलें वहां बहुत ही भीड़ होती है।

माता – कितने दिन तक यह मेला लगा है?

पुत्री – 1 सप्ताह के लिए लगा है।

माता – तुम्हें कौन-कौन सी पुस्तकें खरीदनी है?

पुत्री – मुझे ज्ञानवर्धक पुस्तकें, सामान्य ज्ञान की, विज्ञान आदि पुस्तके लेनी है।

माता – अब तो रात हो गई है, कल चलेंगे।

पुत्री – ठीक है, कल अवश्य चलेंगे। ऐसी पुस्तक पढ़ने से ज्ञान में वृद्धि होती है।

माता – ठीक है।

19. **निःशुल्क पुस्तक वितरण**

जिन विद्यार्थियों को पुस्तकों की आवश्यकता है और जो विद्यार्थी पुस्तक नहीं खरीद पाते, वे निम्न पते पर आकर पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

पुस्तकें निः शुल्क दी जाएंगी, इच्छुक विद्यार्थी ही संपर्क करें।

8526232925

12/24, करोल बाग,

नई दिल्ली

20. (क) भारतीय किसानों के कष्ट

गाँधीजी ने कहा था– ''भारत का हृदय गाँवों में बसता है। ये किसान ही नगरवासियों के अन्नदाता हैं, सृष्टि पालक हैं।''

अशिक्षा ही भारतीय कृषक के पतन का मूल कारण है। शिक्षा के अभाव के कारण कृषकों का आज भी शोषण होता है। अंधविश्वास और रूढ़िवादिताएँ उसके जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। आज भी वह अनेक कुरीतियों से घिरा है। वह धरती की छाती को चीरकर, हल चलाकर अन्न पैदा करता है किन्तु उसके परिश्रम का फल व्यापारी लूट ले जाता है। किसानों की दुर्दशा को ध्यान में रखते हुए सरकार को किसानों का कर्ज माफ कर देना चाहिए, तथा किसानों के लिए सरकार को लघु उद्योग लगाने की व्यवस्था करनी चाहिए। सरकारी तंन्त्र को किसानों के हक में ईमानदारी से कदम उठाने चाहिए जिससे उसे उनके परिश्रम का उचित पारिश्रमिक मिले। साथ ही कृषि को व्यावहारिक बनाने के लिए अनुबंध कृषि को एक विकल्प के रूप में अपनाने पर जोर दें, ताकि किसानों की सफलता की संभावना को अधिकतम किया जा सके।

भारत का किसान बड़ा परिश्रमी है। वह गर्मी-सर्दी तथा वर्षा की परवाह किए बिना अपने कार्य में जुटा रहता है।

भारतीय किसान का जीवन कठिनाई युक्त तथा कष्टपूर्ण है। दिन-रात कठोर परिश्रम करने के बाद वह जीवन की आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर पाता है। न उसे पेट-भर भोजन मिलता है और न शरीर ढँकने के लिए पर्याप्त वस्त्र।

(ख) स्वच्छता आंदोलन

भारत सरकार द्वारा चलाया गया स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है। ये एक बड़ा आंदोलन है, जिसके तहत् भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इस मुहिम के तहत स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए, महात्मा गांधी के भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है और 2 अक्टूबर, 2019 (बापू को 150 वें जन्म दिवस) तक इस अभियान को पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गाँधी के द्वारा देखा गया था, जिसके संदर्भ में गाँधी जी ने कहा कि, ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।''

इस अभियान का उद्देश्य सफाई व्यवस्था का समाधान निकालना, साथ ही सभी को स्वच्छता की सुविधा के निर्माण द्वारा पूरे भारत में बेहतर मल प्रबंधन करना है। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण

के लिए भारत के लोगों में इसका एहसास होना बहुत आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है, जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है इसके लिए निम्न सुझाव हैं।

भारत के हर घर में शौचालय हो जिससे खुले में शौच प्रवृत्ति को भी खत्म किया जा सके।

नगर-निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और पुर्नपयोग, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।

खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वभाव में परिवर्तन लाना और स्वास्थ्यकर साफ-सफाई की प्रतिक्रियाओं का पालन करना।

इसमें कार्य करने वालों को स्थानीय स्तर पर कचरे के निष्पादन को नियंत्रण करना, पूरे भारत में साफ-सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिए निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना आदि शामिल है।

भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।

ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना इत्यादि शामिल हैं।

(ग) मन के हारे हार है मन के जीते जीत

मनुष्य का जीवन चक्र अनेक प्रकार की विविधताओं से भरा होता है जिसमें सुख-दुःख, आशा-निराशा तथा जय-पराजय के अनेक रंग समाहित होते हैं। वास्तविक रूप में मनुष्य की हार और जीत उसके मनोयोग पर आधारित होती है। मन के योग से उसकी विजय अवश्यंभावी है परन्तु मन के हारने पर निश्चय ही उसे पराजय का मुँह देखना पड़ता है। मनुष्य की समस्त जीवन प्रक्रिया का संचालन उसके मस्तिष्क द्वारा होता है। मन का सीधा संबंध मस्तिष्क से है। मन में हम जिस प्रकार के विचार धारण करते हैं हमारा शरीर उन्हीं विचारों के अनुरूप ढल जाता है।

यदि हम आशावादी हैं और हमारे मन में कुछ पाने व जानने की तीव्र इच्छा हो तो हम सदैव भविष्य की ओर देखते हैं और इन सकारात्मक विचारों के अनुरूप प्रगति की ओर बढ़ते जाते हैं।

कठिन से कठिन परिस्थितियों में जीत के लिए कर्मशील व्यक्ति निरंतर संघर्ष करते रहते हैं और अंत में विजयश्री उनके कदम चूमती है। इसलिए सभी को भाग्य पर नहीं अपतिु कर्म में आस्था रखनी चाहिए।

21. परिवहन अध्यक्ष को पत्र

सेवा में,

अध्यक्ष,

दिल्ली परिवहन निगम

दिल्ली ।

विषय-बस में छूट गए सामान के सन्दर्भ में

महोदय,

मैं कल दिनांक 20 जुलाई, 2018 को करोलबाग से नोएडा के लिए बस में चढ़ा, परन्तु जब मैं उतरा तो हड़बड़ी में मेरा बैग बस में रह गया। जिसमें मेरे सर्टिफिकेट तथा कुछ अन्य आवश्यक कागजात थे। बस कंडक्टर ने मेरा वह बैग मेरे घर के पते पर आकर दिया। सच में मुझे अपने सामान के मिल जाने की इतनी प्रसन्नता हुई और मुझे लगा कि अभी भी दुनिया में ईमानदारी शेष है। मैं किन शब्दों में आपका आभार व्यक्त करूँ। इस महान कार्य के लिए उसे आप पुरस्कृत करने की कृपा करें। यह मेरा सविनय निवदेन है।

भवदीय _____.

अ.ब.स.

पता _____.

अथवा

सेवा में,

प्रबन्धक,

पंजाब नेशनल बैंक,

नोएडा

विषयः आधार कार्ड को बैंक खाते से जोड़ने के लिए पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि प्रार्थी का बचत खाता संख्या 7511104742 आपकी शाखा में है, आपके बैंक से बचत खाता के आधार लिंक संबंधी फार्म के साथ मैंने अपना आधार नंबर लिखकर दे दिया है, आप मेरे आधार कार्ड को बैंक खाते से जोड़ने की कृपा करें जिससे मेरा बचत खाता सुचारू रूप से चल सके। मैं आपका आभारी रहूँगा।

भवदीय

अ.ब.स. _____

पता _____

दिनांक _____

22. सूचना

समस्त छात्र-छात्रों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय में 'आगामी सांस्कृतिक संध्या' का आयोजन दिनांक 31-07-2018 को होने जा रहा है। इस कार्यक्रम में इच्छुक विद्यार्थी 25-07-2018 तक हिन्दी छात्र परिषद् के सचिव से सम्पर्क करें। नाम लिखवाने की अंतिम तिथि 28-07-2018 है।

आज्ञा से

(सचिव)

अथवा

आवश्यक सूचना

दिनांक 10 अगस्त, 2018 को विद्यालय की सांस्कृतिक संस्था 'रंगमंच' की 'स्वरपरीक्षा' आयोजित की जायेगी। इच्छुक विद्यार्थी दिनांक 10 अगस्त, 2018 को शाम 4 बजे तक विद्यालय के सभागार में सही समय पर उपस्थित हों।

आज्ञा से

(सचिव)

23. संवाद लेखन

अध्यापक – मैंने आपको फोन करके विद्यालय में बुलाया है। यह तो आपके बच्चे ने आपको बताया ही होगा।

अभिभावक – नहीं, ऐसा तो उसने कुछ नहीं बताया। आप बताएँ क्या बात है?

अध्यापक – आपका बेटा, विद्यालय में मोबाइल फोन लेकर आया था। जबकि विद्यालय में मोबाइल लाना सख्त मना है।

अभिभावक – वह विद्यालय से सीधा कोचिंग जाता है। मैंने तो फोन उसकी सुविधा के लिए दिया था जिससे कोई अप्रिय घटना घटित होने पर, वह मुझे सूचित कर सके।

अध्यापक – आपकी बात सही है फिर भी हर छात्र को विद्यालय के नियम का पालन करना आवश्यक होता है।

अभिभावक – ठीक है, अब आगे से कभी भी मोबाइल फोन साथ नहीं लेकर आयेगा।

अध्यापक – ठीक है।

अथवा

राम – तुमने देखा, आज हमारे क्षेत्र के एम.एल.ए. आकर सफाई कर रहे हैं।

लक्ष्मण – हाँ, मैं जानता हूँ। मुझे समाचार पत्र द्वारा मालूम हुआ कि प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान चलाया गया है। इसके तहत देशवासियों को अपने देश को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

राम – वाह भाई! यह तो बड़ी अच्छी शुरूआत है। मैं भी जाकर सफाई करवाता हूँ।

लक्ष्मण – मैं भी आपके साथ चलता हूँ।

राम – सफाई होने से हमारे क्षेत्र का सौंदर्यीकरण होगा, गंदगी नहीं दिखेगी और न ही संबंधित बीमारियाँ फैलेगीं।

लक्ष्मण – यह तो सही बात है। हम सभी को मिलकर इस कार्य में सहयोग देना चाहिए।

24. 'पहरेदार संस्था' नोएडा

विद्यालय में 'पहरेदार' संस्था की ओर से शीतल जल की उचित व्यवस्था की गई है। सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि जल की बर्बादी न करें और न ही कोई छात्र-छात्रा मुँह-हाथ धोएं। ऐसा करने से अन्य छात्रों को जल प्राप्त करने में परेशानी होगी। जल का सदुपयोग होने में अपना सहयोग प्रदान करें।

अथवा

लक्ष्मण पब्लिक स्कूल,

दिल्ली कला प्रदर्शनी का आयोजन

सहपाठ्यगामी क्रियाकलाप के अन्तर्गत दिनांक 21 जुलाई, 2018 को प्रातः 10 बजे से विद्यालय परिसर में विद्यालय के कलाविधि में विद्यार्थियों द्वारा तैयार 'पेंटिंग्स' की प्रदर्शनी, बिक्री हेतु लगेगी।

इस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों द्वारा निर्मित 'पेंटिंग्स' की बिक्री होगी। बिक्री से प्राप्त धनराशि से निर्धन छात्र-छात्राओं को सहायता प्रदान की जायेगी।

अधिक जानकारी के लिए कृपया मोबाइल नम्बर (8860....97) पर सम्पर्क करें।

Smart Notes ....

CBSE
Sample Question Paper

Hindi
Class X

Time : 3 hrs **MM : 80**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं- क, ख, ग और घ।

(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड (क)

अध्ययन **(15 अंक)**

1. गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (9)

असल में देखा जाए तो हम अपने बारे में तमाम जानकारी कई माध्यमों द्वारा जैसे गूगल, फेसबुक, वॉट्सएप्प, आदि के जरिये बांटते रहते हैं। हमारी बैंक लेनदेन संबंधी जानकारी भी अब डिजिटल होती जा रही है और इससे वह सवाल उठना स्वाभाविक है कि हमारी यह निजी जानकारी कहां और कैसे संभाली जा रही है? अब जब दुनिया भर से डाटा चोरी की खबर आने लगी है तब हमें यह देखना चाहिए कि हमारे वर्तमान कानून मौजूदा स्थिति में हमारी निजी जानकारियों की किस प्रकार रक्षा करने में सक्षम हैं? भारतीय परिवेश इस क्षेत्र में जटिल विधान से ग्रस्त है। वह न केवल पुराना, बल्कि अस्पष्ट भी है। इस संदर्भ में तीन अलग-अलग कानून हैं। ये हैं इंडियन पोस्ट ऑफिस एक्ट 1898, इंडियन टेलीग्राफ एक्ट 1885 एवं इंफार्मेशन टेक्नोलॉजी एक्ट 2007। आज वाट्सएप्प संदेश पहले दो कानूनों के तहत हासिल किया जा सकते हैं। ये कानून तब बनाए गए थे जब इस तरह का कोई प्लेटफार्म बनाने के बारे में सोचा भी नहीं गया था।

आज डाटा सुरक्षा चिंता का विषय है। चूंकि आधार की जानकारी निजी कंपनियों द्वारा एकत्र की जाती है इसलिए उसके चोरी होने या उसका दुरूपयोग होने की आशंका बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में निजी कर्पनियां अपनी जिम्मेदारी से आसानी से पल्ला झाड़ सकती है, लेकिन चिंता महज आधार की जानकारी सार्वजनिक होने या उसके गलत हाथों में पड़ने तक ही सीमित नहीं है। हमारी ऑनलाइन गतिविधियां जैसे गूगल पर की गई कोई खोज या फेसबुक पर की गई कोई पोस्ट कई कंपनियों की निगाह में रहती है ताकि वे हमें हमारी पसंद की बेहतर सेवाएं उपलब्ध करा सकें अथवा यह बता सकें कि हमें क्या खरीदना चाहिए? वे हमारी पसंद की चीजों लेखों आदि पर हमारा ध्यान आकर्षित करने का भी काम करती हैं। इस सबके लिए हमारा डाटा कंपनियों द्वारा साझा किया जाता है। यदि इस पर पूरी तरह रोक लगाई जाए तो हम आधुनिक अर्थव्यवस्था से हो वंचित हो जाएंगे। दरअसल आज जरूरत इस बात की है कि डाटा की सुरक्षा के लिए कुछ बुनियादी सुरक्षा उपाय किए जाएं ताकि निजी कंपनियां बिना सहमति डाटा साझा न कर सकें और उसके चोरी होने पर वे डाटा धारक को सूचित करने को बाध्य हों।

(क) हम अपनी निजी जानकारियाँ कैसे बाँट रहे हैं? इसके लिए हमारे मन में क्या सवाल उठ रहे हैं? (2)

(ख) हमारे देश में निजी जानकारियों की सुरक्षा के लिए क्या-क्या कानून हैं? (2)

(ग) निजी जानकारी के डाटा की सुरक्षा संबंधित सबसे बड़ी चिंता क्या है? (2)

(घ) विभिन्न कंपनियाँ हमारा डाटा क्यों साझा करती हैं? (2)

(ङ) लोगों के निजी डाटा सुरक्षित रखने के लिए क्या उपाय किया जा सकता है? (1)

2. काव्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (6)

व्यंग मत बोलो।
काटता है जूता तो क्या हुआ
पैर में न सही
सिर पर रख डोलो।
व्यंग्य मत बोलो।
अन्धों का साथ हो जाये तो
खुद भी आँखें बंद कर लो,
जैसे सब टटोलते हैं
राह तुम भी टटोलो।
व्यंग्य मत बोलो।
क्या रखा है कुरेदने में,
हर एक का एक चक्रव्यूह भेदने में,
सत्य के लिए
निरस्त्र टूटा पहिया ले
लड़ने से बेहतर है
जैसी है दुनिया
उसके साथ हो लो।
व्यंग्य मत बोलो।
कुछ सीखो गिरगिट से

जैसी शाख वैसा रंग
जीने का यही है सही ढंग
अपना रंग दूसरों से अलग पड़ता है तो
उसे रगड़ धो लो।
व्यंग्य मत बोलो।

(क) कवि ने काटने वाले जूते के लिए क्या कहा है? (1)

(ख) हमें अपनी आँखें खुद कब बंद कर लेनी चाहिए और कैसा व्यवहार करना चाहिए? (2)

(ग) कवि के अनुसार जीने का सही ढंग क्या है? (2)

(घ) काव्यांश का मूल भाव लिखिए। (1)

खंड (ख)

व्याकरण (15 अंक)

3. शब्द किसे कहते हैं? क्या पद 'कोश' का अंग हो सकता है? शब्द और पद का अंतर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (2)

4. निर्देशानुसार वाक्य परिवर्तित करके लिखिए। (3)

(क) महात्मा गाँधी अहिंसावादी थे और वे किसी को दुखी नहीं देखना चाहते थे। (सरल)

(ख) वे यहाँ से जाकर भाषण देने लगे। (मिश्र)

(ग) जब रात हो जाएगी तभी मैं घर जाऊँगी। (संयुक्त)

5. (अ) समास-विग्रह करके भेद का नाम लिखिए। (2)

(क) शताब्दी

(ख) विचारमग्न

(आ) समस्त पद बनाकर भेद का नाम लिखिए। (2)

(क) मृग के समान नयन

(ख) तीन रंगों वाला राष्ट्रध्वज

6. निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए। (3)

(क) सब लोग मिठाई खाए हैं।

(ख) वह हुआ शहीद युद्ध में।

(ग) एक कहानियों का किताब ला दो।

7. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनके अर्थ स्पष्ट हो जाएँ। (3)

(क) चमड़ी उधेड़ना

(ख) एक टाँग पर खड़े रहना

(ग) सिर पर तलवार लटकना

खंड (ग)

साहित्य (25 अंक)

8. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) पुलिस कमिश्नर तथा कौंसिल दोनों के नोटिस में क्या अंतर था? 'डायरी का एक पन्ना' के आधार पर बताइए कि मोनुमेंट के नीचे होने वाली सभा की क्या विशेषता थी? (2)

(ख) क्या शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग-अलग है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए। (2)

(ग) कारतूस एकांकी में सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किए? (1)

9. तीसरी कसम जैसी सार्थक एवं उद्देश्यपरक फिल्म बनाना हिंदी फिल्म जगत में कठिन एवं जोखिम से भरा काम था। उक्त कथन की समीक्षा 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र, पाठ के आधार पर कीजिए। (5)

10. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) मीरा के पद के आधार पर कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कीजिए। (2)

(ख) अपने स्वभाव को निर्मल बनाने के लिए कबीर की साखी में क्या समझाया गया है? स्पष्ट कीजिए। (2)

(ग) 'आत्मत्राण' कविता में सहायक के न मिलने पर कवि क्या करना चाहता है? (1)

11. मनुष्य का व्यवहार कब अनर्थ का परिचायक बन जाता है? कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान दानियों के उदाहरण द्वारा मनुष्य को क्या संदेश दिया है? विस्तार से लिखिए। (5)

12. टोपी और इफ्फन की घनिष्टता का क्या कारण था? आपकी दृष्टि में मित्रता के लिए धर्म और जाति की समानता का क्या महत्व है? (5)

खंड (घ)

लेखन (25 अंक)

13. दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए।

(क) पुस्तकालय का शिष्टाचार (5)

- वार्तालाप से बाधा
- पुस्तकों का उचित रख-रखाव
- अधिकारी से सहयोग

(ख) भ्रष्टाचार पर शिकंजा

- वर्तमान स्थिति
- सरकारी-गैर सरकारी प्रयास
- सुखद परिणाम

(ग) दैव दैव आलसी पुकारा

- सूक्ति का अर्थ
- भाग्यवाद से नुकसान
- सुधार से सफलता

14. समाज की गलत छवि दिखाने वाले विज्ञापनों की आलोचना करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। (5)

15. आपको स्कूल के खेल के मैदान में एक घड़ी मिली है। इसकी जानकारी देते हुए एक सूचना तैयार कीजिए। (5)

16. बैंक प्रबंधक तथा ग्राहक के बीच आवासीय ऋण (होम लोन) संबंधित विषय पर संवाद-लेखन कीजिए। (5)

17. 'राजधानी मेडिकल कॉलेज' अंगदान हेतु जागरूकता फैलाने का प्रयास कर रहा है। आप जनता को अंगदान के लिए प्रेरित करने वाला एक विज्ञापन तैयार कीजिए। (5)